

# पुस्तक साहित्य और संस्कृति की द्विमासिकी

# संस्कृति

वर्ष - 8 ♦ अंक - 2 ♦ मार्च - अप्रैल 2023 ♦ मूल्य ₹40.00

डिजिटल पुस्तकालय  
विशेषांक



- शिक्षा के कार्यक्षेत्र में डेलनेट की उपयोगिता
- डिजिटल पुस्तकालय
- कौन कहता है, पुस्तकें पढ़ी नहीं जातीं
- शिक्षा के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म
- साहित्य का ऑडियो संसार
- शोध-सेतु: एकेडमिया



‘पुस्तक संस्कृति’ का जनवरी-फरवरी अंक पाकर प्रसन्नता हुई। इसके आवरण पृष्ठ ने संतोष प्रदान किया है। हिंदी के साहित्यकारों को 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन, फिजी के अवसर पर दिखाने वाली यह एकमात्र पत्रिका है। संपादकीय सूझ-बूझ, दूरदर्शिता के साथ ऐसे परिणाम सामने आ रहे हैं। बाजारू व्यवसायी पत्रिकाएँ राज्यों से और भारत सरकार से भी निकल रही, देख पाता हूँ। उनमें कहीं ऐसी सौंदर्य छटा आकर्षक दिखाई नहीं देती। पत्रिकाओं में मात्र सरकारीकरण नजर आता है। ‘देवनागरी लिपि की

वैज्ञानिकता और प्रयोजनशीलता’ पर संपादकीय पढ़ा, अच्छा लगा। उपयोगी और मार्गदर्शक भी है।

पाठकों के लिए जितने भी आलेख इस अंक में संकलित हैं, हिंदी भाषा के लिए उपयोगी और प्रेरणास्पद लग रहे हैं। साहित्यिक गतिविधियाँ और पुस्तक समीक्षा स्तंभों के साथ, आओ भारतीय भाषाएँ सीखें, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक लग रहा है।

—फूलचंद मानव, ढकौली



# आगामी अंक के लिए पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की द्विमासिक पत्रिका

पत्रिका का **जुलाई-अगस्त, 2023** का अंक **‘बाल साहित्य’** विशेषांक होगा, जिसमें भारत और विदेश में बाल साहित्य, बाल साहित्य में चित्र का महत्व, छोटे बच्चों के लिए लेखन, बाल साहित्य के लिए कार्यरत संस्थाओं आदि से संबंधित सामग्री होगी।

इस अंक के लिए सामग्री **30 अप्रैल, 2023** तक भेज सकते हैं।

पत्रिका का **सितंबर-अक्टूबर 2023** का अंक **‘पारंपरिक भारतीय विज्ञान’** विशेषांक होगा, जिसमें प्राचीन भारत और आधुनिक भारत में विज्ञान परंपरा, विज्ञान के विकास में भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण, प्राचीन विज्ञान और वर्तमान में प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ आदि से संबंधित सामग्री होगी।

इस अंक के लिए सामग्री **30 जून, 2023** तक भेज सकते हैं।

**लेखकों हेतु निर्देश :** 1. सामग्री अधिकतम दो हजार शब्दों तक हो। 2. रचना मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए। 3. रचना के साथ संदर्भ के चित्र अवश्य भेजें। 4. लेखक का चित्र, पाँच पंक्ति में परिचय (संपूर्ण जीवनवृत्त नहीं) भेजें, जिसमें संप्रति, प्रकाशन, सम्मान आदि का विवरण हो। संपर्क के लिए पता, ई-मेल या फोन नंबर जो भी सार्वजनिक करना चाहें, भेजें। 5. किसी विशेषांक में प्रकाशनार्थ सामग्री समयसीमा के पश्चात भेजने पर स्वीकार्य नहीं होगी। 6. पत्रिका के संपादक के ई-मेल पर भेजी गई रचनाएँ ही स्वीकार्य होंगी। रचना कृति, यूनिकोड / शिवा मीडियम फॉण्ट में एम.एस. वर्ड या पेजमेकर में ही हो।

**नोट :** पत्रिका का मुख्य उद्देश्य पुस्तक प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के लिए उपयोगी सामग्री का प्रकाशन करना है। कहानी-कविताओं के लिए इसमें कम ही स्थान है।

संपादक (पुस्तक संस्कृति), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

ई-मेल : editorpustaksanskriti@gmail.com • दूरभाष : 011-26707758, 26707876

प्रधान संपादक

प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा

संपादक

पंकज चतुर्वेदी

सहायक संपादक

दीपक कुमार गुप्ता

संपादकीय सहयोग

विजय कुमार

विज्ञापन एवं प्रसार

कंचन वांचु शर्मा

उत्पादन

अनुज कुमार भारती, पवन दुवे

रेखाचित्र

अरूप गुप्ता

सज्जा/डिजाइन

ऋतुराज शर्मा, समरेश चटर्जी

शब्द संयोजन/कार्यालयीन सहयोग

प्रवीन कुमार

सदस्यता शुल्क

व्यक्तियों के लिए

एक प्रति : ₹ 40.00

वार्षिक : ₹ 225.00

(शुल्क भारत के लिए मान्य)

संपादकीय पत्र-व्यवहार

संपादक

पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

पता : नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया  
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707876

ई-मेल: editorpustaksanskriti@gmail.com

प्रकाशक व मुद्रक अनुज कुमार भारती द्वारा  
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत)  
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज,  
नई दिल्ली-110070 के लिए प्रकाशित और  
रेकमो प्रेस प्रा. लि., सी-59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया  
फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

संपादक

पंकज चतुर्वेदी

सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए  
लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित  
रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं  
है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से संबंधित सभी विवादास्पद  
मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

## पुस्तक संस्कृति

साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी

वर्ष-8; अंक-2; मार्च-अप्रैल, 2023

>> डिजिटल पुस्तकालय विशेषांक <<



### इस अंक में

संपादकीय	प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा	2
लेख	पारंपरिक जनसंचार, पुस्तकालय और आज का डिजिटल युग —विजय सिंह रावत	4
आलेख	शैक्षणिक अनुसंधान में अग्रणी : इंप्लिबनेट सेंटर —विजय कुमार 'शाश्वत'	7
लेख	शिक्षा के कार्यक्षेत्र में डेलनेट की उपयोगिता—डॉ. राजन	10
लेख	डिजिटल पुस्तकालय—जी. अरुणा कुमार	13
आलेख	'पढ़े भारत, बढ़े भारत' का स्वप्न करता साकार एनडीएलआई —कमलेश पाण्डेय 'पुष्प'	16
आलेख	कौन कहता है, पुस्तकें पढ़ी नहीं जातीं—शंभूनाथ शुक्ल	18
लेख	शिक्षा के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म—मोहन शर्मा	20
आलेख	सर्वसुलभ शिक्षा : राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान —डॉ. सुधीर पाण्डेय	22
लेख	साहित्य का ऑडियो संसार—रमेश कुमार सिंह	24
आलेख	डिजिटल पुस्तकालय से लाभ—संजय गोस्वामी	26
लेख	शोध-सेतु : एकेडमिया—डॉ. रजत शर्मा	30
शब्द ज्ञान	आओ भारतीय भाषाएँ सीखें	32
लेख	केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का ग्रंथालय—सोनी कुमारी	34
लेख	अयोध्या नरेश राम की कथा और गैर-भारतीय विद्वान —संध्या सिलावट	36
आलेख	देशभक्त गोपाल मुखर्जी 'पाठा'—ब्रजकिशोर शर्मा	40
विरासत	दो संस्कृतियों का सम्मेलन : काशी तमिल संगमम्	42
पुस्तक समीक्षा		46
पुस्तकें मिलीं		60
साहित्यिक गतिविधियाँ		62



# वैश्विक धरातल पर हिंदी की स्वीकार्यता

हिंदी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में, भारत में प्रथम तथा विश्व में तीसरे स्थान पर है। शताब्दियों से हिंदी के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा आगे बढ़ती रही है। स्वयं हिंदी की विकास-यात्रा काफी सुदीर्घ रही है। भाषा के रूप में पाली, प्राकृत और बाद में अपभ्रंश के चलन के समय से ही किसी-न-किसी रूप में हिंदी प्रारंभ हो चुकी थी। अमीर खुसरो के समय जो हिंदवी या देहलवी (दिल्ली के आस-पास की भाषा) थी, वही जायसी के समय 'हिंदुई' (अवधी से मिलती-जुलती) कहलाई। बाद में, ब्रज और अवधी साहित्य साधना की प्रमुख भाषाएँ बनकर उभरीं। साथ ही, बोलचाल और संपर्क भाषा के रूप में जो भाषा प्रयुक्त हुई, उसे खड़ी बोली के नाम से पहचाना गया। यही खड़ी बोली आगे चलकर हिंदी-साहित्य की भाषा बनी, पर हिंदी का फलक बहुत व्यापक है। वह केवल खड़ी बोली तक सीमित नहीं है, बल्कि उससे अधिक है। गिरिधर राय ने ब्रज भाषा को 'हिंदी' कहा है। उर्दू मिश्रित हिंदी को गांधीजी ने 'हिंदुस्तानी' कहा। हिंदी आज सूरीनाम में 'सरनामी हिंदी' तथा फिजी में 'फिजी बात' के रूप में प्रचलित है। आज हिंदी विश्व के लगभग 15 देशों में बोली जाती है। इन देशों में मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो, गुयाना, फिजी, श्रीलंका, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, केन्या, सिंगापुर आदि कई देश प्रमुख हैं। यद्यपि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत मान्य भाषा तो नहीं है, तथापि हिंदी को सहकारी

कामकाजी भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि संयुक्त राष्ट्र की सूचनाएँ आदि हिंदी में प्रकाशित हुआ करेंगी।

भारतीय आजीविका की खोज में शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत मजदूरों के रूप में मॉरीशस (1834), त्रिनिदाद (1845), दक्षिण अफ्रीका (1860), गुयाना (1870), सूरीनाम (1873), फिजी (1879) गए थे, किंतु अपने परिश्रम, लगन तथा ईमानदारी से वे हर देश में सुशिक्षित, सुप्रतिष्ठित तथा सम्मानित नागरिक बन गए। उनकी उन्नत सामाजिक स्थिति के कारण उनकी भाषा भी सम्मानित बनी। प्रवासी भारतीयों के मध्य हिंदी संपर्क-भाषा थी और इसलिए वह भारतीय अस्मिता की प्रतीक बन गई। डेढ़ सौ वर्षों में हिंदी की विविध भाषिक शैलियाँ इन देशों में विकसित हो गईं, जो मूलतः अवधी और भोजपुरी का मिश्रित रूप थीं तथा इनमें स्थानीय भाषाओं का पुट भी था। ये विविध भाषिक शैलियाँ फिजी में 'फिजी बात', सूरीनाम में 'सरनामी' तथा दक्षिण अफ्रीका में 'नैताली' नाम से अभिहित हुईं। भारतीय सामान्य बोलचाल में इसी हिंदी का प्रयोग करते हैं तथा यह हिंदी सभी भारतीयों के मध्य तथा स्थानीय लोगों के बीच भी समझी एवं बोली जाती है।

हिंदी का जो विस्तार हुआ है और उसने वर्तमान में जो वैश्विक रूप प्राप्त किया है, उसके साथ एक महत्वपूर्ण तथ्य जुड़ा है। विश्व के विभिन्न देशों में उनकी अपनी भाषा के अलावा अन्य भाषाओं का विस्तार या तो

व्यापार के कारण हुआ है अथवा सत्ता और शक्ति के माध्यम से हुआ है। यूरोपीय भाषाओं, मुख्यतः अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन और स्पेनिश का विस्तार विजेता देशों के द्वारा विजित क्षेत्रों में बलात अपनी भाषा को थोपने के कारण हुआ। यूरोपीय देशों ने विश्व के अन्य देशों को अपना गुलाम बनाया, वहाँ उन्होंने अपना साम्राज्य स्थापित किया और प्रशासन की भाषा के रूप में अपने देश की भाषा को स्थापित किया। परिणामस्वरूप, विजित देश के लोगों को मजबूरी में वह भाषा सीखनी पड़ी जो साम्राज्यवादी देशों की थी। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका आदि देशों में ऐसा ही हुआ। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। मुगल शासकों के समय उर्दू-अरबी मिश्रित फारसी भाषा में राज-काज के कार्य हुआ करते थे। फलतः उर्दू का प्रसार हुआ। अंग्रेजी भाषा के प्रभाव का विस्तार साम्राज्यवादी शक्ति के कठोर निर्णयों और प्रशासनिक भाषा के रूप में इसके प्रयोग के कारण हुआ। लैटिन अमेरिका के देशों में स्पेनिश भाषा के प्रसार का यही कारण था।

इसके विपरीत हिंदी का जो वैश्विक स्तर पर विस्तार हुआ, वह किसी सत्ता या शक्ति के कारण नहीं हुआ। हिंदी का वैश्विक विस्तार प्रवासी भारतीयों के कारण हुआ। भारत के लोग विश्व के कई देशों में गए, वहाँ उन्होंने अपनी संस्कृति और अपनी भाषा को संरक्षित रखा। भाषा के रूप में हिंदी और अपनी संस्कृति के प्रतीक के रूप

में रामचरितमानस, दोनों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों ने अपनी भाषा, सांस्कृतिक अस्मिता और चेतना को बनाए रखा। यहीं से हिंदी का वैश्विक रूप विकसित हुआ, जिसका विस्तार निरंतर जारी है।

फिजी एक बहुजातीय देश है जहाँ भारतीयों के अतिरिक्त वहाँ के मूल निवासी कार्डीबीती (फ़िजियन) रहते हैं। ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के लोग भी पर्याप्त संख्या में फिजी में हैं। सबकी भाषा अलग-अलग है। फिजी के मूल निवासी 'कार्डीबीती' भाषा बोलते हैं। ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के निवासी अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं। फिजी में बसे हुए भारतीय भी विभिन्न भाषा-भाषी प्रांतों के हैं। उत्तर प्रदेश तथा बिहार के अतिरिक्त गुजरात, पंजाब तथा दक्षिण भारत के तमिल-तेलुगु भाषा-भाषी भी हैं। धर्म की दृष्टि से भी फिजी में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी हैं, किंतु हिंदी भाषा, जाति तथा धर्म के बंधन से ऊपर उठकर सभी भारतीयों के लिए ही नहीं, फिजी के समस्त निवासियों के बीच संपर्क भाषा बनी हुई है। हिंदी की इसी व्यापकता को देखकर फिजी सरकार ने संविधान में हिंदी भाषा को संसदीय भाषा की मान्यता भी दी हुई है। आज सारे फिजी देश में हिंदी समझी व बोली जाती है। भारतीयों के मध्य पारिवारिक बोलचाल की भाषा तो हिंदी है ही, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसरों पर भी एक भारतीय हिंदी में बोलकर गौरव का अनुभव करता है। यही कारण है कि फिजी में हिंदी को एक जातीय सम्मान भी मिला हुआ है। तभी फिजी की नई सरकार ने संसद में हिंदी में भी भाषण देने को वैधानिक रूप देकर देश में हिंदी को स्थापित किया है।

फिजी में हिंदी का प्रवेश लगभग सन् 1880 में हुआ जब गिरमिटिया मजदूरी करते थे व रात को रामायण के पद गाते थे। स्वर्गीय पंडित तोताराम सनाढ्य जो गिरमिट मजदूरों के नेता थे, ने 'फिजी में घासलेटी साहित्य का दुष्परिणाम' नामक निबंध लिखा

था। हिंदी को बढ़ावा देने में फिजी रेडियो के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता है, 'फिजी हिंदी महापरिषद' नाम की संस्था भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित करती है। फिजी का सूचना विभाग 'शंख' नामक पत्रिका का प्रकाशन हिंदी में निरंतर कर रहा है। फिजी में जोगिन्द्र काम्बली को 'फिजी का प्रेमचन्द' कहा जाता है।

हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है। आज लगभग 100 करोड़ लोग विश्व भर में हिंदी को समझने और बोलने वाले हो चुके हैं। विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, केंब्रिज और यॉर्क यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। कई संगठन हिंदी का प्रचार करते हैं। चीन में सन् 1942 में हिंदी अध्ययन शुरू हुआ। सन् 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ। अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। विदेश में भी हिंदी में साहित्य रचना हो रही है। प्रवासी भारतीय और कतिपय अन्य हिंदी प्रेमी विदेशी विद्वान हिंदी में लिख रहे हैं। विदेश में कई विद्वानों ने यथा मग्नगर, गुम्पर्स, पेरिजका आदि ने हिंदी की उपयोगिता को समझते हुए, पाठ्यक्रमों की रचना की है।

एशिया, विशेषतः दक्षिण एशिया के देशों के लिए हिंदी के एक संपर्क भाषा के रूप में विकसित होने में कोई दिक्कत नहीं आ पाएगी।

जहाँ वैश्विक धरातल पर हिंदी की स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है, वहीं देश में हिंदी के सामने कई चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं। ये चुनौतियाँ बाह्य सत्ता के कारण नहीं हैं, अपितु स्वयं हिंदी भाषियों के द्वारा निर्मित हुई हैं। अंग्रेजी के मोह ने एक नए भाषाई संकट

और डर को जन्म दिया है। जिस हिंदी ने शताब्दियों से भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं के विकास में विशाल साहित्य का निर्माण किया है तथा जो करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, वह संकट में है। हिंदी भाषियों का रुझान निरंतर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की ओर बढ़ रहा है। प्रतिवर्ष अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में वृद्धि हो रही है। यह क्रम पिछले कई वर्षों से चल रहा है। इसकी कीमत हिंदी को चुकानी पड़ रही है। हिंदी क्षेत्र में शिक्षा के अंग्रेजी माध्यम के विस्तार का अर्थ है, हिंदी का माध्यम के रूप में सीमित होते जाना। विचार कीजिए, भविष्य क्या होगा? अगले वर्षों में क्या स्थिति बनेगी?

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के संबंध में उत्साहजनक वातावरण निर्मित हुआ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनय के क्षेत्र में हिंदी प्रतिष्ठित हो रही है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी का प्रयोग कर, भारत के जनमानस में नए विश्वास और गौरव का संचार किया है। इसके कारण भाषिक दृष्टि से भारत की एक सशक्त छवि विकसित हुई है। आज भारत सरकार के लगभग सभी मंत्रालयों में हिंदी के प्रयोग की गति में वृद्धि हुई है। यहाँ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की भूमिका को रेखांकित करना प्रासंगिक होगा। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने अपने स्थापना काल (सन् 1957) से ही सामान्य जन को सस्ती और श्रेष्ठ पुस्तकों को सुलभ कराने की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया है। विश्व की विभिन्न भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों का हिंदी अनुवाद न्यास ने प्रकाशित किया है। इसी प्रकार हिंदी के श्रेष्ठ साहित्य को प्रादेशिक भाषाओं के साथ ही कई विदेशी भाषाओं में अनूदित कर प्रकाशित किया है।



(प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा)

प्रधान संपादक, पुस्तक संस्कृति



# पारंपरिक जनसंचार, पुस्तकालय और आज का डिजिटल युग

जनसंचार सेवाओं के प्राचीन व आधुनिक संसाधनों के माध्यम से जो अनुभूति एवं खुशी हमें जीवन में सूचना प्राप्ति से होती है, ठीक उसी प्रकार पुस्तकालय के संदर्भ विभाग की इन्हीं सेवाओं से पाठक अपनी जिज्ञासा से संबंधित प्रश्नोत्तरी व सूचना प्राप्त करते थे, क्योंकि पुस्तकालय का संदर्भ विभाग भी जनसंचार के माध्यमों के तहत ही आता है। पुस्तकालय का संदर्भ विभाग द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत आता है जिसमें सूचनाओं की जानकारी पुस्तकों के संग्रह से होती है। प्रथम श्रेणी में पुस्तकालय पाठ्य सामग्री का कलेक्शन (भंडारण) होता है जिससे पाठक ज्ञानवर्धक जानकारी व अध्ययन प्राप्त करता है। संदर्भ विभाग की पुस्तकें केवल तत्कालीन सूचना प्राप्त करने के लिए ही होती हैं तथा इनका उपयोग पाठ्य पुस्तकों की तरह नहीं किया जाता है।



**विजय सिंह रावत**

जन्मतिथि : 05 जून, 1948

शिक्षा : स्नातक

संप्रति : एनजीओ पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त।

संपर्क : मोबाइल— 8076766996

ईमेल— rawatvijay1948@gmail.com



## जनसंचार के साधन व उनका उपयोग तब और अब

प्राचीन युग से ही व आज के प्रगतिशील इलेक्ट्रॉनिक युग में सूचना एक जनसंचार की महत्वपूर्ण संसाधन और शक्ति है। स्थानीय दूर-दराज के ग्रामीण स्तर से लेकर क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के नियोजनकर्ताओं, वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों व प्रशासकों को अनेक प्रकार की योजनाओं को सुचारु रूप से नियोजित करने के लिए सूचना की सदैव आवश्यकता पड़ती है। साथ ही, व्यक्तिगत पारिवारिक सूचनाएँ भी पारंपरिक जनसंचार की मुख्य सेवाएँ होती थीं, जैसे—चिट्ठी-पत्री, पोस्टकार्ड, टेलीग्राम, मनीऑर्डर, पारिवारिक व व्यावसायिक सूचनाएँ आदान-प्रदान करने के लिए प्रयोग की जाती थीं जिनका प्रयोग आज के डिजिटल प्रयोग में न के बराबर है। वहीं पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि ये सब सेवाएँ प्रिंट मीडिया के तहत सुलभ की

जाती थीं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के तहत पुराने समय में मनोरंजन और सूचनाओं का आधार ग्रामोफोन, रेडियो तथा बाद में टेलीविजन ही थे, पर आज दो दशक से समय बदल गया है। आज इंटरनेट का ज़माना है। आप घर बैठे कोई भी जानकारी इंटरनेट पर प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही, अपना मनोरंजन भी कर सकते हैं। आधुनिक समय में संचार के साधन इस प्रकार हैं—रेडियो, टेलीफोन, इंटरनेट, ई-मेल, लैंडलाइन, मोबाइल, टेलीग्राम, पेजर, फैक्स, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि। ये सब इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रमुख संचार के साधन हो गए हैं।

आज की 21वीं सदी में संचार साधनों के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल है। प्राचीन काल में कबूतरों, बाज जैसे पक्षियों के द्वारा संदेश का आदान-प्रदान किया जाता था। संदेशवाहक घोड़े की सवारी करके संदेश लेकर जाता था जिसमें कई दिन लग जाते थे। डाक सेवाएँ भी पोस्टऑफिस व डाककर्मी (पोस्टमैन) के द्वारा होती थी।

आज कई निजी कोरियर सेवाएँ भी हैं। जैसे-जैसे विज्ञान का विकास होने लगा नए-नए संचार उपकरण जैसे—तार, दूरभाष, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल फोन का आविष्कार हो गया और अब हम सभी सूचना प्राप्त के लिए संचार साधनों के इन इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों पर पूरी तरह से निर्भर हो गए। संचार के साधनों के विकास से अब जीवन बहुत सरल हो गया है। अब सूचना का आदान-प्रदान बहुत सस्ता और सुगम हो गया है। इसी कड़ी में सूचनाओं का संवाहक होता है, मीडिया, चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। सूचनाओं की जो जिज्ञासा हमारे मन में होती है, उसी को शांत करते हैं ये संचार के माध्यम। अधिक जिज्ञासा के कारण ही आज मनुष्य समस्त जीवधारियों में श्रेष्ठ है और इसी का नतीजा है कि तकनीकी विकास की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते आज हम डिजिटल युग में पहुँच गए हैं, जिसके कारण सूचनाओं के आदान-प्रदान के कई परंपरागत साधन समाप्त हो गए। इन्हीं में से एक है पुस्तकालय विभाग की संदर्भ सेवा जो कुछ वर्षों पहले तक पुस्तकालय की प्रमुख सूचना प्रदान करने वाली चाबी होती थी, लेकिन अब वह समाप्त हो चुकी है।

## डिजिटल युग में पारंपरिक पुस्तकालयों के संदर्भ विभाग की सेवा व समाप्ति

किताबें कुछ कहना चाहती हैं।

तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

मशहूर रंगकर्मी सफदर हाशमी द्वारा रचित ये पंक्तियाँ पुस्तकों का न केवल महत्व दर्शाती हैं, बल्कि उन्हें मनुष्य का सच्चा दोस्त भी बताती हैं। अर्थात् पुस्तकें अपने अंदर लिखे ज्ञान के भंडार को हम तक पहुँचाती हैं और एक सच्ची दोस्त बनकर हमारे साथ रहना चाहती हैं। पुस्तकों को किसी भी विचारों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के इतिहास को पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचाने का जनसंचार का सबसे प्राचीन माध्यम कहा जा सकता है, जो प्राचीन काल में ताम्रपत्रों पर उल्लेखित या पांडुलिपि के रूप में थीं, जिन्हें विद्वानों व इतिहासकारों ने अध्ययन कर आमजन तक पहुँचाया। जैसे-जैसे विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उन्नति होती गई, वैसे-वैसे ताम्रपत्रों व हस्तलिखित पांडुलिपियाँ भी एक नए रूप में कागज की पुस्तक के रूप में परिवर्तित होती गईं और इसी के साथ पुस्तकालय की भी आवश्यकता हुई जहाँ पर पुस्तकों को सहेजा जा सके। पुस्तकालय उस स्थान को कहा जाता है जहाँ विभिन्न प्रकार की देशी-विदेशी, नई-पुरानी किताबों को सहेजा जाता है व एक ही छत के नीचे ज्ञान सूचनाओं के स्रोतों का संग्रह होता है। एक प्रकार से पुस्तकालय पुस्तकों का घर है और इन्हीं पारंपरिक पुस्तकालयों में संदर्भ विभाग का उदय हुआ।

### पुस्तकालयों में संदर्भ विभाग

अब बात करते हैं कि इंटरनेट से पहले पारंपरिक पुस्तकालयों में संदर्भ सेवा क्या थी? या संदर्भ विभाग किसे कहते हैं? जैसे कि लाइब्रेरी

साइंस में पुस्तकों को व्यवस्थित करने का ही विज्ञान है। ठीक उसी तरह विभिन्न विद्वानों ने पुस्तकालयों में संदर्भ सेवा की परिभाषा व उसका महत्व अपने-अपने विचारों के अनुसार परिभाषित किया है। किसी ने मानवतावाद पर, किसी ने सेवा भावना पर तथा किसी ने व्यक्तिगत सहायता पर बल दिया है। साथ ही, पुस्तकालय का वह पक्ष जो पुस्तकालयों के साधनों के उपयोग तथा सूचना प्राप्त करने में पाठकों की सहायता से प्रत्यक्ष संबंधित है, वही संदर्भ सेवा या संदर्भ विभाग का कार्य होता है। एक पारंपरिक पुस्तकालय में संदर्भ विभाग की संदर्भ सेवा के निम्नलिखित तत्व होते हैं—

1. सेवा भावना, 2. व्यक्तिगत सेवा, 3. समय, 4. पाठक और 5. पाठ्य सामग्री

इन्हीं के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि पुस्तकालय द्वारा पाठकों को प्रदान की गई बौद्धिक एवं पुस्तकालय संबंधी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मानवीय सहायता ही पुस्तकालयों की संदर्भ सेवा कहलाती थी।

यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि इंटरनेट या गूगल से पहले पारंपरिक पुस्तकालयों में संदर्भ सेवा के माध्यम क्या थे? तथा उस समय पाठकों का एक बड़ा वर्ग पुस्तकालय के संदर्भ विभाग में पठन हेतु क्यों आता था? क्योंकि पुस्तकालयों में संदर्भ विभाग के माध्यम विस्तृत रूप में विद्यमान हैं और ये माध्यम हैं—

1. विश्वकोश, 2. शब्दकोष 3. जीवनीपरक स्रोत, 4. भौगोलिक स्रोत, 5. निर्देशिकाएँ, 6. वार्षिकी तिथिपत्र और विश्वकोशों के पूरक अंश। साथ ही, सामाजिक संदर्भ स्रोत, सांख्यिकी स्रोत, हस्तपुस्तिकाएँ इत्यादि भी उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार यह माना जा सकता है कि किसी भी पारंपरिक पुस्तकालय की रीढ़ थे ये संदर्भ विभाग।

इन उपरोक्त पुस्तकालय संदर्भ विभाग की सेवाओं के माध्यम से ही पाठक को सरलतापूर्वक अभीष्ट सूचना सामग्री प्राप्त हो जाती थी। पुस्तकालयों के संदर्भ विभाग में इस प्रकार की पुस्तकों को पुस्तकालय में द्वित्य सूचना स्रोतों की श्रेणी में रखा जाता था। इस श्रेणी में विश्वकोश, शब्दकोष, हैंडबुक एवं मैनुअल्स नक्शे एवं एटलस इत्यादि आते हैं। द्वित्य सूचना स्रोतों में संदर्भ विभाग में पुस्तकें महत्वपूर्ण सूचना के स्रोत मानी जाती हैं। ऐसी पुस्तकें केवल सूचना प्राप्त करने के लिए ही होती हैं तथा इनका उपयोग पाठ्य पुस्तक की तरह नहीं किया जाता है। ऐसे स्रोत तात्कालिक संदर्भ सेवा के लिए उपयुक्त हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन्हें विशिष्ट प्रकार से तैयार किया जाता है। ताकि पाठकों को शीघ्र आवश्यक संदर्भ सेवा प्राप्त हो सके। आधुनिक युग के पहले दशकों तक संदर्भ ग्रंथों में दी गई सूचना प्रामाणिक विस्तृत अध्ययन होती थी जो पाठकों का सही मार्गदर्शन करती थी। पुस्तकालयों के इस संदर्भ विभाग का उस समय बहुत ही महत्व होता था। पाठक पुस्तकालय में आए बिना इस तरह की सूचनाएँ प्राप्त नहीं कर सकते थे, लेकिन आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के परिवेश में पुस्तकालयों में आना आवश्यक नहीं होता है।

यही कारण है कि पुस्तकालयों के संदर्भ विभाग धीरे-धीरे उपेक्षित हुए और फिर समाप्त हो गए। निम्नलिखित बिंदुओं से हम पारंपरिक पुस्तकालयों की सेवा का महत्व और आधुनिक इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी सेवा का महत्व, दोनों का विश्लेषण कर सकते हैं।

### संदर्भ विभाग की सेवाओं की समाप्ति की कथा

उपरोक्त विवरण में पारंपरिक पुस्तकालयों की संदर्भ सेवा विभाग की जानकारी दी गई है। इंटरनेट की सेवा, गूगल के आविष्कार से पहले पुस्तकालयों के संदर्भ विभाग का पाठक वर्ग पर एकाधिपत्य था। इंटरनेट का उपयोग बढ़ते ही पुस्तकालयों की संदर्भ सेवा अतीत का इतिहास बनकर रह गई। पारंपरिक पुस्तकालयों में पाठकगण हमेशा पठन कक्ष में संदर्भ विभाग की सेवा से प्रसन्नचित्त होते थे और लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहते थे। साथ ही, पुस्तकों से संबंधित अपनी आवश्यकता को ध्यान में रखकर संदर्भ विभाग से फोटोकॉपी भी कराते थे ताकि भविष्य में भी सूचना ज्ञानवर्धक बनी रहे, लेकिन आज के डिजिटल युग में अब ऐसा नहीं होता है क्योंकि मोबाइल या कंप्यूटर पर एक क्लिक करते ही संबंधित जानकारी तुरंत मिल जाती है। अब बात करते हैं कि आज के डिजिटल समय में पुस्तकालयों की पारंपरिक छवि सूचनाएँ आदान-प्रदान करने के पारंपरिक तरीकों को पीछे छोड़कर नए रंग-रूप में कैसे आगे बढ़ी हैं। आज के पुस्तकालयों का स्वरूप व सेवाएँ सब-कुछ बदल गया है। पाठकों को गूगल के आविष्कार के बाद सूचनाएँ व पठन-पाठन से ज्ञान अर्जित करने का नया माध्यम मिला है। पहले जहाँ पुस्तकों से संबंधित जानकारी, सूचनाएँ और डेटा आदि रजिस्टर में रिकॉर्ड बनाकर रखे जाते थे, निर्देशिकाएँ आदि छापी जाती थीं, वहीं ऑनलाइन वेबसाइट पर सब उपलब्ध होता है। सभी सूचनाएँ व संबंधित जानकारी कंप्यूटर पर सहेजी जाती हैं। आम जनमानस में हास्य बोध में एक प्राचीन मुहावरे की पंक्तियाँ तक बदल दी गई हैं। पहले कहा जाता था, “गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागे पाँव”, अब कहा जाता है, “गुरु गूगल दोऊ खड़े, काके लागे पाँव”। आज का समय यही है। पारंपरिक पुस्तकालयों की छवि अब एक यादगार बनकर ही रहेगी।

अब बात करते हैं पुस्तकालय और नई सूचना प्रौद्योगिकी की। आज की इस नई सूचना टेक्नोलॉजी ने जिसमें गूगल, इंटरनेट, मोबाइल फोन, वाट्सएप, डिजिटल लाइब्रेरी, वर्चुअल लाइब्रेरी इत्यादि बहुत कुछ हैं, इन्हीं डिजिटल माध्यमों ने पारंपरिक पुस्तकालयों की छवि में बदलाव किया है। पिछले दशकों में पुस्तकालय के संदर्भ विभाग पाठक, स्टाफ, लोगों (पठन-पाठन में रुचि रखने वाले) को अपनी ओर लुभाते थे और पुस्तकालय का संदर्भ विभाग बहुत ही महत्वपूर्ण होता था, पर आज गूगल है और पुस्तकालय का पठन कक्ष व संदर्भ विभाग बंद होने के कगार या समाप्ति पर पहुँच गए हैं या कह सकते हैं कि समाप्त हो गए हैं। आज पुस्तकालय में उपलब्ध एक ऑनलाइन कैटेलॉग आवश्यक सामग्री ढूँढ़ने की प्रक्रिया को सहज

बना देता है और डिजिटल पुस्तकालय से ऑनलाइन नया संस्करण भी भेजा जाता है। साथ ही, अखबार, क्लिपिंग्स, आर्टिकल्स, डिजिटल फॉर्मर्स के दस्तावेज आदि माँगने पर तुरंत ऑनलाइन भेजा जा सकता है, जिसमें पूरा दस्तावेज कंप्यूटर पर पढ़ा जा सकता है तथा प्रिंट भी निकाला जा सकता है।

पुस्तकालयों की उपेक्षा के नए दौर में अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पारंपरिक पुस्तकालय में जिन कार्यों के लिए कई घंटे लगते थे अब कंप्यूटरीकृत डिजिटल लाइब्रेरी में वे सभी कार्य लगभग कुछ ही घंटों-मिनटों में संपादित किए जाते हैं। इसीलिए आज के परिवेश में पुस्तकालयों के संदर्भ विभाग समाप्त हो गए हैं। कभी संदर्भ विभाग को ‘पुस्तकालय की आत्मा’ कहा जाता था। विचारों व सूचनाओं का खजाना माना जाता था। ‘ज्ञान का भंडार’ कहा जाता था। अब ज्ञान तो है, लेकिन इसका भौतिक स्वरूप बदल गया है। अब पुस्तकालयों के पठन कक्ष सूने पड़े रहते हैं, जबकि डिजिटल युग में एक्स्ट्रा स्मार्ट फोन हैं तो पाठक वर्ग भी पुस्तकालय जाने की बजाय फोन पर ही ई-बुक, ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ई-पेपर आदि पढ़ लेता है। किंडल पर पुस्तकें ऑनलाइन ही पढ़ी जा सकती हैं। बदलते समय में पहले जैसी पठन-पाठन की व्यवस्था नहीं रही है। अब बहुत कुछ इंटरनेट पर सिमट गया है। आज की इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी ने सब-कुछ बदल दिया है। घर बैठे ही भौतिक पुस्तकालय जाए बिना सब सूचनाएँ व जानकारियाँ बड़ी सुविधा के साथ शीघ्र प्राप्त हो जाती हैं। दुनिया बदल रही है। कहा भी गया है कि प्रकृति का नियम है कि समय के साथ बहुत कुछ बदलता है—खान-पान, पहनावा यहाँ तक कि टेक्नोलॉजी भी।

पारंपरिक ढाँचे में ढले पुस्तकालय का महत्व डिजिटल युग में भले ही कम हो गया हो, लेकिन यह भी सच है कि युगों के अतीत इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की विरासत को इन्हीं पुस्तकालयों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचाया है।

आज विश्व के आधुनिक संचार साधनों की मदद से दुनिया के किसी भी कोने में संदेश प्रेषित करना बहुत सुगम हो गया है। यदि संचार के साधनों को हम अपने जीवन से निकाल दें तो फिर से आदिकाल में पहुँच जाएँगे। इसके बिना जीवन अधूरा है। इसके उपयोग से आज सभी मित्रों, रिश्तेदारों, प्रियजनों का आपसी संपर्क बढ़ गया है। अब अपने प्रियजन से बात करने के लिए इंतजार नहीं करना पड़ता है। बस फोन उठाकर कुछ नंबर डायल करके हम उनसे हाल-चाल पूछ सकते हैं, इंटरनेट के द्वारा संसार के किसी भी कोने के समाचार जान सकते हैं। आधुनिक संचार के माध्यम के कारण ही दुनिया छोटी लगने लगी है। संचार के साधन आज के समय में किसी वरदान से कम नहीं हैं।

शिक्षा हमें अंगूठे के निशान से हस्ताक्षर तक ले गई। टेक्नोलॉजी हमें हस्ताक्षर से फिर अंगूठे के निशान पर ले आई। समय के साथ बदलाव भी जरूरी है क्योंकि बदलती दुनिया और आज की सूचना प्रौद्योगिकी की जानकारी के जमाने में खुद को अद्यतन रखने की एक प्रमुख और महत्वपूर्ण माँग है।





# शैक्षणिक अनुसंधान में अग्रणी : इन्फिलबनेट सेंटर

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू वैज्ञानिक सोच को विकसित करने के लिए साइंटिफिक पॉलिसी रिजॉल्यूशन लाए थे। इसमें एक नेटवर्क के माध्यम से लोगों को जोड़ने की बात कही गई। परिणामस्वरूप बहुत सारी समितियाँ और आयोग सामने आए, जिन्होंने स्थानीय, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर के पुस्तकालयों को आपस में जोड़ने की सिफारिश की, ताकि अधिक-से-अधिक स्रोतों को साझा किया जा सके। इससे सूचना की पहुँच बढ़ेगी, जिससे अन्य पुस्तकालयों में प्रतिलिपि (कॉपी) कम होगी और उसके स्थान पर बड़े पैमाने पर अन्य साहित्य को स्थान मिल सकेगा। इसे ध्यान में रखते हुए सभी पुस्तकालयों को जोड़ने की सिफारिश की जाने लगी। 1980 के दशक के बाद बहुत सारे स्थानीय ई-पुस्तकालयों की स्थापना हुई, जैसे—ADINET, CALIBNET, BONET, DELNET, MALIBNET, MYLIBNET



## विजय कुमार 'शाश्वत'

**जन्म :** 01 अक्टूबर, 1983, कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश।

**शिक्षा :** पत्रकारिता में स्नातकोत्तर।

**संप्रति :** राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में संपादकीय सहायक के रूप में कार्यरत।

**प्रकाशन :** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएँ प्रकाशित।

**संपर्क :** मोबाइल— 8010270501

ईमेल— kvijay467@gmail.com



इत्यादि। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्क की कमी खल रही थी जिसका कार्य इन स्थानीय नेटवर्कों को आपस में जोड़ना था। इस पहल की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ली। इस राष्ट्रीय स्तर के नेटवर्क को सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (INFLIBNET) के रूप में जाना गया।

सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्रौद्योगिकी पर जोर दिया गया। इस दौरान 1985-90 के मध्य पुस्तकालय की सेवा को आधुनिक बनाने के लिए एक कार्यकारी समूह बनाया गया। सन् 1988 में यूजीसी द्वारा 'कमिटी ऑन नेशनल नेटवर्क सिस्टम' नाम से एक समिति बनाई गई। इसके अध्यक्ष प्रो. यशपाल थे। इसका उद्देश्य सभी पुस्तकालय स्रोतों को साझा करना था ताकि इसका अधिकतम उपयोग किया जा सके और प्रतिलिपि (कॉपी) से बचते हुए अधिक-से-अधिक साहित्य का भंडारण किया जा सके। 24 अप्रैल, 1988 को समिति की पहली बैठक आयोजित हुई, जिसमें यह

निर्णय लिया गया कि एक कार्यकारी समूह बनाया जाए जो 'इंफॉर्मेशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क' पर अपनी रिपोर्ट अधिकतम तीन महीने के अंदर सौंपेगा। इस समूह में सूचना केंद्र, कंप्यूटर विशेषज्ञ और पुस्तकालयाध्यक्ष शामिल थे। 02 जून, 1988 को यह समूह अपने कार्य में जुट गया और अपनी पहली रिपोर्ट 31 अगस्त, 1988 को सौंप दी। मार्च 1991 में यूजीसी द्वारा इन्फिलबनेट को स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापित कर दिया गया। जून 1996 में यह स्वतंत्र इंटर यूनिवर्सिटी के रूप में उभरकर आया। शुरुआत में इसे गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में स्थापित किया गया, किंतु जनवरी 2013 में इसे इंसोसिटी, गांधीनगर, गुजरात में स्थानांतरित कर दिया गया।

## उद्देश्य और कार्य

1. सूचना हस्तांतरण और पहुँच क्षमता में सुधार के लिए संचार सुविधाओं को बढ़ावा देना और स्थापित करना, जो संबंधित एजेंसियों के सहयोग और भागीदारी के

माध्यम से छात्रवृत्ति, सीखने, अनुसंधान और शैक्षणिक उद्देश्यों को सहायता प्रदान करते हैं।

2. एक समान मानक का पालन करते हुए देश के पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में संचालन और सेवाओं के कंप्यूटरीकरण को बढ़ावा देना और कार्यान्वित करना।

3. तकनीकों, विधियों, प्रक्रियाओं, कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, सेवाओं में मानकों और समान दिशा-निर्देशों को विकसित करना और सभी पुस्तकालयों द्वारा वास्तविक कार्य में उनके अपनाने को बढ़ावा देना, ताकि संसाधनों और सुविधाओं के इष्टतम उपयोग की दिशा में सूचनाओं के साझा और आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाया जा सके।

4. देश में विभिन्न पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों को आपस में जोड़ने वाला एक राष्ट्रीय नेटवर्क विकसित करना और सूचना संचालन और सेवा क्षमता में सुधार करना।

5. भारत में विभिन्न पुस्तकालयों में पत्रिकाओं, थीसिस/शोध प्रबंधों, पुस्तकों, मोनोग्राफ और गैर-पुस्तक सामग्री (पांडुलिपि, ऑडियो-विजुअल, कंप्यूटर डेटा, मल्टीमीडिया आदि) की ऑन-लाइन यूनियन कैटलॉग बनाकर पुस्तकालयों के दस्तावेज़ संग्रह तक विश्वसनीय पहुँच प्रदान करना।

6. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए सूचना प्रणाली (NISSAT) के क्षेत्रीय सूचना केंद्रों, यूजीसी के सूचना केंद्रों, सिटी नेटवर्क और ऐसे अन्य क्षेत्रीय सूचना केंद्रों के स्वदेशी रूप से बनाए गए डेटाबेस के माध्यम से उद्धरण, सार आदि के साथ ग्रंथ सूची संबंधी सूचना स्रोतों तक पहुँच प्रदान करना और क्रमशः राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सूचना नेटवर्क और केंद्रों द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय डेटाबेस तक ऑनलाइन पहुँच के लिए गेटवे स्थापित करना।

7. उच्च घनत्व भंडारण मीडिया का उपयोग करते हुए डिजिटल छवियों के रूप में विभिन्न भारतीय भाषाओं में पांडुलिपियों और सूचना दस्तावेजों के रूप में उपलब्ध मूल्यवान जानकारी के संग्रह के लिए नई विधियों और तकनीकों का विकास करना।

8. साझा कैटलॉगिंग, अंतर-पुस्तकालय ऋण सेवा, कैटलॉग उत्पादन, संग्रह विकास के माध्यम से सूचना संसाधन उपयोग को अनुकूलित करना और इस प्रकार अधिग्रहण में दोहराव से यथासंभव बचना।

9. देशभर में फैले हुए उपयोगकर्ताओं को, स्थान और दूरी पर ध्यान दिए बिना पत्रिकाओं, शोध-प्रबंधों, पुस्तकों, मोनोग्राफिक और गैर-पुस्तक सामग्री के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए उपलब्ध स्रोतों का पता लगाना और इफ्लिबनेट और केंद्रीय दस्तावेजों की सूची के माध्यम से इसे प्राप्त करना।

10. ऑनलाइन सूचना सेवा प्रदान करने के लिए परियोजनाओं, संस्थानों, विशेषज्ञों आदि का डेटाबेस बनाना।

11. देश में पुस्तकालयों, प्रलेखन केंद्रों और सूचना केंद्रों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना, ताकि कमजोर संसाधन केंद्रों को सशक्त केंद्रों द्वारा मदद प्रदान करने में संसाधनों का उचित उपयोग किया जा सके।

12. इफ्लिबनेट को स्थापित करने, प्रबंधित करने और बनाए रखने के लिए कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय संचालन और नेटवर्किंग के क्षेत्र में मानव संसाधन को प्रशिक्षित और विकसित करना।

13. इलेक्ट्रॉनिक मेल, फाइल ट्रांसफर, कंप्यूटर/ऑडियो/वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि के माध्यम से वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, सामाजिक वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, संकायों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच अकादमिक संचार की सुविधा देना।

14. संचार, कंप्यूटर नेटवर्किंग, सूचना प्रबंधन और डेटा प्रबंधन के क्षेत्र में सिस्टम डिजाइन और अध्ययन करना।

15. संचार नेटवर्क के लिए उपयुक्त नियंत्रण और निगरानी प्रणाली स्थापित करना और रखरखाव की व्यवस्था करना।

16. केंद्र के उद्देश्यों के लिए प्रासंगिक क्षेत्र में भारत और विदेशों में संस्थानों, पुस्तकालयों, सूचना केंद्रों और अन्य संगठनों के साथ सहयोग करना।

17. केंद्र के उद्देश्यों को साकार करने के लिए अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना, आवश्यक सुविधाएँ विकसित करना और तकनीकी पदों का निर्माण करना।

18. परामर्श और सूचना सेवाएँ प्रदान करके राजस्व उत्पन्न करना।

19. उपरोक्त सभी या किन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक, आकस्मिक या सहायक अन्य सभी कार्य करना।

### इफ्लिबनेट पुस्तकालय

इफ्लिबनेट पुस्तकालय, केंद्र की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी के संग्रह विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इफ्लिबनेट केंद्र में एक छोटा, विशेष पुस्तकालय है जिसमें कंप्यूटर, संचार, सूचना और पुस्तकालय विज्ञान पर 2000 दस्तावेज शामिल हैं। पुस्तकालय पूरी तरह से सोल (SOUL-Software for University Libraries) एकीकृत पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग कर कंप्यूटरीकृत है। पुस्तकालय का संग्रह ऑनलाइन उपलब्ध है।

### पुस्तकालय सेवाएँ

1. संदर्भ सेवा
2. दस्तावेज़ वितरण सेवा
3. वर्तमान जागरूकता सेवा
4. इंटर-लाइब्रेरी लोन सर्विस
5. इलेक्ट्रॉनिक सूचना सेवा
6. फोटोकॉपी सेवा

## संस्थागत सदस्य

एसोसिएशन फॉर इंफार्मेशन मैनेजमेंट (ASLIB)  
इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन (IFLA)  
अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन (ALA)  
राष्ट्रीय सूचना मानक संगठन (एनआईएसओ)  
भारतीय पुस्तकालय संघ (आईएलए)  
भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस)  
सूचना विज्ञान के लिए सोसायटी (एसआईएस)  
इंडियन एसोसिएशन ऑफ स्पेशल लाइब्रेरी एंड इंफार्मेशन सेंटर्स (IASLIC)  
कंप्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया (सीएसआई)  
अहमदाबाद लाइब्रेरी नेटवर्क (ADINET)  
अमेरिकी संसाधन केंद्र  
ब्रिटिश लाइब्रेरी, अहमदाबाद

## प्रमुख गतिविधियाँ

डेटाबेस प्रबंधन समूह ने बड़ी संख्या में उपलब्ध ग्रंथ सूची रिकॉर्ड के प्रबंधन और उसे अद्यतन करने के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयर और रिसर्च इंटरफेस विकसित किए हैं। इंडकैट में देश भर में 155 से अधिक विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध सभी विषय क्षेत्रों की पुस्तकों, पत्रिकाओं और शोध के लिए ग्रंथ सूची विवरण, स्थान और होल्डिंग जानकारी शामिल है।

**पुस्तकें :** 155 विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से 1,27,25,832 रिकॉर्ड (73.14 लाख अद्वितीय रिकॉर्ड के साथ)।

**थीसिस :** 287 भारतीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों से थीसिस के 2,52,600 रिकॉर्ड।

**वर्तमान पत्रिका :** यूजीसी-इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम से पत्रिकाओं सहित 35,209 जर्नल शीर्षक।

**सीईसी (कंसोर्टियम फॉर एजुकेशनल कम्युनिकेशन) का वीडियो डेटाबेस :** सीईसी और उसके 17 ईएमएमआरसी (एजुकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर) द्वारा निर्मित शैक्षिक वीडियो कार्यक्रमों के 15,000 रिकॉर्ड।

## ई-संसाधन प्रबंधन

समूह का प्रमुख उद्देश्य कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में संकाय, शोधकर्ताओं और छात्रों को सदस्यता की अत्यधिक रियायती दरों पर और कंसोर्टिया दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए सर्वोत्तम नियमों और शर्तों पर ई-संसाधनों के लिए वर्तमान और अभिलेखीय पहुँच प्रदान करना है। समूह उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालयाध्यक्षों, शोधार्थियों और शिक्षकों को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण प्रदान करता है।

## परियोजनाएँ और सेवाएँ

**विद्वान :** यह विशेषज्ञ डेटाबेस और राष्ट्रीय शोधकर्ताओं का नेटवर्क है जो भारत में प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों और अन्य अनुसंधान एवं विकास संगठनों में काम करने वाले वैज्ञानिकों और संकाय सदस्यों के प्रोफाइल का प्रमुख डेटाबेस है।

**आईआरआईएनएस :** यह संस्थान स्तर पर अनुसंधान संबंधी जानकारी को व्यवस्थित करने के लिए केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली वेब-आधारित अनुसंधान सूचना प्रबंधन (RIM) सेवा है। यह पोर्टल शैक्षणिक, अनुसंधान एवं विकास संगठनों और संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों को विद्वानों की संचार गतिविधियों को इकट्ठा करने, ठीक करने और प्रदर्शित करने की सुविधा प्रदान करता है।

## ई-सामग्री विकास और सेवाएँ

**ई-पीजी पाठशाला :** यह यूजीसी द्वारा निष्पादित आईसीटी (एनएमई-आईसीटी) के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा मिशन के तहत शिक्षा मंत्रालय की एक पहल है। इस पहल के तहत, 70 से अधिक विषयों के लिए गुणवत्ता के साथ-साथ बड़ी मात्रा में सामग्री विकसित की गई है और यह ओपन एक्सेस मोड में सुलभ है।

**विद्या-मित्र :** यह सभी ई-सामग्री परियोजनाओं के लिए एक ऑनलाइन शिक्षण पोर्टल है। पोर्टल एक मंच पर लाई गई सभी सामग्री को खोजने और ब्राउज़ करने की सुविधा प्रदान करता है, जिसमें एक शिक्षार्थी आसानी से एक इंटरफ़ेस के माध्यम से वांछित सामग्री तक पहुँच सकता है।

**यूजीसी-एमओओसी :** यूजीसी के तत्वावधान में इफ्लिबनेट इस परियोजना को क्रियान्वित कर रहा है। इफ्लिबनेट की प्रमुख भूमिका सभी पाठ्यक्रम समन्वयक को निधि संवितरण, पाठ्यक्रम प्रस्ताव का वेब इंटरफ़ेस और UGC-MOOCs के लिए एक समर्पित पोर्टल है। पोर्टल SWAYAM समन्वयकों, सलाहकारों, पीजी-पाठ्यक्रम अद्यतन, कार्यशाला विवरण आदि पर जानकारी के लिए एक डैशबोर्ड प्रदान करता है।

**स्वयं प्रभा :** स्वयं-प्रभा, एनएमई-आईसीटी के तहत एक एमओई परियोजना है जो चौबीसों घंटे उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए समर्पित है। कम-से-कम चार घंटे के लिए नई सामग्री का प्रसारण किया जा रहा है जिसे एक दिन में पाँच बार और दोहराया जाएगा, जिससे छात्र अपनी सुविधा के अनुसार समय स्लॉट चुन सकते हैं।

इफ्लिबनेट विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों की सामग्री को एक पोर्टल पर लाने के साथ उसके अधिकाधिक डिजिटल भंडारण में अहम भूमिका निभा रहा है। यह न केवल डेटाबेस को सुरक्षित रख रहा है, बल्कि ज्ञान संवर्धन में भी अपना योगदान दे रहा है।



# शिक्षा के कार्यक्षेत्र में डेलनेट की उपयोगिता

शिक्षा का माध्यम इतनी तेजी से विस्तार पकड़ रहा है कि आने वाले भविष्य में हर कार्यक्षेत्र में शिक्षा का तकनीकी सहयोग आवश्यक होगा। जैसे-जैसे शिक्षा की पद्धति बढ़ती जाएगी, उसके साथ ई-रेसोर्सस भी बढ़ेंगे। देश की कोई भी संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र, वैज्ञानिक संस्थान, उद्योग व कारखाने, शेयर मार्केट, सूचना तकनीकी संस्थान, इंटरनेट सेवा, मोबाइल कंपनियाँ व इंटरनेशनल और मल्टीनेशनल कंपनियाँ, यातायात, हवाई सेवाएँ शिक्षा के माध्यम द्वारा ही विस्तारित की जाती हैं।

किसी संस्था और देश को चलाने के लिए पुस्तकालय की भूमिका बहुत अहम है। पुस्तकालय वह साधन है जिसके उपयोग से



**डॉ. राजन**

**शिक्षा :** इन्फो से लाइब्रेरी एवं सूचना विज्ञान में स्नातक व परास्नातक, लाइब्रेरी एवं सूचना विज्ञान में पी-एच.डी.।

**प्रकाशन :** विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में कई शोध आलेख प्रकाशित।

**संप्रति :** राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में पुस्तकालय-सह-लेखन अधिकारी के रूप में कार्यरत।

**संपर्क :** मोबाइल— 9868251498

**ईमेल—** rajan.ranjan71@gmail.com



पूरी पारदर्शी और निशुल्क जानकारी प्राप्त की जाती है। पुस्तकें समाज में व्यक्तियों के कौशल और मस्तिष्क का विकास करती हैं, चाहे वह कर्मचारी, विषय विशेषज्ञ, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, वकील हो या विद्यार्थी। जिस प्रकार घर में मंदिर की स्थापना की जाती है उसी प्रकार संस्था, देश और शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय मंदिर की तरह होता है। जहाँ हमें पूर्व इतिहास संरक्षण और सूचना का ज्ञान प्राप्त होता है, जो कि हर कार्यक्षेत्र में बहुत सहायक है।

ऐसा ही एक पुस्तकालय डेलनेट है, जो डिजिटल लाइब्रेरी का एक नेटवर्क है। डेलनेट के माध्यम से हम सभी कार्यों सहित शिक्षा के क्षेत्र में इसकी पूरी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। पुस्तकालय एकमात्र साधन है जो हर प्रकार की पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाता है। पुस्तकालयों को आपस में जोड़ने और उनके संरक्षणों को उपलब्ध

करवाने और उनको व्यवस्थित ढंग से उपयोग करने में डेलनेट की बहुत बड़ी भूमिका है। डेलनेट का मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न पुस्तकालयों को आपस में जोड़कर रखना है, ताकि कोई भी शोध हो, पाठ्य सामग्री हो या डिजिटल रिकॉर्ड हो, उसे सुरक्षित रखा जा सके। किसी भी संस्था की संरक्षित पाठ्य सूचना की जानकारी या उसकी सामग्री को व्यवस्थित ढंग से एक-दूसरे तक पहुँचाना डेलनेट का प्रमुख कार्य है।

डेलनेट का पूरा नाम Developing Library Network है जिसका कार्य 1988 में शुरू हुआ था। पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा स्रोत साझा को बढ़ावा देने के लिए आटोमेशन और नेटवर्किंग के साथ इंडिया इंटरनेशनल सेंटर द्वारा इसकी शुरुआत 'दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क' के नाम से पूरे भारतवर्ष में एक ही जगह हुई थी।

यह नेशनल इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी (NISSAT), डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, भारत सरकार के सहयोग से संपन्न हुई और आधिकारिक रूप से सन् 1992 में सोसाइटी रजिस्टर्ड कराई गई, जिसमें पहले 57 सांस्थानिक पुस्तकालयों को सदस्य बनाया गया था। पिछले 30 वर्षों से निरंतर पुस्तकालय नेटवर्क कार्य कर रहा है। अब तक 7561 प्रख्यात पुस्तकालय डेलनेट के सदस्य हैं। पूरे भारतवर्ष में 33 राज्यों में कार्य

“ डेलनेट की वेबसाइट पर ग्रंथसूची व संयुक्त ई-कैटलॉग द्वारा देश के पुस्तकालयों की पाठ्य सामग्री की जानकारी उपलब्ध होती है। उनका पाठक अपने इंस्टीट्यूशनल लाइब्रेरी की सदस्यता के अनुसार वेबसाइट पर लॉगइन करके डेटाबेस सर्च कर सकता है और शीर्षक तथा लेखक के नाम से अपनी आवश्यकता के अनुसार पाठ्य सामग्री प्राप्त कर सकता है। यह भी पता लगा सकता है कि उसकी पाठ्य सामग्री देश के किस राज्य के पुस्तकालय में उपलब्ध है। उस पाठ्य सामग्री को ऑनलाइन बड़ी आसानी से बुक कर सकता है और डेलनेट के माध्यम से उस पुस्तक को प्राप्त कर सकता है और उसे वापस भी कर सकता है। डेलनेट के कर्मचारी पाठक को पाठ्य सामग्री देकर भी जाते हैं और लेकर भी जाते हैं। ”

चल रहा है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 23 अन्य पुस्तकालय नेटवर्क रेसोर्स सेंटर हैं जिनमें भूटान, नेपाल, ओमान, फिलीपींस, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका शामिल हैं। डेलनेट में सभी पुस्तकालयों के नेटवर्क, पाठ्य सामग्री और सदस्यों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। यह पहले दिल्ली तक ही सीमित थी अब देश-विदेश में भी डेलनेट पुस्तकालय संसाधनों का नेटवर्क है। 13 सितंबर, 2000 को इसका नाम 'दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क' से बदलकर 'डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क' रखा गया था, जिसका प्रधान कार्यालय जे.एन.यू. कैंपस, नेल्सन मंडेला मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है।

किसी पाठक और संस्था को उस तक पाठ्य सामग्री पहुँचाना तथा पूरे भारतवर्ष में स्थापित पुस्तकालयों से जो भी पाठक की जरूरत है, उसे उपलब्ध कराने में डेलनेट अहम भूमिका निभाता है। किसी शोधार्थी के लिए पाठ्य सामग्री की आवश्यकता को पूरा करने में डेलनेट की भूमिका और भी अहम हो जाती है, क्योंकि यह एक ऐसा ई-सोर्स नेटवर्क है जो पाठक और किसी भी क्षेत्र के शोधकर्ता को उसकी पाठ्य सामग्री दूसरे पुस्तकालयों द्वारा शीघ्र प्राप्त करवाने में सक्षम है।

डेलनेट की वेबसाइट पर ग्रंथसूची व संयुक्त ई-कैटलॉग द्वारा देश के पुस्तकालयों की पाठ्य सामग्री की जानकारी उपलब्ध होती है।

उनका पाठक अपने इंस्टीट्यूशनल लाइब्रेरी की सदस्यता के अनुसार वेबसाइट पर लॉगइन करके डेटाबेस सर्च कर सकता है और शीर्षक तथा लेखक के नाम से अपनी आवश्यकता के अनुसार पाठ्य सामग्री प्राप्त कर सकता है। यह भी पता लगा सकता है कि उसकी पाठ्य सामग्री देश के किस राज्य के पुस्तकालय में उपलब्ध है। उस पाठ्य सामग्री को ऑनलाइन बड़ी आसानी से बुक कर सकता है और डेलनेट के माध्यम से उस पुस्तक को प्राप्त कर सकता है और उसे वापस भी कर सकता है। डेलनेट के कर्मचारी पाठक को पाठ्य सामग्री देकर भी जाते हैं और लेकर भी जाते हैं। पाठक के गंतव्य स्थान से यह केवल पाठक तक ही सीमित नहीं, बल्कि विद्यालय, वैज्ञानिक, शोधकर्ता, संस्था और विश्वविद्यालय आदि डेलनेट सर्विस का लाभ उठा रहे हैं जिसमें बड़ी तीव्र गति आई है। किसी भी पाठक को उसकी सामग्री एक पुस्तकालय से नहीं, बल्कि कई पुस्तकालयों से मिल सकती है, चाहे वो देश के किसी भी राज्य में हो।

डेलनेट के द्वारा प्रदान की जाने वाली पाठ्य सामग्री के अलावा डिजिटल पुस्तकें, पत्रिकाएँ, डी.वी.डी., ऑडियो, सी.डी., फुल टेक्स्ट रूप में उपलब्ध हैं। इन सेवाओं का आसानी से लाभ उठाया जा सकता है। विज्ञान, कृषि, वकालत, स्थापत्य कला, वाणिज्य, आयुर्वेद, शिक्षा, इंजीनियरिंग, फैशन टेक्नोलॉजी, चिकित्सा, होटल मैनेजमेंट, मास मीडिया, फार्मसी, फिजियोथेरेपी, सामाजिक विज्ञान, योग, प्रबंधन, नर्सिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, इतिहास, भूगोल आदि सेवाएँ अपने सभी सदस्य को डेलनेट आसानी से उन तक पहुँचाता है।



देश और विदेश के संस्थान/पुस्तकालय जो भी डेलनेट के सदस्य हैं, उन सभी के लगभग 61,750 रिकॉर्ड सी.डी.-रोम, डेटाबेस उपलब्ध हैं। इसके अलावा पत्रिकाओं के 11,24,250 डेटाबेस उपलब्ध हैं। किसी पाठक द्वारा उसकी आवश्यक पाठ्य सामग्री अन्य पुस्तकालयों से शीघ्र उपलब्ध करवाई जाती है जिसमें डेलनेट

की सदस्यता के अनुसार वेबसाइट पर लॉगइन करने के पश्चात ई-बुक्स, ई-आर्टिकल्स, 1,04,569 ई-जर्नल्स और ई-पीरिओडिकल्स, 1,30,753 ई-थीसिस सर्च डाउनलोड किए जा सकते हैं। डेलनेट की सदस्यता इंस्टीट्यूशनल मेंबरशिप या पुस्तकालय द्वारा ली जा सकती है और कोई भी इंस्टीट्यूशनल सदस्य इस सेवा का उपयोग अपने पुस्तकालय के माध्यम से कर सकता है।



डेलनेट अपने सभी सदस्यों को शैक्षिक कार्यक्रम, कार्यशाला, व्याख्यान और वेबिनार के लिए आमंत्रित करता है। इसके अलावा किसी भी सदस्य को किसी विषय की जानकारी चाहिए होती है तो मुफ्त सेवा देता है। अपने सभी संसाधनों के द्वारा चाहे वह व्यक्तिगत बैठक के माध्यम से हो या ऑनलाइन माध्यम से, इसके अलावा किसी भी संस्था को डेटाबेस तैयार करवाना हो या सॉफ्टवेयर तकनीकी की जानकारी (सूचना प्रौद्योगिकी), डेलनेट मुफ्त सेवा देता है। नई तकनीकियों की जानकारी, समाचार, नई सदस्य सूची द्वारा पुस्तकालयों की जानकारी, विषय, अपडेट्स, तकनीकी सहयोग और जरूरी प्रकाशन आधारित सेमिनार और रिसर्च पब्लिशड पीरिओडिकल्स की जानकारी भी डेलनेट समय-समय पर देता रहता है।

डेलनेट सेवा को इसकी वेबसाइट delnet.in से लॉगिन करके उपयोग किया जा सकता है। सर्विस पोर्टल खुलने के पश्चात डेलनेट ब्रोशर को डाउनलोड किया जा सकता है और डेलनेट सदस्यता व पूरी पद्धति की जानकारी ली जा सकती है। डेलनेट के सभी समाचार पत्रों को भी डाउनलोड किया जा सकता है। पोर्टल में 'अबाउट अस' टैब दिया गया है जिसमें डेलनेट इतिहास, लक्ष्य, उद्देश्य, प्रबंध मंडल और फोटो गैलरी देखी जा सकती है। सदस्यता टैब में ओवरव्यू, सदस्यता के लाभ, सदस्य पत्र, दस्तावेज, बैंक खाता आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सर्विसेस पोर्टल में डेलनेट के डेटाबेस के संसाधनों की जानकारी, पाठ्य सामग्री मँगवाने की जानकारी, रेफरेंस सर्विस, प्रोफेशनल

ट्रेनिंग, सॉफ्टवेयर सपोर्ट की जानकारी शामिल है। रिसोर्स टैब में नेटवर्क लाइब्रेरी संसाधनों, डेलनेट डिजिटल पत्रिकाओं और शोध, डिजिटल किताबों की जानकारी शामिल हैं। पब्लिकेशन टैब में समाचार के रिपोर्ट्स की जानकारी शामिल हैं। सॉफ्टवेयर टैब में लाइब्रेरी प्रबंधन, लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर और डी-स्पेस की जानकारी उपलब्ध है। प्रोग्राम टैब में वर्कशाप, कांफ्रेंस, लेक्चर, वेबिनार उपलब्ध हैं। मेंबर्स टेस्टोमोनियल्स में पुस्तकालयाध्यक्षों सहित अन्य जानकारी शामिल हैं।

डेलनेट रेसोर्स पुस्तकालय को न्यू डिस्कवरी पोर्टल द्वारा लॉगइन किया जाता है, उसके अगले पोर्टल में यूजर का नाम होता है। संस्था का नाम और पासवर्ड डालकर पोर्टल को खोला जाता है, जिसमें डेलनेट डिजिटल लाइब्रेरी रेसोर्स से शीर्षक डालकर लेखक और विषय के माध्यम से पाठ्य सामग्री को ढूँढा जा सकता है। इसके अलावा पोर्टल में फुल टेक्स्ट, डिजिटल लाइब्रेरी रेसोर्स, ई-किताबें, ई-पत्रिकाएँ, ई-आर्टिकल, पांडुलिपि और दुर्लभ किताबें, थीसिस, भाषा ज्ञान पोर्टल अंग्रेजी और विदेशी भाषाएँ, अतिरिक्त ऑनलाइन डेटाबेस एवं दूसरी डेलनेट द्वारा दिए गए लिंक, डेलनेट ऑनलाइन डेमोस्ट्रेशन, यू-ट्यूब पर, डेलनेट कनसोर्टियम, लाइब्रेरीस जो कि



डेलनेट सदस्य हैं, उनकी पूरी जानकारी पोर्टल में शामिल हैं। चयनित फारमेट द्वारा जो भी पाठ्य सामग्री चाहिए, फाइंड बटन दबाकर जानकारी ली जा सकती है, डाउनलोड की जा सकती है और डेलनेट के माध्यम से मँगवाई जा सकती है।

डेलनेट न केवल शोधार्थियों और शिक्षार्थियों के लिए, अपितु उनके लिए भी अहम भूमिका निभाता है जो पुस्तकालयों का उपयोग करके अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं और समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करते हैं। डेलनेट देश के विकास की नींव है। ये देश के हर राज्यों में स्थापित होने चाहिए जिसके द्वारा देश का हर व्यक्ति शिक्षा का लाभ उठा सके।





# डिजिटल पुस्तकालय

इंटरनेट एक वरदान है क्योंकि ओपन-सोर्स मूवमेंट की जानकारी बिना किसी खर्च के कुछ हद तक मुफ्त उपलब्ध है। इंटरनेट के साथ विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन हुए हैं। पुस्तकालय की अब तक की धारणा—किताबें और चारदीवारी के पीछे भौतिक रूप से उपकरणों में जानकारी संगृहीत करना है। भौतिक रिक्त स्थान कम होने और कम स्थान घेरने वाले अधिक संग्रहण स्थान के साथ लगातार बढ़ते उपकरणों और क्लाउड तंत्र का महत्व बढ़ रहा है। कहीं से भी किसी भी जानकारी को पुनः प्राप्त करने के तंत्र के साथ एक निश्चित समय पर और एक ही समय में ऑफलाइन और ऑनलाइन उपयोग करने वाले लोगों के लिए किसी पुस्तकालय में भौतिक रूप से जाना एक चुनौती बन जाता है। मार्च 2020 कोरोना वायरस के कारण पीढ़ियों की स्मृति में बना रहेगा,



जिसने लॉकडाउन की घोषणा की, जिसके चलते एक साल से ज्यादा समय तक लोग घरों में ही रहे और घर से ही काम किया। लगभग एक वर्ष से अधिक समय से कार्यालय और शैक्षणिक संस्थान ऑनलाइन हो रहे हैं, जिसने काम और सीखने को ऑनलाइन एक विकल्प बना दिया है, जो बना रहेगा। इस सब ने सभी को समझा दिया कि शिक्षण और सीखने सहित विभिन्न क्षेत्रों में ऑनलाइन स्थान बढ़ रहा है। इस लेख का उद्देश्य सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों से संबंधित कई डिजिटल पुस्तकालयों को पेश करना है और इन डिजिटल पुस्तकालयों के बारे में व्यापक जानकारी जनता के ध्यान में लाना है। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग, इंटरनेट आर्काइव, द इंटरनेशनल चिल्ड्रेन्स डिजिटल लाइब्रेरी, यूनेस्को डिजिटल लाइब्रेरी, द इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन एंड इंस्टीट्यूशंस (IFLA) और नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (NDLI) आदि पुस्तकालय या

तो स्वतंत्र रूप से या नाममात्र की सदस्यता के साथ व्यापक जनता के लिए सुलभ हैं।

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग 60 हजार से अधिक पुस्तकों वाली एक ऑनलाइन लाइब्रेरी (<https://www.gutenberg.org/>) है। एक बार ऑनलाइन पढ़ सकते हैं या डाउनलोड कर सकते हैं और ये किताबें मुफ्त में उपलब्ध हैं। कोई भी विभिन्न स्वरूपों जैसे ई-बुक और ऐप में पढ़ सकता है। हालाँकि यहाँ वैश्विक साहित्य मिल सकता है, लेकिन अमेरिकी कॉपीराइट की पुस्तकें जो पुरानी पुस्तकों के कारण समाप्त हो गई हैं, पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इन पुस्तकों का अमेरिका में स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि ये अमेरिकी कॉपीराइट कानूनों के तहत सुरक्षित नहीं हैं, वेबसाइट अमेरिका के बाहर के उपयोगकर्ताओं को उस देश के कॉपीराइट कानूनों की जाँच करने के लिए सावधान करती है जिसमें उपयोगकर्ता उपयोग कर रहे हैं। ऐसी पुस्तकें हैं जो कॉपीराइट हैं और कॉपीराइट धारकों



## जी. अरुणा कुमार

जन्म : 31 जुलाई, 1967

संप्रति : चिरेक इंटरनेशनल स्कूल, हैदराबाद में पुस्तकालयाध्यक्ष। स्कूल लाइब्रेरी एसोसिएशन, भारत के सक्रिय सदस्य।

लेखन : तेलुगू, अंग्रेजी और हिंदी में निरंतर लेखन। राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई लेख प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल— 8179607435

ईमेल— arunagklib@hotmail.com

को केवल गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों का उपयोग करने की अनुमति है। स्वयंसेवक ई-बुक्स को डिजिटलाइज़ करने या प्रूफरीडिंग करने में मदद करते हैं। इस परियोजना का समर्थन करने के लिए कोई भी अमेरिकी कानूनों के तहत दान कर सकता है। कोई सुधार या बग और त्रुटियों की रिपोर्टिंग में सुधार के लिए सुझाव दे सकता है। दुनिया भर की विभिन्न भाषाओं की अंग्रेजी पुस्तकों के अलावा जिन्हें अनुमति दी गई है, वे इस पुस्तकालय में शामिल हैं।

इंटरनेट आर्काइव (<https://archive.org/>) किताबों, ऑडियो, वीडियो, संगीत, सॉफ्टवेयर की एक गैर-लाभकारी लाइब्रेरी है। यह इंटरनेट साइटों और सांस्कृतिक कलाकृतियों के डिजिटल रूप में एक भंडार है। उन तक पहुँच निःशुल्क है और उपयोगकर्ता सेवाओं का उपयोग करने के लिए साइन अप कर सकते हैं। यह ज्ञान तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के मिशन के साथ ऑनलाइन चलाया जाता है। यह विभिन्न संस्थानों और संगठनों के सहयोग से काम करता है। यह संग्रह विभिन्न संस्थानों और संगठनों के दान और धन से चलता है और संग्रह धन के स्रोत के लिए विभिन्न संगठनों को शुल्क सेवाएँ प्रदान करता है। कोई भी ओपन लाइब्रेरी (<https://openlibrary.org/>) का उपयोग किताबों तक पहुँचने और उन पुरानी किताबों को डाउनलोड करने के लिए कर सकता है, जिनका कॉपीराइट समाप्त हो चुका है। आधुनिक पुस्तकें कोई भी ऑनलाइन लाइब्रेरी से उधार ले सकता है। एक स्वयंसेवक के रूप में संग्रह करने के साथ-साथ मुक्त पुस्तकालय के रूप में सेवाएँ प्रदान कर सकता है। पुस्तकें खोजने के लिए कोई भी कैंटलॉग का उपयोग कर सकता है। इंटरनेट आर्काइव को साइट पर ही किताबों, फिल्मों, वीडियो आदि की खोज से संबंधित

कई विकल्प मिले हैं। कोई भी किताबें पढ़ सकता है या उधार ले सकता है। पुस्तकालय में विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

अमेरिका में इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस डिजिटल लाइब्रेरी (आईसीडीएल) फाउंडेशन ने आईसीडीएल को ऑनलाइन (<http://www.childrenslibrary.org/>) बनाया है जिसमें दुनिया भर की 59 से अधिक भाषाओं की किताबें हैं। आईसीडीएल फाउंडेशन एक गैर-लाभकारी निगम है। 'विभिन्न संस्कृतियों के लिए सहिष्णुता

और सम्मान को बढ़ावा देने' के लिए दुनिया भर से बच्चों के साहित्य तक पहुँच प्रदान करने का फाउंडेशन का मिशन है। आईसीडीएल फाउंडेशन खोज के बारे में लाइब्रेरियन और शोधकर्ताओं के साथ शोध साझा करता है। इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस डिजिटल लाइब्रेरी, जैसा कि नाम से पता चलता है, यह लाइब्रेरी बच्चों के लिए है। आसान पहुँच और खोज की सुविधा के लिए पुस्तकों को भाषा, रंग प्रारूप, शैली और यहाँ तक कि पुस्तक के पात्रों द्वारा भी खोजा जा सकता है। इस पुस्तकालय में न केवल अनुवाद हैं, बल्कि विभिन्न भाषाओं में लिखी गई पुस्तकें भी हैं। इससे लोगों को अपनी भाषाओं में विभिन्न लोगों की संस्कृतियों के बारे में जानने में सुविधा होती है। पुस्तकें पढ़ने के लिए उपयोगकर्ता आईसीडीएल रीडर या पीडीएफ का उपयोग कर सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की डिजिटल लाइब्रेरी (<https://unesdoc.unesco.org/>) नाम से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह लाइब्रेरी किसके लिए



सुलभ है। कई दस्तावेज और संसाधन हैं जो पुस्तकालय के ओपन एक्सेस संसाधन क्षेत्र के हिस्से के रूप में उपलब्ध हैं जो शिक्षकों, विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं के लिए कार्य में विकास और प्रगति को जानने के लिए उपलब्ध हैं। यह वैश्विक स्तर और देशों के स्तर पर इन संसाधनों का लाभ प्राप्त करने के लिए पहले उल्लिखित विभिन्न हितधारकों की मदद करेगा।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशंस एंड इंस्टीट्यूशंस (आईएफएलए) (<https://library.ifla.org/>) एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि ज्ञान पैदा करने और पुस्तकालयों को

काम करने के लिए संसाधनों का निर्माण करके पुस्तकालयों के प्रचार में काम करता है। विभिन्न वर्गों के माध्यम से स्कूल पुस्तकालय अनुभाग, ग्रंथ सूची अनुभाग, कैंटलॉगिंग अनुभाग और विशेष रुचि समूह विभिन्न वर्गों में मानकों को तैयार करने का प्रयास करते हैं जो शिक्षित समाज बनाने और लोगों की जानकारी को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालयों से संबंधित हैं। विश्व सम्मेलनों, वेबिनार और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आईएफएलए पुस्तकालयों की मदद करने

का प्रयास करता है। 190 देशों के सदस्यों के साथ विशेषज्ञ और शोधकर्ता एवं तकनीकी विशेषज्ञ आईएफएलए तक पहुँचने और प्रभावी ढंग से काम करने में शामिल हैं। आईएफएलए स्वयंसेवकों के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में मानकों और दिशानिर्देशों का अनुवाद करके विभिन्न लोगों तक पहुँचने में मदद करता है।



नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (एनडीएलआई) (<https://ndl.iitkgp.ac.in/>) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन (NMEICT) द्वारा प्रायोजित है। इसका वित्त पोषण शिक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। इसका उद्देश्य सीखने वाले समुदाय की सुविधा के लिए सभी संसाधनों का भंडारण करना है। यह पुस्तकालय वास्तव में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर द्वारा निर्मित, संचालित और अनुरक्षित है। पुस्तकालय प्राथमिक से स्नातकोत्तर तक के शिक्षार्थियों, शोधकर्ताओं और आजीवन शिक्षार्थियों को संसाधन प्रदान करता है। व्यक्ति एनडीएलआई के सदस्य हो सकते हैं और संस्थान थोक पंजीकरण सुविधा का उपयोग कर सकते हैं। सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। इसमें ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित संसाधन—विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी और इंजीनियरिंग शामिल हैं। विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से भंडार का संचालन होता है। एक महत्वपूर्ण विशेषता एनडीएलआई क्लब है जहाँ सदस्य विशेष रूप से संस्थानों से बड़ी संख्या में, स्कूल या कॉलेज थोक पंजीकरण का उपयोग करके क्लब में शामिल हो सकते हैं। एनडीएलआई क्लब में शामिल होकर सदस्य गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं और उन्हें एनडीएलआई में पोस्ट कर सकते हैं। यदि सदस्यों को क्लब की गतिविधियों के संचालन के विचारों से संबंधित किसी भी मदद की आवश्यकता हो या किसी संसाधन, व्यक्ति की आवश्यकता हो तो वे मदद के लिए एनडीएलआई के कर्मचारियों से संपर्क कर सकते हैं। सेवाओं को प्राप्त करने के लिए किसी को एनडीएलआई का सदस्य होना चाहिए, अगर किसी को सदस्यता के लिए पंजीकरण करते समय किसी समस्या का सामना करना पड़ता है, तो वे वेबसाइट पर संपर्क

विवरण का उपयोग करके एनडीएलआई स्टाफ से सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ का उल्लेख करने के लिए वीडियो, ऑडियो के रूप में संसाधन मिल सकते हैं। कोई भी स्टार्टअप और विचारधारा से संबंधित संसाधन खोज सकता है। एनडीएलआई शिक्षकों या विशेषज्ञों द्वारा सामग्री या संसाधनों की तैयारी की सुविधा प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक किसी भी भाषा में पाठ योजना या किसी भी पाठ्यक्रम की गतिविधियों को तैयार करके योगदान दे सकता है। (एनडीएलआई सामग्री प्राप्त करता है यदि भाषा उनके डेटाबेस में शामिल नहीं है तो वे काम करेंगे और बाद में इसे शामिल करेंगे) वे इसे एनडीएलआई को भेज सकते हैं, कर्मचारी जो उपयोगकर्ताओं के उपयोग के लिए अपने रिपॉजिटरी में सत्यापित और अद्यतन करते हैं। वर्ष 2020 में कोरोना के चलते लॉकडाउन के कारण कई महीनों तक शैक्षणिक संस्थान बंद रहे। शिक्षार्थी और उपयोगकर्ता जो घर पर थे, उन्हें जानकारी के संसाधनों तक पहुँचने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा था या तो वे अपने अध्ययन में उपयोग कर रहे थे या ऑनलाइन सीखने/शिक्षण का सामना करने के लिए कौशल बढ़ा रहे थे। इस दौरान इस साइट पर प्रयोगकर्ताओं की



आवक कई गुना बढ़ गई। एनडीएलआई ने पी.एन. पणिक्कर फाउंडेशन के सहयोग से फाउंडेशन का 25वाँ नेशनल रीडिंग/ डिजिटल रीडिंग मंथ मनाया। देश भर के प्रतिभागियों को मौका देते हुए छात्रों, शिक्षकों और पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए विभिन्न गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। व्यावसायिक विकास के लिए वेबिनार का आयोजन किया और एनडीएलआई के उपयोग/जागरूकता का ऑनलाइन आयोजन किया।

इनमें से कुछ डिजिटल पुस्तकालय सामान्य रूप से लोगों को मुफ्त सेवाएँ प्रदान करते हैं। सरकारी और गैर-सरकारी (गैर-लाभकारी) संस्थानों या संगठनों द्वारा चलाए जा रहे पुस्तकालयों के बारे में विवरण देते समय ये सब सामान्य रूप से इंटरनेट की उपलब्धता की संभावना और सीखने वाले समुदायों, शोधकर्ताओं और आजीवन शिक्षार्थियों के लिए सेवाएँ प्रदान करने में मदद करता है।





# ‘पढ़े भारत, बढ़े भारत’ का स्वप्न करता साकार एनडीएलआई

हमारा देश तेजी से डिजिटल इंडिया बनता जा रहा है। सरकार दिन-प्रतिदिन नए-नए एप्स लॉन्च करती है और योजनाएँ लागू करते हुए जनता के लिए सुविधाएँ मुहैया करा रही है ताकि लोगों की समस्याओं को कम किया जा सके और समय की बचत हो सके। इसी पहल के अंतर्गत अब राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल पुस्तकालय का स्वप्न साकार हुआ है। भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर द्वारा विकसित सूचना और संचार प्रौद्योगिकी परियोजना के माध्यम से शिक्षा का एक राष्ट्रीय मिशन है। पुस्तकालय ज्ञान का भंडार होता है, जिसे प्राप्त करने का अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को है। आज डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट कनेक्टिविटी के आगमन के साथ

पुस्तकालयों का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। भौतिक रूप में उपलब्ध डेटा को डिजिटल पुस्तकालय में डिजिटल रूप में संरक्षित किए जाने की सुविधा हो गई है। इस प्रकार के पुस्तकालयों में सूचना और ज्ञान तक पहुँच बढ़ाने की क्षमता में विकास के

साथ-साथ समय की बचत हुई है तो दूरस्थ स्थानों तक पहुँचने की बाधाएँ भी दूर हुई हैं।

डिजिटल पुस्तकालय में डाक्यूमेंट्स अपलोड रहते हैं। इसके जरिये इंटरनेट पर पत्रिका, लेख, पुस्तकें, पेपर्स, चित्र, साउंड फाइल्स और वीडियो सरलता से देखे जा सकते हैं। इन फाइलों का प्रिंट भी लिया जा सकता है। डिजिटल पुस्तकालय में डिजिटल रिसोर्स के संग्रह की विस्तृत शृंखला स्टोर की गई होती है जिसे कंप्यूटर नेटवर्क पर उपयोगकर्ता द्वारा एक्सेस किया जा सकता है। इस तरह के पुस्तकालय को प्रतिदिन अपडेट किया जा सकता है। इसमें एक ही रिसोर्स का उपयोग एक ही समय में कई उपयोगकर्ताओं द्वारा किया जा सकता है। डिजिटल पुस्तकालय एक अधिक संरचित पद्धति से बहुत उच्चकोटि की सामग्री तक पहुँच प्रदान करती है। यानी हम कैटलॉग से किसी विशेष पुस्तक तक और फिर एक विशेष अध्याय तक जल्द ही पहुँच सकते हैं,



जिसकी मदद से गुणवत्ता युक्त प्रतिलिपि का निर्माण अल्प समय में किया जा सकता है। इस पुस्तकालय का उपयोग शिक्षण संस्थान लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम और वर्चुअल क्लासरूम सॉफ्टवेयर के साथ एकीकृत करके छात्रों के सीखने के अनुभव को बढ़ा सकते हैं। एक डिजिटल पुस्तकालय स्थापित करने की लागत पारंपरिक पुस्तकालय की तुलना में बहुत कम होती है। हाँ, शुरुआत में उच्च तकनीक वाले कंप्यूटर एवं सॉफ्टवेयर की लागत जरूर आती है।

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय भारत तथा विदेशों के शिक्षा संस्थानों से अध्ययन सामग्री एकत्र करने का एक प्लेटफॉर्म है। इस पुस्तकालय का शुभारंभ 19 जून, 2018 को तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री प्रकाश जावड़ेकर द्वारा किया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ने भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय को



## कमलेश पाण्डेय ‘पुष्प’

जन्म : 16 अप्रैल, 1965, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी)।

संप्रति : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में संपादकीय सहायक के पद पर कार्यरत।

प्रकाशन : बाल कहानी संग्रह ‘असली गुल्लक’, कहानी संग्रह ‘अनुराधा लौट आओ’ प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल— 9873575920

ईमेल—kamleshpandey.65@gmail.com

विकसित किया है। इस पुस्तकालय का प्रबंधन इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय करता है। अपने आप में अनूठे इस पुस्तकालय का उद्देश्य देश के सभी नागरिकों को डिजिटल शिक्षण संसाधन उपलब्ध कराना तथा उन्हें ज्ञान प्राप्ति के लिए सशक्त, प्रेरित और प्रोत्साहित करना है। यह पुस्तकालय एक तरह से डिजिटल भारत के एक नए युग की शुरुआत है। कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, कहीं से भी राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय का उपयोग कर सकता है। यह सेवा निःशुल्क है और 'पढ़े भारत, बढ़े भारत' के संदर्भ में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस पुस्तकालय में 200 भाषाओं में 160 स्रोतों से एकत्र की गई अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। यहाँ लगभग 30 लाख उपयोगकर्ताओं का पंजीयन हुआ है। पुस्तकालय का लक्ष्य है कि प्रति वर्ष इस संख्या में निरंतर वृद्धि हो।

इस राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में साढ़े चार करोड़ से ज्यादा पुस्तकें और लगभग आठ करोड़ पाठ्यक्रम सामग्री उपलब्ध है। यहाँ स्कूल कॉलेज, प्रतियोगी परीक्षा, सरकारी नौकरी से लेकर शोध कार्य के लिए प्रत्येक विषय की पुस्तकें मिल सकती हैं। पुस्तकालय में ऑनलाइन पढ़ाई से जुड़ी हर तरह की सामग्री है जो सिर्फ भारतीय भाषाओं में ही नहीं, दुनिया भर की दूसरी भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। यहाँ उपलब्ध कंटेंट या मेटेरियल ऑडियो, वीडियो, डॉक्यूमेंट और पुस्तकों के अलावा थीसिस रूप में हैं। घर में रहकर ऑनलाइन पढ़ाई के लिए यह पुस्तकालय एक बेहतर विकल्प हो सकता है। एक ताजा जानकारी के अनुसार इस पुस्तकालय से लगभग दो लाख डॉक्यूमेंट प्रतिदिन पढ़ाई के लिए उपयोग में लिए जा रहे हैं। पुस्तकालय के इस वेबसाइट का उपयोग करने के लिए रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है। अभी तक लगभग 60 लाख छात्र यहाँ रजिस्टर्ड हैं। यहाँ 7.3 करोड़ पढ़ाई से संबंधित सामग्री उपलब्ध है, जिसका उपयोग छात्रों द्वारा कभी भी किया जा सकता है।

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय की वेबसाइट के लिए [www.ndl.gov.in](http://www.ndl.gov.in) पर जा सकते हैं। वेबसाइट के अलावा राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय मोबाइल एप पर भी उपलब्ध है। यह मोबाइल एप पूरे देश के प्रमुख शिक्षण संस्थानों एवं पुस्तकालयों और यहाँ तक कि विदेशी पुस्तकालयों की डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराता है। यह किसी भी भाषा की सामग्री को प्रस्तुत करने के लिए डिजाइन किया गया है और प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए सीखने और अनुसंधान इंटरफेस समर्थन प्रदान करता है। यह सभी शैक्षणिक स्तरों के लिए हर प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए व्यवस्थित किया गया है, जिसमें सभी विषयों के शोधकर्ताओं व विशेषज्ञों द्वारा तैयार सामग्रियों और एक्सेस उपकरणों के सभी लोकप्रिय रूपों को शामिल किया गया है। उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार अपनी विषयवस्तु ढूँढ़ सकते हैं। अभी यह एप तीन भाषाओं अंग्रेजी, हिंदी और बांग्ला

में उपलब्ध है। आई फोन और एंड्रॉयड दोनों प्रकार के फोन उपयोगकर्ताओं के लिए यह एप उपलब्ध है।

इस राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में कला, संगीत, नृत्य, रंगमंच, संस्कृति और विज्ञान सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रों को शामिल किया गया है। प्रौद्योगिकी, पुरातत्व, साहित्य, ई-पेपर एवं पांडुलिपियों का भी यहाँ विस्तृत भंडार है। यही नहीं, इस पुस्तकालय में सीबीएसई, उत्तर प्रदेश बोर्ड, हरियाणा बोर्ड, मध्य प्रदेश बोर्ड सहित कुल 17 राज्यों के बोर्ड का पाठ्यक्रम और पुस्तकें ऑनलाइन उपलब्ध हैं। रजिस्टर्ड छात्रों को सभी सामग्री एक क्लिक पर मिल रही है। छात्रों को कोई पुस्तक बाजार में नहीं मिल रही है तो वह यहाँ उपलब्ध है। भविष्य में यह पुस्तकालय अन्य राज्यों के शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम को भी उपलब्ध कराने के लिए प्रयासरत है। इससे न केवल पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्ति में सुविधा होगी, बल्कि कोरोना काल जैसे विकट समय में लॉकडाउन की स्थिति में भी अध्ययन प्रक्रिया सुचारु रूप से जारी रह सकती है। इस राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में सभी अकादमिक विषयों सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे कि मनोरंजन, धर्म, नीति और नैतिकता के बारे में भी पढ़ने योग्य उपयोगी जानकारी के साथ ही विभिन्न प्रकार की डिजिटल पुस्तकें भी पढ़ सकते हैं। इससे जानकारी बढ़ने के साथ-साथ समय भी अच्छी तरह व्यतीत हो सकेगा।

### रजिस्ट्रेशन कैसे करें

[www.ndl.gov.in](http://www.ndl.gov.in) या <https://ndl.iitkgp.ac.in> पर लॉगइन करके नए सदस्य के रूप में रजिस्टर करें। इस प्रक्रिया में नाम, जन्मतिथि, ई-मेल आईडी, शहर, संस्थान जिससे जुड़े हैं, आदि का उल्लेख करना होता है और अपना पासवर्ड बनाना होता है। इसके पश्चात एनडीएलआई आपके ई-मेल आईडी पर अकाउंट के सक्रिय होने के संबंध में एक्टिवेशन लिंक भेजता है। इसी तरह से एनडीएलआई क्लब रजिस्ट्रेशन भी होता है। इसमें संस्थाओं एवं कॉलेज आदि का रजिस्ट्रेशन होता है।

### छात्रों के लिए उपलब्ध प्रमुख सामग्री

**वीडियो :** लेक्चर्स, लेक्चर्स नोट, प्रश्न पत्र और सल्यूशंस, अनुरूपण (सिमुलेशन)।

**परीक्षा की तैयारी के लिए :** सीबीएसई, आईआईटी-जेईई और नीट, जेएएम (ज्वाइंट एडमिशन फॉर मास्टर्स), गेट, यूजीसी नेट, कैरियर डेवलपमेंट एवं रिक्रूटमेंट।

**होम स्टडी :** स्कूल, इंजीनियरिंग, साइंस, ह्यूमैनिटीज, लिटरेचर्स, लॉ एंड मैनेजमेंट।

इसके अलावा मैनुस्क्रिप्ट, टेक्निकल मैनुअल, आर्टिकल, एलबम, रिपोर्ट, रिसर्च सामग्री एवं फीचर्स के कलेक्शन हेतु भी मदद ली जा सकती है।





# कौन कहता है, पुस्तकें पढ़ी नहीं जाती

एक धारणा बन गई है कि अब किताबों का जमाना गया, अब लोग किताबें शौकिया खरीदते हैं, पर सत्य इसके उलट है। अभी भी किताबों की साख बहुत ज्यादा है। भारत में भले ही परंपरागत लाइब्रेरीज बंद हो रही हों, किंतु अधिकांश पश्चिमी देशों में पब्लिक लाइब्रेरी न सिर्फ पुस्तकें लेने के वास्ते बनी हैं, बल्कि वहाँ बैठ कर पढ़ने वालों की भी संख्या खूब है। पिछले कोई पाँच महीनों में मैंने कनाडा में देखा कि हर टाउन एरिया में एक से अधिक पब्लिक लाइब्रेरी हैं। उनमें असंख्य पुस्तकें मिल जाती हैं, यहाँ तक कि भारतीय भाषाओं की भी। खासकर तेलुगू और गुजराती की पुस्तकें तो बहुत अधिक, कुछ हिंदी की भी उपलब्ध हैं। क्योंकि वहाँ के हर क्षेत्र में कुछ हिंदी भाषी भी हैं और वहाँ की टाउन एरिया उनके लिए पुस्तकें उपलब्ध



करवाती हैं। टोरंटो शहर और उसके आस-पास की म्यूनिस्पैलिटी जैसे ब्रैम्पटन, मिसिसागा, नॉर्थ यॉर्क, स्कारब्रो, पिकरिंग, एजेक्स, विटबी, ओशवा आदि में असंख्य पब्लिक लाइब्रेरी हैं।

इन लाइब्रेरीज में पढ़ने वालों की भीड़ भी खूब जुटती है। छात्र तो आते ही हैं, बुजुर्ग लोग भी वहीं जुटते हैं और बैठ कर पढ़ने की व्यवस्था भी होती है। हर लाइब्रेरी में दसियों मेज लगी हैं और तमाम केबिन बने हैं ताकि पढ़ने वालों को कोई व्यवधान नहीं हो। जिन लोगों के पास कार्ड हैं, वे पुस्तकें इश्यू करा सकते हैं, अन्यथा वहीं बैठ कर पढ़ सकते हैं, सुबह नौ बजे से रात साढ़े आठ तक। लोगों को पढ़ने की यहाँ इतनी लगन है कि स्कूली बच्चे भी तल्लीनता से पुस्तकें पढ़ा करते हैं। उनके स्कूलों में भी प्रेरित किया जाता है कि वे हर सप्ताह लाइब्रेरी जाएँ। एक बार में किताब 15 दिन के लिए इश्यू होती है, बाद में इसे दो बार के लिए और बढ़वा सकते हैं।

निर्धारित वापसी की तारीख को वापस न करने पर या किताब को क्षति पहुँचाने, उस पर कुछ लिखने पर पाँच कनेडियन डॉलर (लगभग 325 रुपये) का जुर्माना है। किताब खो जाने पर उसकी कीमत अदा करनी पड़ेगी। बाकी लाइब्रेरी का सदस्य बनने के लिए कोई शुल्क नहीं है। आपके पास कनाडा का पहचान पत्र होना चाहिए। इसी तरह अमेरिका में भी यही नियम लागू हैं। प्रत्येक लाइब्रेरी कम-से-कम दो हेक्टेयर में होती है। बाहर धूप में बैठने के लिए लॉन हैं, जहाँ कुर्सियाँ पड़ी हैं और पूरा दिन धूप में आप पढ़ सकते हैं। हर लाइब्रेरी दो से तीन मंजिल की होती है। असंख्य पुस्तकें इतिहास, भूगोल, साइंस और साहित्य की हैं। इनके अलावा यात्रा संस्मरण, वीडियोज़, मैप आदि सब उपलब्ध हैं।

इनकी तुलना में भारत में लाइब्रेरीज का घोर अभाव है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की मुख्य शाखा में पुरानी धूल खाती पुस्तकें हैं।



**शंभूनाथ शुक्ल**

जन्म : 14 फरवरी।

श्री शुक्ल देश के वरिष्ठ पत्रकार हैं, वे अमर उजाला, जनसत्ता जैसे समाचार पत्रों के संपादक रहे हैं।

कानपुर विश्वविद्यालय से स्नातक श्री शुक्ल इन दिनों स्वतंत्र पत्रकार के रूप में लेखन और विभिन्न समाचार चैनलों पर विशेषज्ञ के रूप में सक्रिय हैं।

संपर्क :

ई-मेल : shambhunaths@gmail.com

साहित्य अकादमी और नेहरू पुस्तकालय की दिल्ली में ही कोई शाखा नहीं है। इसलिए अकेली दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ही बचती है। वहाँ पर भी साहित्य के अलावा अन्य विषयों की पुस्तकें न के बराबर हैं। हिंदी के सेक्शन में तो सिर्फ कहानी, कविता या उपन्यास ही मिलते हैं। यहाँ तक कि तुलनात्मक दर्शन की भी पुस्तकें नहीं हैं। इसकी एक वजह तो हिंदी में अनुवाद को प्रोत्साहन नहीं देना है। इसलिए हिंदी वालों में वैश्विक दृष्टि नहीं विकसित हो रही। प्राइवेट प्रकाशकों की अनुवाद साहित्य और वैश्विक ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें छापने में रुचि नहीं होती और सरकारी प्रकाशन संस्थान अपनी अच्छी पुस्तकों का भी विज्ञापन नहीं कर पाते। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत हर वर्ष तमाम पुस्तकें छापता है और अनुवाद भी कराता है, इसलिए उनकी पुस्तकें सभी जगह खूब खरीदी जाती हैं और विश्व की हर लाइब्रेरी में न्यास की पुस्तकें भी मिल जाती हैं। फिर भी विश्व साहित्य में दर्जा पाने के लिए हिंदी नाकाफी है। अकेले उपन्यास या कथा साहित्य अथवा आलोचना से किसी भी भाषा की समृद्धि नहीं होती और न ही उस भाषा की किताबों की माँग बढ़ती है। इसके लिए साइंस, दर्शन, सोशियोलॉजी या पॉलिटिक्स पर भी पुस्तकें चाहिए, जिनका हिंदी में अभाव है। इसीलिए उत्तर भारत के पुस्तकालय खाली रहते हैं।

बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत की चारों प्रमुख भाषाओं—तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम में ढेरों पुस्तकें साहित्य से इतर विषयों पर उपलब्ध हैं। इसलिए इन प्रदेशों में आज भी पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित हैं। यह सच है कि कंप्यूटर के आ जाने से तमाम पुस्तकों के डिजिटल संस्करण उपलब्ध हैं। यह भी एक तरह से थाती है। डिजिटल संस्करण के नष्ट होने का खतरा नहीं रहता और वे वर्षों तक सुरक्षित रहती हैं। मगर असली चीज है कि पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित किया जाए। स्कूलों में बच्चों को नियमित तौर पर पुस्तकें पढ़ने के लिए लाइब्रेरी जाने को प्रेरित किया जाए। उन्हें स्मार्ट फोन्स की दुनिया से दूर रखा जाए। इसके लिए बच्चों के अभिभावक और स्कूल दोनों की जिम्मेदारी बनती है। लेकिन असल बात तो यह है कि उत्तर भारत में माँ-बाप और स्कूल सब बच्चों को संस्कारित करने से दूर रहना चाहते हैं। उनको लगता है कि हम मँहेंगे स्कूलों में अपने बच्चों को दाखिला दिलवा कर उन्हें संस्कारवान बना देंगे। उधर स्कूल बच्चों को बुनियादी शिक्षा के नाम पर एक तरह की रटंत विद्या का अभ्यास करवा देते हैं। रटंत विद्या उसको व्यावहारिक ज्ञान नहीं दे पाते। इसलिए अपने यहाँ कोई भी स्कूल बच्चों को कोर्स से इतर विषयों की पुस्तकें पढ़ने को नहीं कहता। नतीजा यह होता है कि बच्चा अपने विषय की शिक्षा में पारंगत भले हो जाए, लेकिन जीवन के व्यावहारिक ज्ञान से वह सर्वथा अपरिचित रहता है। इसी कारण उत्तर भारतीय बच्चों में कैरियर को लेकर जानकारी का अभाव रहता है और वे भविष्य में वही करना

चाहते हैं, जो उनके परिवार के लोग तय कर देते हैं। यह उनकी बहुत बड़ी कमी है और इसकी वजह है, उनके पास पुस्तकों को पढ़ने का समय नहीं होना।

हर वर्ष दिल्ली, कोलकाता, मुंबई आदि शहरों में पुस्तक मेले आयोजित होते हैं। इनमें भीड़ भी जुटती है, लेकिन क्या इनमें पुस्तकों की आमद होती है? यह लाख टके का सवाल है। यूँ भी कोई आदमी कितनी पुस्तकें खरीदेगा और कितनी पढ़ेगा। भले वह अपने घर पर पुस्तकों की सजावट कर ले, लेकिन शायद ही उनमें से कोई पढ़ी जाती हो। पुस्तकें पढ़े जाने का एक माध्यम पब्लिक लाइब्रेरीज हैं, क्योंकि पुस्तकें वहाँ करीने से लगी होती हैं, कैटलॉग बने होते हैं और जब जिस समय किसी पुस्तक की जरूरत हो, वह वहाँ मिल जाएगी। लेकिन घरों पर यह संभव नहीं है। इसीलिए पश्चिमी देशों में पुस्तकालय एक संस्था की तरह बने हैं। हर म्यूनिस्पैलिटी लाइब्रेरीज पर पूरा ध्यान देती है। वहाँ म्यूनिस्पैलिटी का यह दायित्व होता है कि वह अपने क्षेत्र में कम-से-कम तीन लाइब्रेरी भी स्थापित करे और उसके लिए हर संभव किताब मँगवाए। कोई पुस्तक आप पढ़ना चाहते हैं, तो लाइब्रेरी के प्रबंधक को कहिए, वह उसकी खरीद का इंतजाम करेगा। फिर भले वह पुस्तक कितनी भी अप्राप्य क्यों न हो। अगर वह उपलब्ध नहीं हो पा रही है, तो दक्षिणी अमेरिकी देशों की म्यूनिस्पैलिटीज उनके डिजिटल संस्करण बनवाएगी। ज्ञान का अकेला स्रोत पुस्तकें होती हैं क्योंकि सुनी हुई बात या देखी हुई घटनाएँ विस्मृत हो जाती हैं, किंतु पढ़ी हुई बात दिमाग पर अंकित हो जाती है, इसीलिए तो पुस्तकों का ईजाद हुआ। स्कूली शिक्षा भी तो पुस्तकों पर ही आधारित है। इसीलिए पुस्तक सदैव समीचीन बनी रहेगी। जिस दिन पुस्तकें समाप्त हो गईं, मानव सभ्यता भी नष्ट हो जाएगी। अमेरिका, कनाडा और यूरोप इस बात को समझते हैं। और यही कारण है कि वहाँ मनुष्य के जरूरी कार्यों में लाइब्रेरी जाना भी शामिल है।

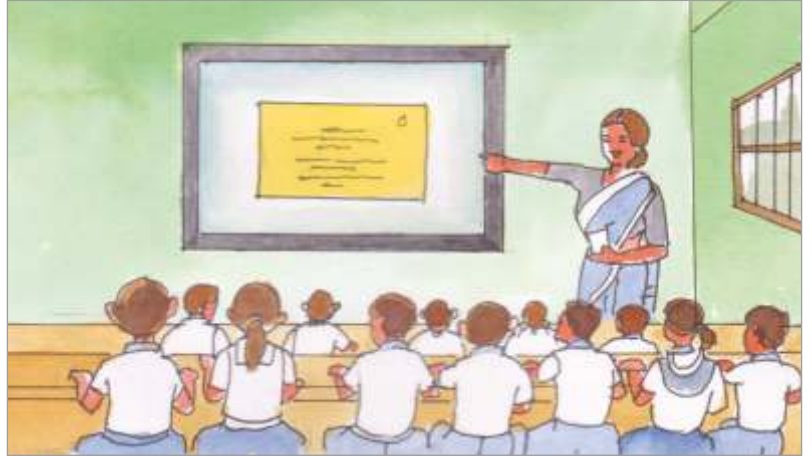
मैंने स्वयं कनाडा के पुस्तकालयों में देखा कि वहाँ पर टोरंटो की लाइब्रेरी तो बहुत विशाल है। कई मंजिलों में बनी इस लाइब्रेरी में दुनिया की हर पुस्तक मौजूद है, यहाँ तक कि संस्कृत की भी। मैंने यहाँ भरत मुनि का नाट्य-शास्त्र देखा। कनाडा और अमेरिका में लाइब्रेरी एक कल्चर का हिस्सा है। पुस्तकें पढ़ने पर जोर है। सामुदायिक और भाषाई लेखकों के समारोह भी लाइब्रेरी हॉल में होते हैं। ब्रैण्टन पब्लिक लाइब्रेरी के हॉल में मैंने हिंदी राइटर्स गिल्ड के कई समारोह में हिस्सा लिया। कई पुस्तकों का लोकार्पण भी यहीं होता है। इस तरह वहाँ लाइब्रेरीज हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। अगर भारत में भी पुस्तकालयों को बचाना है, तो पुस्तकें पढ़ने को प्रेरित करना होगा, प्रोत्साहन देना होगा। बच्चों को बताना होगा कि दुनिया को जानने का सबसे पहला मार्ग है, पुस्तकें पढ़ना। नियमित लाइब्रेरी जाना, क्योंकि ज्ञान पुस्तकों में है।





# शिक्षा के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म

हर घर शिक्षा के स्वप्न को साकार करने के लिए शिक्षा को भी आधुनिक बनाने की आवश्यकता है। वर्तमान में कई डिजिटल प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए भी सुगमता से उपलब्ध हैं, जिन पर पहुँचकर वे विषय संबंधी सामग्री को एकत्र कर सकते हैं। उनकी प्रति को आगामी अध्ययन के लिए सुरक्षित रख सकते हैं और अपनी विषय आधारित समस्याओं का निवारण भी कर सकते हैं। कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ऐसे हैं जिन पर पहुँच कर आप सभी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं और आप भली प्रकार से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि आधुनिक डिजिटल भारत में अब भी कई दुर्गम स्थान हैं जहाँ इंटरनेट को पहुँचाना बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसे में शैक्षणिक टेलीविजन चैनलों के प्रयास प्रशंसनीय हैं जो ऑडियो-वीडियो और कुछ सांकेतिक भाषा के उपयोग से भी ज्ञान गंगा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं। शिक्षा को डिजिटल बनाने की जिम्मेदारी बहुत से



सरकारी व गैर-सरकारी संस्थानों के कंधों पर है। उनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है—

**दीक्षा :** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) की पहल पर वर्ष 2017 में 'दीक्षा' की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य कक्षा एक से 12वीं तक के विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा उपलब्ध करवाना रहा है। वर्तमान में 'दीक्षा' का लाभ स्कूली विद्यार्थी ही नहीं, शिक्षकों के साथ-साथ शोधार्थी भी उठा रहे हैं। इसमें एन.सी.ई.आर.टी., सी.बी.एस.ई., राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान और 22 से अधिक राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के पाठ्यक्रम से संबद्ध शिक्षण व पठन सामग्री उपलब्ध है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए इस डिजिटल मंच पर हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, उर्दू समेत लगभग 36 भारतीय भाषाओं में ई-पाठ्यपुस्तकें, ओडियो-वीडियो, आँकड़े, रचनात्मक गतिविधियाँ, बहुविकल्पीय व विषयनिष्ठ प्रश्न-पत्र, खेल-खेल में सीखने योग्य

गतिविधियों को भी शामिल किया गया है। इसमें दिव्यांग पाठकों की सुविधा के लिए विजुअल्स के माध्यम से विषयों को सांकेतिक भाषा में समझाया गया है। विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों, विद्यालय के प्रशासनिक व अन्य श्रेणियों से संबंधित पाठकों को अन्वेषण के कार्य में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े, इसके लिए यह डिजिटल प्लेटफॉर्म उन्हें सरल व सहज रूप से निर्धारित स्थान पर ले जाता है। यह ऑनलाइन पोर्टल और मोबाइल एप दोनों में पाठकों की सुविधा के लिए उपलब्ध है।

**ईपाठशाला :** ईपाठशाला राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा कक्षा एक से 12वीं तक की प्रकाशित विद्यालयी पुस्तकों का डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जहाँ से सभी विषयों से संबंधित ई-पुस्तकों को अध्यायवार और संपूर्ण पुस्तक को पी.डी.एफ. के रूप में मुफ्त में डाउनलोड करने की सुविधा उपलब्ध है। इसमें पुस्तक व विषयों की प्रश्न-पत्र आधारित सहायक



**मोहन शर्मा**

जन्म : 25 अप्रैल, 1989, दिल्ली।

शिक्षा : पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातक, एम.ए. (हिंदी)।

संप्रति : एन.सी.ई.आर.टी. में कार्यरत।

संपर्क : मोबाइल— 7428007292

ईमेल— mohanjournalist@gmail.com

सामग्री भी मिल जाती है, जिससे अधिक-से-अधिक अभ्यास कर विद्यार्थी विषय पर अपनी पकड़ को और मजबूत बना पाएँ। पोर्टल और मोबाइल एप के रूप में प्रचलित इस डिजिटल मंच की शुरुआत वर्ष 2015 में की गई थी, जिसका अब तक करोड़ों की तादाद में विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षकगण लाभ उठा चुके हैं। विषय के किसी पाठ पर तुरंत पहुँचने के लिए इसमें क्यूआर कोड की सुविधा भी उपलब्ध है। यदि विद्यार्थी मोबाइल फोन या अपने कंप्यूटर की स्टोरेज पर अत्यधिक दबाव के चलते पी.डी.एफ. डाउनलोड करने में असमर्थ हों, तो इसमें फ्लिपबुक के रूप में भी विषयों का सुगमता के साथ अध्ययन किया जा सकता है। अभिभावकों को निर्देशित करते हुए यह प्लेटफॉर्म उन्हें अपने बच्चों के भविष्य को उज्वल करने में भी मदद करता है। इसमें ऑडियो-विजुअल के रूप में भी सहायक सामग्री है, जो विभिन्न माध्यमों से जुटाकर एक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध करवाई गई है।

**स्वयं :** आर्थिक रूप से कमजोर, माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों के लिए भारत सरकार ने स्वयं पोर्टल की सेवा आरंभ की। कक्षा नौ से स्नाकोत्तर स्तर के अकादमिक, व्यावसायिक एवं पेशेवर विषयों में मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने का यह अनूठा मंच है, जहाँ पर देश के किसी भी क्षेत्र के विद्यार्थी सुगमता से अपनी इच्छानुसार विषयों का चयन कर आभासी शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं। इसमें पंजीकरण से लेकर प्रवेश तक की सभी सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं। इसे विकसित करने का मूल उद्देश्य भारत सरकार की शिक्षा नीति के तीन अहम सिद्धांतों को पूर्ण करना है, यथा— शिक्षा-वंचित प्रत्येक विद्यार्थी तक विषय आधारित ज्ञान की पहुँच करना, शिक्षा-क्षेत्र को समतामूलक बनाना तथा सर्वोत्तम शिक्षण अधिगम संसाधन उपलब्ध करवाना। स्वयं के माध्यम से उस गहरी खाई को पाटने का प्रयास किया गया है जिसके चलते ग्रामीण एवं दुर्गम प्रदेशों में रहने वाले छात्र-छात्रा डिजिटल युग से अनभिज्ञ थे और ज्ञान ग्रहण करने की मुख्यधारा में शामिल नहीं थे। इस ई-मंच पर किसी भी समय व किसी भी स्थान पर रहते हुए पहुँचा जा सकता है। इसमें देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा विकसित पाठ्यक्रम शामिल है, जो ऑडियो-वीडियो, मुद्रित प्रति आदि के रूप में पोर्टल पर उपलब्ध है। स्वयं द्वारा आयोजित पाठ्यक्रम चार भागों में विभाजित है। एक भाग में देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों, शोधार्थियों, दर्शनार्थियों आदि के वीडियो व्याख्यान हैं। दूसरे भाग में विशेष प्रयासों से तैयार की गई पठन-सामग्री का समावेश है, जिसे विद्यार्थी ऑनलाइन या मुद्रित प्रति लेकर भी पढ़ सकते हैं और भविष्य में अध्ययन या पुनः अवलोकन के लिए भी उन्हें सुरक्षित रख सकते हैं।

भली प्रकार अध्ययन के उपरांत स्व-मूल्यांकन करने हेतु इस पोर्टल पर परीक्षण एवं प्रश्नोत्तरी सामग्री पर्याप्त मात्रा में है, जिसका लाभ उठाकर परीक्षा में सफलता सुनिश्चित की जा सकती है। एक अन्य भाग में अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों के मन में उठने वाले प्रश्नों एवं संदेह आदि को दूर करने के लिए ऑनलाइन मंच का प्रावधान है,

जहाँ विषय आधारित शंकाओं से मुक्ति मिलती है। इस पोर्टल पर एन.आई.ओ.एस. एवं एन.सी.ई.आर.टी. ऑनलाइन विद्यालयी पाठ्यक्रम की विस्तृत शृंखला का संचालन कर रहे हैं। पाठ्यक्रम से संबंधित पाठ मॉड्यूल, शैक्षणिक वीडियो, मूल्यांकन प्रश्नोत्तरी और स्व-शिक्षा ग्रहण करने हेतु पर्याप्त संसाधन स्वयं पोर्टल पर सुगमता से उपलब्ध हैं।

**स्वयं प्रभा :** दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्र जो आधुनिक युग में भी इंटरनेट की पहुँच से काफी दूर हैं या जहाँ तक इंटरनेट सेवा उपलब्ध करवाना चुनौती है, वहाँ के विद्यार्थियों को समग्र एवं एकीकृत रूप से शिक्षित करने के लिए सीधे घरों तक उपग्रह टेलीविजन प्रसारणों, जिन्हें 'डॉयरेक्ट टू होम' (डी.टी.एच.) सेवा भी कहा जाता है, की सहायता ली जा रही है। स्वयं पोर्टल की परंपरा पर अग्रसर स्वयं प्रभा के माध्यम से 30 से अधिक शैक्षणिक टेलीविजन चैनलों का लाभ उठाया जा सकता है। इसके अंतर्गत जिन विषयों पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण होता है, उन्हें विकसित करने के लिए आई.आई.टी., यू.जी.सी., इन्सू आदि बड़े संस्थानों की सहायता ली जाती है।

स्वयं प्रभा पर प्रतिदिन चार घंटे के शैक्षणिक कार्यक्रमों का पाँच बार प्रसारण होता है, जिन्हें विद्यार्थी सुविधानुसार देख सकते हैं। प्रसारित कार्यक्रमों में कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रदर्शन कला (परफॉर्मिंग आर्ट्स), सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी, अभियांत्रिकी, तकनीकी, विधि, औषधि, कृषि आदि विषयों से संबंधित पाठ्यक्रम आधारित सामग्री को स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विकसित करने की पहल की गई है।

**ई-पीजी पाठशाला :** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि स्नातकोत्तर विषयों के अध्ययन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए यह वेब पोर्टल है। इस पहल के तहत विद्यार्थियों को विभिन्न मॉड्यूल और वीडियो के माध्यम से विषय को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें सामग्री को सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय व शोध संस्थानों के प्राध्यापकों, शोधार्थियों आदि द्वारा विकसित किया गया है। इस वेब पोर्टल में कला, सामाजिक विज्ञान, ललित कला, प्राकृतिक, गणित, विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि से संबंधित विषयों से जुड़ी अध्ययन सामग्री है। विषयों में प्रौढ़ शिक्षा, कृषि, वनस्पति विज्ञान, मानव विज्ञान, वास्तुकला, जीव रसायन, वाणिज्य, खाद्य और पोषण, भारतीय संस्कृति, प्रबंधन, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, पत्रकारिता, सामाजिक कार्य, राजनीति विज्ञान तो शामिल हैं ही, साथ में विदेशी भाषाओं में चीनी, रूसी, स्पेनिश से जुड़ी अध्ययन सामग्री की उपलब्धता भी है।

वर्चुअल लैब्स विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अभियांत्रिकी के ऐसे संस्थानों जहाँ पर बेहतर प्रयोगशाला सुविधाओं व उपकरणों का अभाव है वहाँ के विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाने के लिए वर्चुअल लैब्स की शुरुआत की गई। यह पोर्टल है, इसमें दसवीं कक्षा के छात्रों को विज्ञान और अभियांत्रिकी की ओर रुख करने के प्रयास संभव हुए। इसके अंतर्गत 700 से अधिक वेब सक्षम प्रयोगों वाली 100 से ऊपर वर्चुअल लैब की पहुँच को दुर्गम स्थानों तक आसान बनाया गया।



# सर्वसुलभ शिक्षा

## राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

भारत एक विशाल आबादी वाला देश है। इसकी विशाल आबादी को शिक्षा प्रदान करना हमेशा से ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। कभी इसकी भौगोलिक संरचना बाधा का कारण बनी तो कभी इसकी सामाजिक संरचना। सरकार के अथक प्रयासों के बाद आज भी देश का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा से वंचित है, साथ-साथ शिक्षा के बाजारीकरण के कारण सामान्य और गरीब वर्ग के लिए अभी भी अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान करना एक महँगा सौदा है। देश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में स्कूलों तक पहुँच को सुनिश्चित करने हेतु, मुक्त विद्यालयी शिक्षण महत्वपूर्ण और आवश्यक संसाधन के रूप में उभरा है।

वर्ष 1979 में 'केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' द्वारा एक परियोजना के रूप में मुक्त विद्यालय की संकल्पना को अभ्यास में लाने का प्रयास किया गया। मुक्त विद्यालयी शिक्षा का सुझाव 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा दिया गया, जिसमें यह कहा गया



### डॉ. सुधीर पाण्डेय

जन्म : 06 नवंबर, 1989, लखनऊ।

शिक्षा : पी-एच.डी. (हिंदी साहित्य)।

प्रकाशन : विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कई शोध-लेख प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल- 9369822444

ईमेल- dr.sudheerpandey@gmail.com



कि मुक्त विद्यालयी शिक्षा को एक स्वतंत्र प्रणाली के रूप में विकसित किया जाए और इसमें माध्यमिक स्तर पर चरणबद्ध रूप से मुक्त शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान की जाएँ, जिनका अपना पाठ्यक्रम हो तथा जिनकी अपनी परीक्षा प्रणाली और प्रमाणन पद्धति हो। इन सभी उद्देश्यों के पूर्ति हेतु भारत सरकार द्वारा नवंबर 1989 में 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय' की स्थापना की गई। जुलाई 2002 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा इसका नाम बदलकर 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान' (National Institute of Open Schooling) कर दिया गया।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) भारत के मुक्त विद्यालयों की शिक्षा परिषद है। यह छात्रों को मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करता है। इसका एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों, नवसाक्षरों, बीच में स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों को स्तरीकृत पाठ्यक्रमा पर

आधारित सतत शिक्षा प्रदान करना है। गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा और कौशल विकास हेतु सुविधापूर्ण, सार्वभौमिक, चिरस्थायी और समावेशी शिक्षा प्रदान करना इसका लक्ष्य है। यह स्वयंसेवी संस्थाओं तथा जिला साक्षरता समितियों आदि को संसाधनों की सहायता प्रदान कर अपने कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करता है। एनआईओएस अपने पाँच विभागों, 23 क्षेत्रीय केंद्रों, दो उप क्षेत्रीय केंद्रों, दो एनआईओएस प्रकोष्ठों और देश और विदेश में फैले 7400 अध्ययन केंद्रों, एआई/एवीआई संस्थाओं द्वारा कार्य करता है। एनआईओएस 41 लाख 30 हजार संचयी नामांकन (पिछले पाँच वर्षों के दौरान) के साथ विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षा प्रणाली है।

इसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रम/कार्यक्रम शामिल हैं—

1. चौदह वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बच्चों, किशोरों और प्रौढ़ों के लिए मुक्त

बेसिक शिक्षा (ओबीई) कार्यक्रम; जिसके ए, बी और सी स्तर औपचारिक स्कूली शिक्षा के क्रमशः तीसरी, पाँचवीं और आठवीं कक्षा के समकक्ष हैं।

2. माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम
3. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम
4. व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम/कार्यक्रम
5. जीवन समृद्धि कार्यक्रम

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर विषयों, पाठ्यक्रमों के चयन, पढ़ाई की गति, के.मा.शि.बो., स्कूल शिक्षा के कुछ अन्य बोर्डों और राज्य मुक्त विद्यालयों से क्रेडिटों के स्थानांतरण की सुविधाएँ प्रदान करता है। शिक्षार्थी को पाँच वर्ष की अवधि में अधिकतम नौ बार परीक्षा देने की सुविधा प्रदान की गई है। जब तक शिक्षार्थी प्रमाणपत्र के लिए आवश्यक विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो जाता, तब तक उसके क्रेडिट एकत्र होते रहते हैं। अध्ययन की रणनीतियों में मुद्रित स्व-अध्ययन सामग्री द्वारा पढ़ाई, श्रव्य और दृश्य कार्यक्रम, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम और अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन कार्य में भाग लेना शामिल है। अर्ध-वार्षिक पत्रिका 'मुक्त शिक्षा' द्वारा भी शिक्षार्थियों की ज्ञान वृद्धि की जाती है। इसके द्वारा अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू माध्यमों में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर 'जब चाहो तब परीक्षा प्रणाली' (ओइस) चलाई जा रही है। एनआईओएस आठ माध्यमों (हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी, तेलुगू, गुजराती, मलयालम और ओडिया) में 28 विषयों में माध्यमिक परीक्षाएँ और हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, उर्दू और ओडिया माध्यमों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 28 विषयों में शिक्षा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त एनआईओएस में 20 व्यावसायिक विषयों को माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विषयों के संयोजन में चलाने का प्रावधान भी है।

युवा उद्यमी राष्ट्रीय संपत्ति हैं, इस तथ्य को समझते हुए एनआईओएस के शिक्षार्थी अनुकूल व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थियों को श्रेष्ठतम संभावनाएँ प्रदान करते हैं। यह विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, व्यवसाय और वाणिज्य, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और पैरामेडिकल, गृहविज्ञान और आतिथ्य प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण, कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी क्षेत्र, जीवन समृद्धि कार्यक्रम और सामान्य सेवाओं के क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम चलाता है। ज्ञान, कौशल और उद्यमशीलता की विशिष्टताएँ, व्यावसायिक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या अनिवार्य तत्व हैं, जिसमें संबंधित औद्योगिक इकाइयों में सेवाकालीन प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है।

मुक्त व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की उन्नति और उसे सशक्त मंच प्रदान करने के लिए एनआईओएस विभिन्न शैक्षिक विकास क्षेत्रों

जैसे उद्योगों, दवाओं, आईटी आदि के प्रमुख संगठनों के साथ सहयोग का प्रयास कर रहा है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना (एनसीएफ-2005) के सभी प्रावधानों के अंतर्गत एनआईओएस ने एक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया है जिसका शीर्षक है 'व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण, ज्ञान ग्रहण और कौशल विकास पर विशेष महत्व के साथ पाठ्यचर्या प्रावधानों की एक रूपरेखा है, मुक्त और दूरस्थ शिक्षा द्वारा एक प्रयास'। यह आशा की जाती है कि यह दस्तावेज मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए एक सुविचारित कार्रवाई कार्यक्रम तैयार करने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। एनआईओएस कार्यक्रम प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों, शारीरिक, मानसिक और दृष्टि संबंधी अक्षमताओं वाले शिक्षार्थियों और समाज के सुविधावंचित वर्गों के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं पर भी विशेष ध्यान देता है।

नई शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अनेक सुधारों की अनुशंसा की गई है। इसमें स्थिरता, पहुँच, समानता, उच्च गुणवत्ता आदि महत्वपूर्ण पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया गया है। यह नीति पारदर्शिता, जवाबदेही, सामुदायिक भागीदारी, सामाजिक एकीकरण, अनुसंधान एवं नवाचार, सोच और विश्लेषणात्मक क्षमता, सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन सुधार और विकास की ओर भी इंगित करती है। इसकी समग्र दृष्टि शासन और विनियमन में संपूर्ण सुधार के साथ स्कूली शिक्षा, शिक्षक की तैयारी, कौशल विकास और सक्षमता निर्माण के बीच तालमेल बिठाने का प्रयास करती है। एनआईओएस इन समग्र बातों को आत्मसात करने के साथ-साथ शिक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता तथा मूल्य आधारित शिक्षा को साथ लेकर चल रहा है।

भारत विश्व स्तर पर युवा शक्ति में अग्रणी देश है। यहाँ की अधिकांश आबादी युवा है, अतः यहाँ के शिक्षक और छात्र कुशल, मूल्य उन्मुख और राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य के प्रति गंभीर रूप से समर्पित होने चाहिए। ज्ञान युक्त समाज के निर्माण के लिए छात्रों को आत्मनिर्भर और प्रगतिशील बनाना भी संस्थान का प्रमुख दायित्व है। समाज की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महत्वपूर्ण है। इसके साथ-साथ मूल्य आधारित शिक्षा समाज को मानवीय गरिमा और सामाजिक सह अस्तित्व की ओर ले जा सकती है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एनआईओएस का मुख्य लक्ष्य विद्यालयी शिक्षा तथा व्यावसायिक कौशल उन्मुख पाठ्यक्रम में मुक्त और दूरस्थ माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देना, नए विचारों को लाना तथा दूरस्थ शिक्षा हेतु एक उपयुक्त माहौल तैयार करना है। अतः ऐसे संस्थान देश में शिक्षा के नए आयामों की कहानी लिख रहे हैं। आधुनिक तथा उन्नत शिक्षा प्रणाली वंचितों के लिए, रूढ़िगत शिक्षा प्रणाली के समानांतर शिक्षा प्राप्त करने का सर्वसुलभ साधन बनकर उभर रहा है।





# साहित्य का ऑडियो संसार

नई तकनीकों और संचार क्रांति से पठनीयता को एक नया आयाम मिला है। ऑडियो प्लेटफॉर्म ने आज अनायास ही साहित्य की श्रुति परंपरा को पुनःस्थापित कर दिया है। पॉडकास्टर आधुनिक युग के कथावाचक हैं। हिंदी पॉडकास्टिंग की दुनिया का एक लोकप्रिय नाम है—समीर गोस्वामी। समीर जी ने अपनी विशिष्ट भावप्रवण शैली और गहरी आवाज में सैकड़ों उत्कृष्ट कहानियों और बहुत-से उपन्यासों का वाचन किया है। वे अपनी वेबसाइट 'कहानीसुनो डॉट कॉम' और यूट्यूब चैनल के माध्यम से साहित्य सेवा कर रहे हैं। प्रस्तुत आलेख मुख्यतः समीर जी से हुई लंबी बातचीत पर आधारित है।

आधुनिक तकनीक और विशेषकर इंटरनेट के आगमन से एक नई पुस्तक क्रांति हुई है और साथ ही एक नई पुस्तक संस्कृति भी पल्लवित हो रही है। मुद्रण कला के विकास से पहले सदियों तक श्रुति परंपरा ही साहित्य के संचरण का माध्यम रही। हस्तलिखित पुस्तकें जनसुलभ नहीं थीं। मुद्रण कला के विकास से दुनिया में पहली पुस्तक क्रांति हुई। पुस्तकों की मात्रा और गुणवत्ता में बहुत सुधार हुआ। पुस्तकें आम लोगों तक पहुँचने लगीं, किंतु अभी भी यह शिक्षित, साक्षर और समर्थ लोगों के लिए ही उपयोगी थीं।



**रमेश कुमार सिंह**

**जन्म :** 01 जनवरी, 1969

**शिक्षा :** बी.ए., बी.टी.सी.।

**संप्रति :** अध्यापन।

**प्रकाशन :** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी से वार्ताएँ, बाल रचनाएँ, रेडियो नाटक, आकाशवाणी के लिए विभिन्न साक्षात्कार, भोजपुरी सिनेमा के बारे में साक्षात्कार प्रकाशित।

**सम्मान :** कहानियों के लिए हिंदी अकादमी से पुरस्कृत।

**संपर्क :** मोबाइल— 9810518717

आज इंटरनेट के माध्यम से ई-पुस्तकें और ऑडियो पुस्तकें आ गई हैं। अब एक छोटे-से कंप्यूटर में एक बड़ी लाइब्रेरी के बराबर डिजिटल पुस्तकें समाहित हो सकती हैं। ये कहीं भी, कभी भी तकनीक संपन्न पाठकों और श्रोताओं को उपलब्ध हैं। मुद्रण क्रांति के बाद यह एक नया दौर है, जब किताबें बहुत सस्ती तथा सर्वसुलभ हो गई हैं।

ऑडियो बुक्स को साहित्य की श्रुति परंपरा का नया रूप कहा जा सकता है। आधुनिक युग में साहित्य को सुनने के तकनीकी माध्यम के रूप में सबसे पहले रेडियो आया। टेलीविजन पर भी साहित्य का सीमित प्रसारण होता रहा है। डिजिटल क्रांति के कारण आज ऑडियो साहित्य के सृजन और प्रसारण के प्लेटफॉर्म के रूप में

अनेकानेक एप्स और चैनल आ गए हैं। इनसे पुस्तकों का व्यापक प्रचार-प्रसार संभव हो गया है। सर्वसुलभ और सस्ते होने के कारण ये प्लेटफॉर्म बहुत तेजी से लोकप्रिय हुए हैं।

ऑडियो फॉर्मेट में साहित्य की लोकप्रियता के अनेक कारण हैं। सुनना सीखने का एक प्राथमिक साधन है। श्रवण इंद्रिय अन्य इंद्रियों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार, सुनकर प्राप्त सूचनाओं को मस्तिष्क लगभग दुगुनी तेजी से प्रोसेस करता है। सुनना, पढ़ने की तुलना में अधिक सहूलियत का काम है। सुनने के समय हमारे बाकी अंग अन्य कार्यों के लिए स्वतंत्र होते हैं। इस कारण बहुत से लोग साहित्य को पढ़ने के बजाय सुनना अधिक पसंद करते हैं।

सुनना संवाद का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह पुरातन काल से हमारे संस्कार का हिस्सा रहा है। हम सुन-सुनकर ही बड़े होते हैं। पढ़ना हम बाद में सीखते हैं। किसी भी समय हम पढ़ने की अपेक्षा सुनने में अधिक समय व्यतीत करते हैं।

“यूट्यूब एक वीडियो प्लेटफॉर्म है। इस पर हेडलाइन और कवर फोटो के साथ ऑडियो सामग्री भी अपलोड की जाती है। शुद्ध ऑडियो प्लेटफॉर्म के रूप में पॉडकास्ट अधिक लोकप्रिय हैं। स्पोटिफॉय, कुकू एफएम, जियोसावन, पॉकेट एफएम, गाना, साउंडक्लाउड, गूगल पॉडकास्ट्स, एप्पल पॉडकास्ट्स, ऑडिबल आदि कुछ लोकप्रिय पॉडकास्टिंग प्लेटफॉर्म हैं।”

डिजिटल फॉर्मेट में साहित्य को नई पीढ़ी खूब पसंद कर रही है। उस पीढ़ी के लोगों ने भी इसका स्वागत किया है, जिन्होंने साहित्य को मुद्रित रूप में ग्रहण किया है और जिन्हें मुद्रित किताबों से एक 'फील' आता है। कुछ लोग डिजिटल पुस्तकों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण मुद्रित साहित्य के भविष्य को खतरे में मान रहे हैं, किंतु निकट भविष्य में इसकी कोई संभावना नहीं है। इंटरनेट के प्लेटफॉर्म लोकतांत्रिक हैं, किंतु अभी भी दुनिया की एक बड़ी आबादी डिजिटल तकनीकी से वंचित अथवा इससे अपरिचित है।

ऑडियो बुक्स ऐसे लोगों के लिए वरदान की तरह आई हैं, जो जीवन की आपाधापी में चाहकर भी पुस्तकें नहीं पढ़ पाते या ऐसे लोग जो निरक्षर हैं अथवा नेत्रहीनता जैसे शारीरिक कारणों से पढ़ नहीं सकते। वे लोग भी ऐसी पुस्तकों का रसास्वादन कर पाते हैं, जो किसी भाषा विशेष को समझ तो सकते हैं, किंतु उसकी लिपि नहीं पढ़ सकते। यात्रा करते हुए और घर के कामकाज करते हुए भी ऑडियो साहित्य खूब सुना जाता है।

कुछ लोगों को छपी हुई किताबों में संदर्भ को ढूँढ़ना आसान लगता है, तो कुछ को डिजिटल पुस्तकों में यह बायें हाथ का खेल लगता है। मुद्रित साहित्य में पाठक रचना के भाव को अपनी कल्पना और समझ के हिसाब से ग्रहण करता है। ऑडियो फॉर्मेट में नैरेटर द्वारा इस भाव को आरोपित करने की संभावना रहती है, जिससे कुछ लोगों को ऐतराज हो सकता है। हालाँकि ऑडियो बुक्स में नैरेटर की भूमिका रचना और पाठक के बीच में एक संवाहक, एक सेतु, एक कड़ी या फेसिलिटेटर तक सीमित रहनी चाहिए, किंतु ये सीमाएँ टूटती हैं और एक अच्छा स्टोरी टेलर कुछ हद तक रचना को रीक्रिएट कर देता है। नैरेटर खोजबीन कर कई दुर्लभ कृतियों को भी पुस्तक प्रेमियों तक पहुँचाते हैं।

यूट्यूब एक वीडियो प्लेटफॉर्म है। इस पर हेडलाइन और कवर फोटो के साथ ऑडियो सामग्री भी अपलोड की जाती है। शुद्ध ऑडियो प्लेटफॉर्म के रूप में पॉडकास्ट अधिक लोकप्रिय हैं। स्पोटिफॉय, कुकू एफएम, जियोसावन, पॉकेट एफएम, गाना,

साउंडक्लाउड, गूगल पॉडकास्ट्स, एप्पल पॉडकास्ट्स, ऑडिबल आदि कुछ लोकप्रिय पॉडकास्टिंग प्लेटफॉर्म हैं। अधिकतर होस्टिंग कंपनियों में पॉडकास्ट रिकॉर्ड और एडिट भी किए जा सकते हैं।

ऑडियो फॉर्मेट के साहित्य में अभी तक गद्य साहित्य ही अधिक है, गद्य में भी कहानियाँ और उपन्यास अधिक हैं। इसकी वजह यह है कि आधुनिक साहित्य में गद्य की विधाएँ अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय हैं। भागम-भाग भरी जिंदगी में श्रोताओं को कहानी और उपन्यास सरल और सुबोध लगते हैं। कविता को समझने में थोड़ी माथापच्ची करनी पड़ सकती है। इस माध्यम में आलोचना, नाटक और निबंध भी नहीं के बराबर हैं। आलोचना और निबंध शुष्क विधा माने जाते हैं। दूसरी ओर, नाटक एकल नैरेशन में दुर्बोध हो जाते हैं।

रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा जैसे संचार के साधन भी साहित्य की प्रस्तुति करते रहे हैं, किंतु पहुँच की दृष्टि से डिजिटल ऑडियो प्लेटफॉर्म को इन पर बढ़त हासिल हो गई है। रेडियो और टीवी के कार्यक्रमों का एक नियत समय होता है, जबकि ऑडियो साहित्य को श्रोता अपने समय और सुविधा के अनुसार कभी भी सुन सकता है।

इंटरनेट एक अथाह सागर है और साहित्य भी। इंटरनेट के माध्यम से साहित्य के प्रसार की असीम संभावनाएँ हैं। पॉडकास्ट सामान्यतः पुरानी पीढ़ी के लेखकों का साहित्य चुनते हैं, जो कॉपीराइट फ्री होता है। अगर लेखक के देहावसान के साठ साल पूरे नहीं हुए हों तो लेखक के परिजनों या प्रकाशक के पास रचना का कॉपीराइट होता है। पुस्तक के अनुवादक के पास भी अनुवाद का कॉपीराइट होता है। नियमानुसार उनसे भी अनुमति लेनी पड़ती है। डिजिटल दुनिया में कॉपीराइट के उल्लंघन के मामले बहुत होते हैं, किंतु प्रतिष्ठित पॉडकास्ट और होस्टिंग प्लेटफॉर्म इस कानून का सम्मान करते हैं।

पॉडकास्ट की कई होस्टिंग कंपनियाँ वर्तमान लेखकों से उनकी रचना का कॉपीराइट ले लेती हैं और उन रचनाओं को अपने नैरेटर से रिकॉर्ड कराकर अपलोड करती हैं।

डिजिटल दुनिया एक मुक्त प्लेटफॉर्म है, यहाँ कोई भी अपनी पसंद के विषयवस्तु लेकर आ सकता है। इससे प्रसिद्धि मिलती है और कमाई भी होती है। इसके ग्लैमर से आकर्षित होकर कई लोग और खासकर युवा इसे अपना करियर बनाना चाहते हैं। अनुभवी पॉडकास्ट सुझाव देते हैं कि इस क्षेत्र में कामयाब होने के लिए बहुत मेहनत और धैर्य की आवश्यकता होती है। साथ ही, अपने विषय की गहरी समझ और उससे लगाव होना बहुत जरूरी है।

वैज्ञानिक प्रगति भविष्य में ऑडियो साहित्य को क्या नया रूप देगी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। कुछ दशक पहले ऑडियो फॉर्मेट में उपलब्ध आज की पुस्तकों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, किंतु आज ऐसे साहित्य की लोकप्रियता और उपयोगिता स्वयंसिद्ध और निर्विवाद है।





# डिजिटल पुस्तकालय से लाभ

पुस्तकालय आधुनिक सामाजिक संगठनों तथा राष्ट्र के जीवन में महती भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं। आधुनिक पुस्तकालय केवल पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संग्रह स्थल ही नहीं हैं, बल्कि यह ज्ञान और सूचना का भी केंद्र है। यह सामाजिक जीवन में एक उत्प्रेरक की भूमिका अदा करता है, क्योंकि यह जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है एवं सूचना के तीव्र प्रवाह के मौजूदा युग में सूचना के विस्तार में सहायता करता है। 'डिजिटल पुस्तकालय' की उत्पत्ति 1970 के प्रारंभिक चरण में हुई थी। डिजिटल पुस्तकालय प्रमुखतः इलेक्ट्रॉनिक फॉर्मेट में विषयवस्तु को संगृहीत करते हैं तथा उस विषयवस्तु की प्रचुर मात्रा को प्रभावी ढंग से उपयोगी बनाते हैं। डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से विश्व के किसी भी भौगोलिक क्षेत्र से इलेक्ट्रॉनिक



रूप में बड़ी सुगमतापूर्वक शीघ्रतम सूचना प्राप्त की जा सकती है एवं यह एक ऐसा सामान्य स्थल है, जहाँ किसी भी शैक्षणिक संस्थान के प्रयोक्ता, शोधार्थी तथा प्राध्यापक अपने स्वयं के कार्यस्थल पर वांछित सूचना सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

डिजिटल पुस्तकालय, ऐसा पुस्तकालय होता है जहाँ पर्याप्त मात्रा में यांत्रिक पाठ्य सामग्री एवं डेटाबेस जैसी सूचना सामग्री उपलब्ध होती है। डिजिटल पुस्तकालय एक विश्वस्तरीय आभासी पुस्तकालय के समान होता है, जिसमें बहुसंख्यक पुस्तकालय एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। यह इंटरनेट पुस्तकालय नेटवर्क सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु व मल्टीमीडिया प्रणालियों से युक्त पुस्तकालय है। डिजिटल पुस्तकालय बहुत से कंप्यूटरों के समूह में सुरक्षित सूचनाओं का भंडार है जिसका उपयोग डिजिटल रूप में विश्व के किसी भी स्थान पर बैठकर एक ही संग्रह भंडार के रूप में कंप्यूटर पर किया जा सकता है। लेक्स के

अनुसार, "डिजिटल पुस्तकालय व्यवस्थित एवं अंकीकृत सूचनाओं का संग्रह है।" लेन विटेन के अनुसार, "डिजिटल वस्तुओं का संग्रह, जिसमें टेक्स्ट, वीडियो, ऑडियो आदि शामिल है तथा उनका उपयोग पुनर्प्राप्ति तथा चयन, व्यवस्थापन तथा अनुरक्षण शामिल है।"

अमेरिका के इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर टेक्नोलॉजी एवं एप्लीकेशन ग्रुप ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि डिजिटल पुस्तकालय काफी बड़े ज्ञान क्षेत्रों से क्रमबद्ध रूप में सूचना एवं ज्ञान उपलब्ध कराने वाली प्रणाली से युक्त है। उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि डिजिटल पुस्तकालय डिजिटल वस्तुओं का जिसमें टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो आदि शामिल हैं, का संग्रह है एवं इसमें संपूर्ण संग्रह पूरे नेटवर्क में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वैश्विक रूप में उपलब्ध होता है। इसका उपयोग इंटरनेट या इंटरनेट पर कर सकते हैं। डिजिटल पुस्तकालय के मुख्य उद्देश्य



**संजय गोस्वामी**

**कार्यक्षेत्र :** हिंदी विज्ञान के क्षेत्र में 500 से अधिक लेख विभिन्न विज्ञान तथा हिंदी पत्रिकाओं में प्रकाशित।

**पुरस्कार :** भारत गौरव 2011, डॉ. गोरख प्रसाद विज्ञान पुरस्कार, 2009, विज्ञान परिषद शताब्दी पुरस्कार 2013, डॉ. सी.वी. रमन विज्ञान संचार पुरस्कार, 2015 जैसे कई सम्मान।

**संप्रति :** वैज्ञानिक पत्रिका के प्रबंधक व 'ग्रामीण विकास संदेश' के सह संपादक, तथा विज्ञान गंगा पत्रिका, (बीएचयू), सलाहकार बोर्ड के सदस्य।

**संपर्क :** मो. — 9869368950

ईमेल—sg234500@gmail.com

निम्नलिखित हैं— डिजिटल सूचना को संगृहीत, संचित, व्यवस्थित तथा पुनः प्राप्त करना। कार्यों के दोहराव को रोकना। संरक्षण तथा स्थान के बचत के लिए प्रलेखों को डिजिटलीकृत करना। घर, कार्यालय तथा पुस्तकालय रहित स्थल पर विषयवस्तु को देख पाने

“ जहाँ पहले लोगों को किताबें पढ़ने के लिए लाइब्रेरी जाना पड़ता था, वहीं अब ऑनलाइन लाइब्रेरी आ चुकी है। आप घर बैठे ही ऑनलाइन लाइब्रेरी के माध्यम से अपनी पसंदीदा किताबें और अखबार पढ़ सकते हैं। यह सब डिजिटल लाइब्रेरी के कारण संभव हो पाया है। ऑनलाइन लाइब्रेरी के द्वारा आप सिर्फ किताबें ही नहीं पढ़ सकते हैं, बल्कि आप किताबों को खरीद भी सकते हैं अथवा किताबों को पीडीएफ फॉर्मेट में डाउनलोड भी कर सकते हैं। ”

की क्षमता रखना। नेटवर्किंग तथा संसाधनों को साझा करने संबंधी सुविधा उपलब्ध कराना। ग्रंथालय संबंधी कार्यों में होने वाले व्यय को कम करना। उपयोक्ताओं की आवश्यकता को अल्प समय में पूर्ण करना। पुस्तकालयों के बीच आपसी सहयोग को बढ़ावा देना। आजीवन अधिगम संबंधी अवसरों में योगदान देना।

पुस्तकालयों के पास प्रचार-प्रसार तथा साथ-ही-साथ सूचना के संग्रह हेतु एक प्रभावी सहायता तंत्र होना चाहिए। पुस्तकालयों को आज के शिक्षित समाज को डिजिटल आधारित समाज में रूपांतरित करने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना चाहिए। इसके लिए 21वीं सदी के पुस्तकालयों और शैक्षिक व्यवस्थाओं को ई-पुस्तकालय तथा सूचना केंद्रों में हो रहे विकास का लाभ लेना चाहिए और प्रिंट मीडिया, ग्रंथों, पत्रिकाओं तथा साहित्य के अन्य संबद्ध क्षेत्रों में उपलब्ध बौद्धिक संपदा एक ऐसा मुख्य कार्य है जिस पर पुस्तकालयों तथा सूचना व्यवस्थाओं द्वारा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

### डिजिटल पुस्तकालय की सेवाएँ

आज के इस डिजिटल जमाने में अधिकतर लोग इंटरनेट से जुड़ चुके हैं और इंटरनेट आज के समय में ज्ञान वृद्धि का एक बहुत ही बढ़िया जरिया बनकर के सामने आ रहा है। जहाँ पहले लोगों को किताबें पढ़ने के लिए लाइब्रेरी जाना पड़ता था, वहीं अब ऑनलाइन लाइब्रेरी आ चुकी है। आप घर बैठे ही ऑनलाइन लाइब्रेरी के माध्यम से अपनी पसंदीदा किताबें और अखबार पढ़ सकते हैं। यह सब डिजिटल लाइब्रेरी के कारण संभव हो पाया है। ऑनलाइन लाइब्रेरी के द्वारा आप सिर्फ किताबें ही नहीं पढ़ सकते हैं, बल्कि आप किताबों को खरीद भी सकते हैं अथवा किताबों को पीडीएफ फॉर्मेट में डाउनलोड भी कर सकते हैं। ऑनलाइन लाइब्रेरी में आपको हजारों किताबें बिलकुल मुफ्त में पढ़ने के लिए मिलती हैं। इसके लिए न तो कहीं पर आने की आवश्यकता होती है, न ही कहीं पर जाने की आवश्यकता होती है। बाजार में मिलने वाली कई पुस्तकें अब हमें खरीदने की

आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब ऑनलाइन लाइब्रेरी के जरिए हम उन सभी पुस्तकों को घर बैठे ही पढ़ सकते हैं। इसके लिए हम इंटरनेट पर मौजूद अलग-अलग प्रकार की वेबसाइट का इस्तेमाल कर सकते हैं। कुछ वेबसाइट पर हम बिलकुल मुफ्त में किताबों को पढ़ सकते हैं तो कुछ वेबसाइट पर किताबों को पढ़ने के लिए हमें मामूली-सी फीस अदा करनी पड़ती है। जैसे-जैसे इंटरनेट की पहुँच लोगों तक होती जा रही है, उसे देखते हुए आने वाले भविष्य में सभी किताबें ऑनलाइन लाइब्रेरी में आ जाएँगी ताकि व्यक्ति कहीं पर भी अपनी मनपसंद किताबों को पढ़ सके। वर्तमान समय में डिजिटल पुस्तकालय निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं—प्रलेखों की आपूर्ति एवं वितरण में साझा सूचीकरण। पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र की ऑनलाइन तालिका। इलेक्ट्रॉनिक मेल। रेफरल सेवा। सामयिक जागरूकता सेवा। अंतर ग्रंथालय ऋण सेवा, फाइल ट्रांसफर, प्रोटोकॉल, चयनात्मक प्रसार सेवा। वर्ड वाइड वेब ब्राउजिंग। स्वचालित वेब सर्च। श्रव्य एवं वीडियो संचार।

### डिजिटल पुस्तकालयों के क्षेत्र में चुनौतियाँ

वर्तमान परिवेश में भारतीय पुस्तकालयों में प्रभावी कार्यान्वयन हेतु डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किए जाने के लिए निम्नलिखित चुनौतियों एवं समस्याओं को अवश्य पूर्ण किया जाना चाहिए—

1. कंप्यूटर प्रणाली स्थापना हेतु पर्याप्त धन की आवश्यकता।
2. बदलते परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए श्रम शक्ति अभिप्रेरण।
3. डिजिटल नवाचारों के अधिकतम उपयोग हेतु पुस्तकालय से जुड़े व्यावसायिकों तथा अंतिम प्रयोक्ताओं को प्रशिक्षण तथा उनके विकास संबंधी अवसरों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा उन्हें पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।
4. डिजिटल तथा कागजी विषयवस्तु दोनों तक समन्वित पहुँच।
5. एनालॉग सामग्री के डिजिटलीकरण हेतु उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास। पुस्तकालयों के साथ नेटवर्किंग की सुविधा तथा उनके बीच आपसी सहयोग तथा डेटाबेस आदि। अंतिम उपयोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए डिजिटल विषयवस्तु में परिवर्तन करने की अधिक प्रभावी तथा कम लागत की सुविधा प्रदान करना। डिजिटल पुस्तकालयों के सृजन में एक बड़ा मुद्दा डिजिटल संसाधनों के निर्माण का होगा।
6. डिजिटल सूचना का संग्रह करने हेतु डिजिटल स्टोरेज मीडिया जैसे—हार्डडिस्क, कॉम्पैक्ट डिस्क, पेन ड्राइव जैसे मीडिया संसाधनों के कार्यकरण की अवधि बहुत छोटी होती है।

पाठ्य सामग्री का डिजिटलीकरण काफी खर्चीला एवं अत्यधिक समय लेने वाला तथा जटिल प्रक्रिया है। कुछ चीजें जैसे फोटोग्राफ, बिंबियोग्राफी संसाधन, श्रव्य दृश्य एवं सांख्यिकीय सूचनाएँ प्रायः डिजिटल स्वरूप में होती हैं।

### तकनीकी सीमाएँ

इसके अंतर्गत सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर आते हैं जिसमें हार्डवेयर की कार्यशीलता काफी समय तक बनी रहती है। ऑनलाइन पुस्तकालय/लाईब्रेरी के लिए हमारे फोन में एक अलग तरह के सॉफ्टवेयर की जरूरत पड़ती है जो मोबाइल एप्लीकेशन के रूप में निःशुल्क मिल जाती है। आज इंटरनेट पर सैकड़ों ऐसी विश्वसनीय साइट्स हैं जहाँ से लगभग सभी मुद्रित पुस्तकों को डाउनलोड करके पढ़ा जा सकता है। साथ ही, यदि आप कुछ लिखने के शौकीन हैं तो भी अपनी पुस्तक को टाइप कर अथवा स्कैन करके ऑनलाइन



लाईब्रेरी या पुस्तकालय में जोड़ सकते हैं। ऑनलाइन लाईब्रेरी के इतिहास की बात की जाए तो महज कुछ ही वर्षों पूर्व में शुरू हुए इस धारणा ने आज इंटरनेट पर धूम मचा रखी है। अब पारंपरिक पुस्तकालयों से अधिक पाठक ई-लाईब्रेरी में भ्रमण करते हैं। धर्म शास्त्र, दर्शन, राजनीति, खेल, चिकित्सा लगभग प्रत्येक क्षेत्र और विश्व में बोली जाने वाली अधिकतर भाषाओं की ई-पुस्तक यहाँ सरलता से उपलब्ध हो जाया करती हैं, किंतु सॉफ्टवेयर समयानुसार बदलते रहते हैं, जिससे तकनीकी रूप से जटिलता आती है क्योंकि सॉफ्टवेयर वास्तव में हार्डवेयर की तुलना में काफी तीव्रता के साथ दूसरी पीढ़ी में परिवर्तित होते रहते हैं। शिक्षा के केंद्र के रूप में यहाँ पुस्तकों को संचित करके रखा जाता था तथा पाठक को वहाँ जाकर अध्ययन करना पड़ता था। पुस्तकालय की नियमावली के अनुसार निर्धारित समयावधि में जाकर ही पुस्तकें पढ़ी जा सकती थीं। मगर अब बदलते वक्त में ई-लाईब्रेरी आज हम सभी के स्मार्ट फोन के रूप में द्वार तक आ पहुँची है। जिस गति से अन्य साधन सुविधाओं को हम ऑनलाइन प्राप्त कर रहे हैं, उसी अनुरूप लाईब्रेरी ने भी अपने नवीन स्वरूप का वरण किया है जो समय की माँग के साथ तेजी से

विकास को प्राप्त कर पाया है। ऑनलाइन लाईब्रेरी के दौर में पढ़ने के लिए कहीं जाने अथवा किसी भवन में घंटों तक कैद होकर बैठने की आवश्यकता नहीं रह गई है। अपने स्मार्ट फोन की मदद से चलते-फिरते, यात्रा करते, खाते-पीते, निःशुल्क और सशुल्क पुस्तकों को न केवल पढ़ सकते हैं, बल्कि इच्छित समय के लिए सहेज कर भी रख सकते हैं। नित्य हम इंटरनेट पर कई पीडीएफ फाइल्स को ब्राउज करते हैं, ये ऑनलाइन पुस्तकालय की मूल सामग्री ही है। जहाँ हम अपनी पसंद व आवश्यकता के अनुसार पुस्तक को पीडीएफ या ई-बुक के रूप में सुरक्षित रख सकते हैं तथा अपने खाली समय में पढ़कर समय का सदुपयोग भी कर सकते हैं।

### संरक्षण

डिजिटल संग्रह जैसे हार्डडिस्क, पेन ड्राइव, सीडी इत्यादि का जीवन काल तकनीकी परिवर्तनों के कारण अत्यंत छोटा होता है तथा यह कम समय में ही अपनी उपयोगिता खो देते हैं। इसलिए डिजिटल सूचनाओं को संरक्षित करने के लिए डिजिटल हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर कनफिगरेशन आधुनिक तंत्रों द्वारा होते रहना चाहिए। वास्तविकता यह है कि अल्प समय में कम लागत में डिजिटल संग्रह अत्यधिक उपयोगी बनाना होगा। इन पुस्तकालयों में यह आवश्यक है कि संसाधनों के संग्रह एवं डिजिटलीकरण के निरंतर आधुनिकीकरण तथा एक डिजिटल वातावरण के निर्माण हेतु सारगर्भित प्रयास करने होंगे। इस प्रकार पुस्तकालय जो कि सूचना प्रदाता है, उसे व्यापक विषयों के साथ डिजिटल सूचना के क्षेत्र में विकास की प्रक्रिया का वाहक बनना होगा।

### डेटाबेस का निर्माण एवं रख-रखाव

आजकल डिजिटल पुस्तकालय इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस के निर्माण एवं संग्रह में अपनी सक्रियता दिखा रहे हैं, इसके लिए आवश्यक है कि इलेक्ट्रॉनिक सूचनाओं एवं संसाधनों तथा सेवाओं का सही प्रबंधन हो। डिजिटल पुस्तकालय में अधिकतर सूचनाओं का अंतरण अथवा आदान-प्रदान ऑनलाइन प्रक्रिया के द्वारा ही किया जाता है, ये अंतरण प्रक्रिया प्रकाशक, उपयोक्ता जिन्हें सूचनाएँ वांछित होती है,



इनके बीच की आदान-प्रदान की प्रक्रिया यद्यपि जिम्मेदार माध्यमों के द्वारा पूर्ण की जाती है, किंतु कभी-कभी यह प्रक्रिया सुरक्षा संदर्भों के क्रम में घातक सिद्ध होती है। उपयोक्ता के लिए डेटा और उसकी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में नवीन तकनीक का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। इसलिए इन अनेक तकनीकों को अत्यधिक प्रभावशाली बनाना अति आवश्यक है। यदि इन तकनीकों को प्रभावी रूप से बना लिया गया तो डिजिटल पुस्तकालय अत्यधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी तथा सरल हो सकते हैं।

### प्रतिलिप्याधिकार

हमारा विश्व तेजी से डिजिटल की ओर बढ़ रहा है, घर बैठे ऑनलाइन खरीदारी, शिक्षा परामर्श आदि तेजी से लोकप्रिय हुए हैं। इंटरनेट की इस देन का सर्वाधिक लाभ शिक्षा को मिला है जिससे आज हमने पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ ई-शिक्षा की तरफ कदम बढ़ाए हैं। अब ऑनलाइन पुस्तकालय की अवधारणा को पाठकों द्वारा बहुत पसंद किया जाने लगा है। पूर्व में समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का एकमात्र स्रोत शहर या कस्बे में स्थित पुस्तकालय ही माने जाते थे, जिसकी चुनौतियों का सामना पुस्तकालयों को करना पड़ता है। साथ ही सूचनाओं के निर्माण, उत्पादन एवं प्रसार तथा आधुनिकीकरण डिजिटल संसाधनों के क्रम में एक सतत् एवं गतिशील प्रक्रिया है। प्रकाशित



साहित्यिक कृतियों में प्रतिलिप्याधिकार की अवधि में अन्यथा उपबंधित के सिवाय यह है कि रचयिता के जीवनकाल में प्रकाशित किसी साहित्यिक कृति को कोई चुरा ना ले। इसके लिए आईएसएसएन एवं आईएसबीएन संख्या दिया जाता है, डिजिटल पुस्तकालय के संदर्भ में प्रतिलिप्याधिकार एक अति महत्वपूर्ण विषय है।

### साइबर पुस्तकालय

साइबर पुस्तकालय/रीडिंग हॉल में रखी गई कंप्यूटरों की सेटिंग्स और डिस्प्ले बदलने की अनुमति नहीं है। पुस्तकालय के पूरे परिसर में कंप्यूटरों पर गेम्स खेलने पर सख्त प्रतिबंध है। सदस्यों को अपने पेन ड्राइव, सीडी/डीवीडी आरओएम, सेल फोन और बटुए आदि का

ध्यान खुद रखना है। साइबर पुस्तकालय का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए किया जाना है। साइबर पुस्तकालय में ऑनलाइन



चैटिंग की अनुमति नहीं है। डेटिंग या सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर ब्राउजिंग करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है। सदस्यों के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। साइबर पुस्तकालय का उपयोग करते समय सदस्यों को अपना पुस्तकालय पहचान पत्र साथ रखना है। माँगे जाने पर अपना पहचान पत्र दिखाना है। सदस्य दूसरे छात्रों के साथ अपना नेट एक्सेस आईडी और पासवर्ड साझा नहीं करेंगे।

पुस्तकालय के इस नवीन व आधुनिक स्वरूप ऑनलाइन पुस्तकालय के अत्यधिक लोकप्रियता के कई कारण हैं। पहला इसकी सरलता और सुगमता है। अब लोगों के पास घंटों तक एक स्थान पर बैठकर पढ़ने का समय नहीं रहा है। ऐसे में ई-पुस्तकालय कम शुल्क में समय की बचत के साथ न केवल पुस्तक उपलब्ध करवाता है, बल्कि इसे अपने फोन में सुरक्षित करके रखने की सुविधा भी देता है। ऑनलाइन लाइब्रेरी पढ़ने के समय के बंधन से भी मुक्ति दिलाता है। इसके बंद होने या खुलने का कोई समय पाबंदी नहीं है, दिन हो या रात, जब चाहे आप अपनी लाइब्रेरी से पुस्तकों का अध्ययन आरंभ कर सकते हैं। पहले लाइब्रेरी तक जाने और आने में काफी समय व्यर्थ हो जाता था, जबकि अब यह दूरी खत्म हो चुकी है। खासकर विद्यार्थियों एवं विभिन्न विषयों पर शोध करने वाले लोगों के लिए ऑनलाइन लाइब्रेरी किसी ईश्वरीय देन से कम नहीं है। किसी विषय पर शोध अब सरलता से किया जा सकता है। अलग-अलग भाषाओं के लेखकों तथा उनकी सामग्री के स्रोत तक पहुँचना प्रत्येक व्यक्ति के वश से बाहर की बात थी, मगर ई-लाइब्रेरी के कारण यह संभव हो पाया है। किसी विषय विशेष के विद्वान की पुस्तक को पढ़ने के साथ ही उस तक अपना संपर्क भी साधा जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी का एक लाभ यह भी है कि पाठक किसी पुस्तक को पढ़ने के बाद अपने अनुभव के अनुसार पुस्तक समीक्षा भी लिख सकता है जो नवीन पाठकों को संबंधित पुस्तक के चयन में मददगार साबित होता है। इसके अलावा अपने पसंदीदा लेखकों की नवीनतम पुस्तक की सूचना भी ई-लाइब्रेरी में अविनाश प्राप्त की जा सकती है। ●●●



# शोध-सेतु एकेडमिया

तकनीकी विकास ने मनुष्य के जीवन को इतना प्रभावित किया है कि उससे पहले का समय पुरानी दुनिया लगने लगता है। नई दुनिया ने लोगों को एक-दूसरे को बगल में ला खड़ा किया है। अब विचारों को साझा करने के लिए समय का विलंब और स्थान की दूरी के मायने लगभग समाप्त हो गए हैं। ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ नए शोध की आनुपातिक दर बढ़ गई है। इसी का परिणाम है तकनीकी युग में 'शोध' की बढ़ती संभावनाएँ। दरअसल, शोध की एक विशेषता यह है कि इसके अस्तित्व में आने के बाद यह बाह्य जगत अथवा समाज को पहले जैसा नहीं रहने देता। कहा जाए तो 'शोध' शांत पानी में तरंगें पैदा करने वाला वह पत्थर है, जो अपनी उपस्थिति से जल के पूर्ववत रूप को बदल देता है, लेकिन शोध का रास्ता भी राहगीर जैसा ही है। वह जितना चलता है, दुनिया देखता है, उसकी राह में आगे बढ़ने की इच्छा और प्रबल होती



जाती है, लेकिन उसकी सीमा भी तय होती जाती है। वह केवल खुद के देखे ज्ञान से ही राह बना पाता है। लेकिन जब उसे बीच में साथी मिलता है तब उन दोनों का ज्ञान और नई दिशाओं की ओर भी जाने लगता है। राहगीर जब तक अकेला चलता है तब तक लक्ष्य उसे दूर दिखाई देता है और जब कोई साथी हो जाए तो वही लक्ष्य पास हो जाता है। नई दुनिया ने ऐसे ही राहगीरों को अनेक दिशाओं में बढ़ने के लिए एक साथ खड़ा कर दिया है।

एकेडमिया (Academia.edu) ऐसा ही एक स्थान है, जहाँ अकादमिक जगत में नए शोध के आकांक्षी-जन एकत्रित होते हैं और अनेक संभावनाओं की दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसकी शुरुआत करने वाले डॉ. रिचर्ड प्राइस भी स्वयं एक शोधार्थी हैं। उन्होंने ऑक्सफोर्ड के दर्शनशास्त्र विभाग से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। पी-एच.डी. समाप्ति के दौरान ही उन्हें एकेडमिया जैसे किसी अंतर्जालीय व्यवस्था

की आवश्यकता अनुभव होने लगी थी। वह इस आवश्यकता को महसूस करते हुए विचार करते हैं कि 'कोई ऐसा अंतर्जालीय मुखपृष्ठ (Internet homepage) होना चाहिए जहाँ मैं बता सकूँ कि मैं कौन हूँ? मेरा काम किस विषय पर है? और मेरे कौन-कौन से शोध-पत्र हैं?' इसी मूल विचार के साथ एकेडमिया चार उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ा—निर्बाध अभिगम (Open Access), वितरण (Distribution), पियर रिव्यू (Peer Review) और प्रारूप (Formats)। इस प्रकार एकेडमिया सभी के लिए संदर्भित प्रपत्रों के निर्बाध अथवा मुक्त अभिगम को विभिन्न प्रारूपों में उपलब्ध कराता है। इसी विचार के साथ एकेडमिया का सफर आरंभ होता है।

नई तकनीकी सहयोग के साथ जुड़ना समाज के लिए कभी-भी सहज नहीं रहा। इसीलिए आरंभ में एकेडमिया के अपने उद्देश्य की ओर बढ़ने की गति धीमी ही रही। शुरुआती दिनों में एकेडमिया पर एक



**डॉ. रजत शर्मा**

शिक्षा : पी-एच.डी. (हिंदी)।

प्रकाशन : यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिकाओं में कई शोधपत्र प्रकाशित।

संप्रति : सहायक प्राध्यापक, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

संपर्क : मोबाइल— 9582749094

ईमेल— rajat.sh148@gmail.com

दिन में 37 यूजर्स अथवा सदस्य जुड़ते तो दूसरे दिन 42 और अगले दिन गिरावट के साथ 38। बढ़त और गिरावट की इसी मझधार में एक साल गुजरते-गुजरते यह संख्या बढ़कर 50 हजार को पार कर गई। वर्तमान में यह शोधार्थियों का एक ऐसा स्थान बन गया है,

“ एकेडमिया शोध-जगत में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। इसकी पहुँच प्रत्येक शोधार्थी के लिए सहज-सरल है। कोई भी शोधार्थी एकेडमिया पर साइन-अप कर इन सभी सामग्रियों का मुफ्त प्रयोग कर सकता है। वह आज अपने मिशन के अनुरूप वैश्विक-शोध में गति ला रहा है। एकेडमिया प्रमुख शोध-रुचियों को भी वर्गों में विभाजित कर प्रपत्रों तक शोधार्थी की पहुँच को और सहज बना देता है। प्रमुख शोध-रुचियों में इतिहास, अभियांत्रिकी, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, मानव विज्ञान, दर्शनशास्त्र, रसायन शास्त्र, भू-विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, गणित, साहित्य आदि सम्मिलित हैं। ”

जहाँ सरल एवं सहज रूप से समान तथा भिन्न ज्ञान-क्षेत्र के शोधार्थी एक-दूसरे के शोध-विचारों से अवगत होते हैं। एकेडमिया की उन्नति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज एकेडमिया के सदस्यों की संख्या 20 करोड़ की रेखा को छूने से कुछ ही दूर है। इन सदस्यों के ही चार करोड़ से अधिक शोध-पत्र, आलेख आदि एकेडमिया पर मौजूद हैं और प्रतिमाह इन प्रपत्रों को पढ़ने वाले लोगों की संख्या नौ करोड़ 80 लाख से भी अधिक हो गई है। एकेडमिया जिस उद्देश्य को लेकर चला था आज उसकी संरचना उसी प्रकार शोध-विचारों के मुफ्त आदान-प्रदान को सरल बना रही है।

एकेडमिया शोध-जगत में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। इसकी पहुँच प्रत्येक शोधार्थी के लिए सहज-सरल है। कोई भी शोधार्थी एकेडमिया पर साइन-अप कर इन सभी सामग्रियों का मुफ्त प्रयोग कर सकता है। वह आज अपने मिशन के अनुरूप वैश्विक-शोध में गति ला रहा है। एकेडमिया प्रमुख शोध-रुचियों को भी वर्गों में विभाजित कर प्रपत्रों तक शोधार्थी की पहुँच को और सहज बना देता है। प्रमुख शोध-रुचियों में इतिहास, अभियांत्रिकी, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, मानव विज्ञान, दर्शनशास्त्र, रसायन शास्त्र, भू-विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, गणित, साहित्य आदि सम्मिलित हैं। इन शोध-रुचियों के विषयों को भी उप-विषयों में विभाजित किया गया है। उदाहरण के लिए, इतिहास को मध्यकालीन इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, नगरीय इतिहास आदि उप-विषयों में विभाजित कर पत्रों का संकलन किया गया है। इसी प्रकार अन्य विषयों के शोध-क्षेत्रों को उप-विषय में बाँटकर सदस्यों की पहुँच को सरल बनाने का प्रयास एकेडमिया में निरंतर जारी है।

वैसे तो एकेडमिया पर सभी प्रपत्र मुफ्त में पढ़े जा सकते हैं, लेकिन वेबसाइट पर कुछ प्रीमियम प्लान भी मौजूद हैं। एकेडमिया सदस्य इसका लाभ कुछ शुल्क का भुगतान करके उठा सकते हैं। यह प्लान सदस्यों को कुछ सुविधाएँ भी उपलब्ध कराता है। इस प्लान को लेने वाले सदस्य को यह सुविधा मिलती है कि लाभान्वित सदस्य के प्रपत्र का प्रयोग, यदि संदर्भ में किया जाता है तो उसे इसकी जानकारी हो जाती है। यही नहीं किन-किन लोगों ने उस प्रपत्र को पढ़ा है, इसकी जानकारी भी लाभान्वित सदस्य को प्राप्त होती है। इन जानकारीयों के आधार पर सदस्य का समान शोध-रुचि के शोधार्थी से संपर्क करना सरल हो जाता है। यही नहीं सदस्य किसी विषय-विशेष के सारांश और संकेत शब्द द्वारा भी उससे संबंधित पत्रों को खोज सकने में सक्षम होता है। साथ ही, वह सदस्य एकेडमिया पर अपनी एक अलग वेबसाइट भी बना सकता है, ताकि वह एकेडमिया में मौजूद विद्वानों के समक्ष अपने काम को और अच्छे ढंग से रख सके। एकेडमिया शोध-पत्रों के लेखन से संबंधित टूल्स भी उपलब्ध कराता है। इनमें ट्रांसलेशन टूल, पीडीएफ बनाने का टूल भी सदस्य के प्रपत्र-लेखन में सहायक होता है। यही नहीं सदस्य अपने रुचि के अनुसार प्रपत्रों की एक पर्सनल लाइब्रेरी भी बना सकता है।



शोध सामग्री के साथ-साथ एकेडमिया से एक शोध जर्नल ‘एकेडमिया बायोलॉजी’ भी प्रकाशित होता है, जिसका उद्देश्य जीव-विज्ञान के क्षेत्र में अभिनव शोध को आगे बढ़ाना है। इसमें प्रकाशित प्रपत्र भी सभी के लिए निर्बाध अभिगम (Open Access) के लिए उपलब्ध हैं। इन प्रपत्रों की प्रामाणिकता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि इसके संपादक-मंडल में विभिन्न विश्वविद्यालयों के 50 से अधिक विषय-विशेषज्ञ हैं। देखा जाए तो ‘एकेडमिया बायोलॉजी’ एकेडमिया का ही एक अगला चरण है, जो स्वयं विषय-विशेष में शोध की दिशा तय करने के लिए आरंभ किया गया है। इसका लिंक भी एकेडमिया की साइट पर उपलब्ध है।

आज के समय में शोध-जगत में एकेडमिया मील का वह पत्थर साबित हो रहा है, जहाँ राहगीर रुककर अन्य लोगों से मिलकर सही दिशा में बढ़ने तथा आगे आने वाले उतार-चढ़ाव का अनुमान कर लेता है और दोबारा आगे बढ़ने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो जाता है।

# आओ भारतीय भाषाएँ सीखें

हिंदी	संस्कृत	पंजाबी	उर्दू	कश्मीरी	सिंधी	मराठी	कोंकणी	गुजराती	नेपाली	बांग्ला
मंत्रालय विभाग आयोग और मंडल	मन्त्रालयाः विभागाः आयोगाः मण्डलानिच	मंतराला विभाग आदि	विज़ारत महकमा कमीशन और मजलिस	वज़ारथ महकम कमिशन त बोड	मंत्रालय विभाग वगैरह	सचिवालय विभाग वगैरे	मंत्रालय विभाग	सचिवालय विभाग वगैरे	मन्त्रालय विभाग आयोग र मण्डल	सचिवालय विभाग आयोग ओ मंडल
इस्पात और खान	लोहसार-खनि मन्त्रालयः	असपात अते खाण	फौलाद-व- मादनियात	फौलाद त् कान	फौलाद ऐं खाणि	पोलाद व खाण	मिना खाणी	पोलाद अने खाण	इस्पात् एवम् खानी	इस्पात ओ खनि
उद्योग	उद्योग मन्त्रालयः	उदियोग	सनअत	सनथ	उद्योग	उद्योग	उद्योग	उद्योग	उद्योग	उद्योग (ये कानो)
गृह	गृह- मन्त्रालयः	ग्रिह	दाखिला विज़ारते	गर	घरु गृह	गृह	गृह	गृह	गृह	गृह
पर्यटन	पर्यटन- मन्त्रालयः	यात्रा	सियाहत	सयाहत	शैल, सैल सैरु सपाटो	पर्यटन	पर्यटन	पर्यटन	पर्यटन	पर्जटन भ्रमन
मंत्रिमंडल सचिवालय	मन्त्रिमण्डल सचिवालयः	मंतरीमंडल सकत्तरेत	केबिनेट सिक्रेटेरियट	कैबनिट सक्ट्रेट	मंत्रीमंडल सचिवालय	मंत्रिमंडल सचिवालय	सेक्रेतरीयेत	प्रधानमंडल सचिवालय	मन्त्रिमण्डल सचिवालय	मंत्रिमंडल सचिवालय
योजना	योजना- मन्त्रालयः	योजना	मंसूबाबंदी	मनसूब	रिथा योजना	योजना	योजना	योजना	योजना	योजना
वाणिज्य	वाणिज्य मन्त्रालयः	वणज		बापार	बाणिजु	व्यापार	वाणिज्य	वेपार-वाणिज्य खातुं	वाणिज्य	वानिज्ज ब्यवसाय
वित्त	वित्त मन्त्रालयः	वित्त	खज़ाना (मालियात)	मॉलियाथ	धनखातो मालियात	वित्त	वित्त	नाणा खातुं	वित्त	अर्थ वित्त
शिक्षा	शिक्षा मन्त्रालयः	सिक्खिआ	तालीम	तौलीम	शिक्षा, तालीम	शिक्षण	शिक्षण	शिक्षण कैठवणी	शिक्षा	शिक्खा
श्रम	श्रम मन्त्रालयः	किरत	मेहनत	मेहनत	श्रम, पोहॉ	श्रम	श्रम	मजूर खातुं	श्रम	श्रम, मेहनत परिश्रम
समाज कल्याण	समाज कल्याण मंत्रालय	समाज कलियाण	समाजी बहमूद	समॉजी बेहबूदी	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समाज कल्याण
संचार	सञ्चार मंत्रालय	संचार	मुवासलात	मवालिसाथ	संचार	कम्युनिकेशन	संचार	संदेशा व्यवहार, खातुं	सञ्चार	जोगाजोग, संचरण

असमिया	मणिपुरी	ओड़िआ	तेलुगू	तमिल	मलयालम	कन्नड़	डोगरी	संताली	मैथिली	बोड़ो
मन्त्रिसभा, मंत्रालय, मंत्रीकार्यालय विभाग, आयोग आरु मंत्रीमंडल	मंत्रालय लोइशइ कमिशन अमसु डिभिजन	मंत्रालय विभाग, आयोग मंडल	मंत्रालयमु, विभागमु, कमिशन, मंडलमु	अमैच्चगम्, इलाका, आणैयम् मंडलम् वारियम्	मंत्रिकार्यालयम् वकुप्पु, कम्मोवन् बोई	सचिवालय विभाग, आयोग मत्तु मंडल	मैत्तराले मैहकमा, कमिशन ते मंडल	सचिवालय चांगा एमान	मंत्रालय विभाग आयोग आओर मंडल	मन्त्रि विफान, विफान मावखुंगोरा जथाई'
लौह, तीखा आरु खनि	इस्यात, अमदि खोनी	इस्यात औ खणि	उक्कू-मरियु गुनुलु	ऐंहकुमट्टुम् कनिप्पोरुळ्	उरुकुकुम् खनियुम्	उक्कु मत्तु गणि	इस्यात ते खान/कान	इस्यात आर खादान	इस्यात आओर खान	सोर आरो जावखर विफान
उद्योग	उद्योग इन्दस्त्री	उद्योग शिल्प	परिश्रमलु	तोळिल्	व्यवसायम्	उद्योग	उद्योग सन्नत	उद्योग, शिल्प	उद्योग, विफान	दारिमिन विफान
गृह स्वराष्ट्र	युम	गृह	देशीयांग	उळतुरै	आभ्यन्तरम्	गृह	अंदरूनी मामले दा मैत्तराले उमूरे दाखला	औड़ा ?	गृह	नखर, विफान
पर्यटन	लम्कोइवा	पर्ज्यटन	पर्यटन	चुट्टुला	विनोदसंचारम्	प्रवासोद्यम	सैर-सपाटा	पर्यटन, दाँड़ान	पर्यटन	दावबायथाइ विफान
मंत्रीमंडली सचिवालय	मंत्रीमन्दल सेक्रेटरियेट	मन्त्रिमंडल सचिवालय	मन्त्रिमंडलि सचिवालयमु	अमैच्चरवे चैयलगम्	मन्त्रिसभा सेक्रेटरियेट	मन्त्रिमंडल सेक्रेटरियट्	मैत्तरीमंडल सचिवालय	मन्त्रिमंडल सचिवालय	मन्त्रिमंडल सचिवालय	मन्त्रि हानजा नेहाथारिख
योजना परिकल्पना	थौराइ	योजना परिकल्पना	प्रणाळिक	तिट्टम्	आसूत्रणम्	योजने	योजना	योजना	योजना	सानथांखि, मावथांखि
व्यवसाय वाणिज्य	लल्लोन-इतिक तौवा लोइसइ	वाणिज्य	वाणिज्यमु	वाणिगम्	व्यापारम्	वाणिज्य	बपार बनज	वाणिज, बैपार	वाणिज्य बानिज	फालांगि वादिंगा विफान
वित्त, अर्थ	शेल्-युम्मी ओइबो	बित्त, अर्थ	आर्थिक	निदि	धनकार्यम्	हणकासु	खजाना	वित्त काउडि	वित्त	रां विफान
शिक्षा	महै-मशिङ् नोम्बा	शिख्या	विद्य	कल्वि	विद्याभ्यासम्	शिक्षण	सिक्खेआ तलीम	सेचेद्	शिक्षा	सोलोथाइ विफान
श्रम	शु-नोम्बा	श्रम	श्रम	तौळिलाळ् तुरै	तोळिल्	कार्मिक	मेहनत	श्रम	श्रम	मावनाय विफान
समाज कल्याण	समाजगी चाइफनवा	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समूह नलन्	सामूहयक्षेमम्	समाज कल्याण	समाज कल्याण	समाज भालाइ मंत्रालय	समाज कल्याण	समाज अनसाय विफान
ताँर योगायोग	ई-पाओ चल्वा	संचार जोगाजोग	सदेशमु	तगवल् तोडर्बु	वार्ताविनिमयम्	संपर्क	संचार	जोगाजोग सन्चार	संचार	सुंजोब विफान

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा कोश से साभार)



# केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का ग्रंथालय

समाज के ज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नए विचारों और दृष्टिकोणों को आकार देकर रचनात्मक समाज का निर्माण करता है। पुस्तकालय की सेवा तथा स्रोत सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। पुस्तकालय व समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी देश या स्थान विशेष की संस्कृति, सभ्यता का ज्ञान व उसका विकास उस क्षेत्र के संसाधन तथा पुस्तकालय से ही प्रमाण प्राप्त होता है। समाज में पुस्तकों का बहुत महत्व होता है, महान देशभक्त एवं विद्वान लाला लाजपत राय ने पुस्तकों के महत्व के संदर्भ में कहा था, “मैं पुस्तकों का नरक में भी स्वागत करूँगा। इनमें वह शक्ति है जो नरक को भी स्वर्ग बनाने की क्षमता रखती है।” शास्त्रों में भी पुस्तकों के महत्व को सदैव वर्णित किया गया है। संस्कृत की एक सूक्ति के अनुसार—



**सोनी कुमारी**

**शिक्षा :** वाणिज्य में स्नातक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में स्नातक तथा स्नातकोत्तर, राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (दो बार)।

**संप्रति :** पुस्तकालय एवं सूचना सहायक (केंद्रीय हिंदी निदेशालय)।

**संपर्क :** मोबाइल— 81786 32315

**ईमेल—** sonykumarialka@gmail.com



“काव्य शास्त्र विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम्।  
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रयाकलहेन वा।”

प्राचीन समय से पुस्तकालय की महत्ता के कारण इसके स्वरूप और सेवाओं में निरंतर बदलाव आ रहे हैं। भारत के प्रथम विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. शियाली रामामृत रंगनाथन, जिन्हें ‘भारत में पुस्तकालय विज्ञान, प्रलेखन और सूचना विद्या का जनक’ कहते हैं, उन्हें 1957 में पुस्तकालय विज्ञान में बहुमूल्य योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया। सन् 1931 में डॉ. रंगनाथन ने पुस्तकालय के संसाधनों के लिए पाँच सूत्र दिए थे जो किसी भी पुस्तकालय के लिए आधारभूत स्तंभ माने जाते हैं—

“पुस्तकें उपयोग के लिए हैं

प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक

प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक

पाठकों का समय बचाएँ

पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।”

डॉ. रंगनाथन के उक्त सूत्र ने समाज में पुस्तकालयों के परिचालन एवं व्यवस्था को

ही परिवर्तित कर दिया है। उन्होंने पुस्तकों के अधिक-से-अधिक उपयोग पर बल दिया है। उनके अनुसार पुस्तकालय में प्रत्येक पाठक के लिए उसकी पसंदीदा पुस्तक होनी चाहिए। पाठक ‘शिक्षित हो या अशिक्षित’ सभी के लिए पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए। अशिक्षित व्यक्ति के लिए पुस्तक से तात्पर्य उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित करने से है, क्योंकि शिक्षा पर सबका समान अधिकार है। किसी भी पुस्तकालय में पुस्तकों का सूचीकरण पुस्तकालय की कुंजी के समान है जो ज्ञान के रास्ते खोलती है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी पुस्तकों को चुनने में सहायता मिलती है। बच्चे, युवा तथा प्रौढ़ अपनी आवश्यकता तथा रुचि के अनुरूप पुस्तकालय संसाधनों का प्रयोग करते हैं। एक तरफ जहाँ पुस्तकालय में बच्चों के मनोरंजन के लिए पुस्तकें तथा साधन उपलब्ध होते हैं, विभिन्न प्रकार की साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामान्य पुस्तकों के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ

उपलब्ध होती हैं, जिससे वह अपनी रचनात्मक बुद्धि का विकास कर समाज में उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं।

पुस्तकालय द्वारा दी जाने वाली सेवाओं में निरंतर बदलाव देखने को मिल रहे हैं। जहाँ प्राचीन समय में पुस्तकालय में सामान्य लोगों के प्रवेश-वर्जित होते थे, वहीं 21वीं सदी में पुस्तकालय को प्रवेश मुक्त

“ **केंद्रीय हिंदी निदेशालय में हिंदी शिक्षण की भी योजना है जो पत्राचार द्वारा विभिन्न माध्यमों में संचालित होते हैं अतः हिंदी शिक्षण से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं जो हिंदी शिक्षण में उपयोग आती हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों/पत्र-पत्रिकाओं के सूचीकरण को ऑनलाइन e-granthalay की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।** ”

कर दिया गया है, जिससे पाठकों को अपने पुस्तक विशेष तक पहुँचाने में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। डॉ. रंगनाथन ने पुस्तकालय को एक वर्धनशील संस्था बताया है, अर्थात् पुस्तकालय का विकास निरंतर होता रहता है। एक अच्छे पुस्तकालय में समाज के विकास के साथ उसके संग्रह, सेवा, पाठकों तथा संदर्भों में निरंतर वृद्धि होती रहती है। इससे सामाजिक स्तंभों को आधार मिलता है।

संसार के बदलते स्वरूप के अनुसार पुस्तकालय के स्वरूप में भी बदलाव आ रहे हैं। पूर्व में पुस्तकालय की मात्रा व संचय का महत्व होता था, किंतु 21वीं सदी के पुस्तकालयों की गुणवत्ता व उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालयों द्वारा ऑनलाइन सेवा उपलब्ध कराई जा रही है जिससे पाठक को विशेष सूचना, दस्तावेज, पुस्तकों को आसानी से सुपुर्द किया जा सकें।

भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय देश में शिक्षा और मानव संसाधनों के विकास के लिए उत्तरदायी है। शिक्षा मंत्रालय के उच्चतर शिक्षा विभाग के अंतर्गत अनेक संस्थाएँ कार्य करती हैं। इनमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग भी शामिल हैं। इन दोनों संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है। वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग का मुख्य कार्य भारत की सभी भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान के सभी अनुशासनों की तकनीकी शब्दावली को तैयार करना तथा इसका उपयोग और विस्तार करना है। अपने उद्देश्य के लिए आयोग निरंतर शब्द-निर्माण कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रशिक्षण आदि कार्य निष्पादित करते हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार में केंद्रीय हिंदी निदेशालय भी संलग्न है जिसके अंतर्गत अनेक योजनाएँ संचालित होती हैं, जिनमें कोश निर्माण, हिंदी शिक्षण, वार्तालाप, पुस्तकों का निर्माण, स्वयं शिक्षकों का निर्माण, पुस्तक प्रकाशन सहायता योजना, भाषा पत्रिका का प्रकाशन आदि शामिल हैं।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक शब्दावली आयोग के कार्यों के निष्पादन के लिए समृद्ध पुस्तकालय अनिवार्य है और इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक संयुक्त विभागीय पुस्तकालय है जिसकी स्थापना सन् 1952 में हुई। इस पुस्तकालय में विविध ज्ञानानुशासनों के संदर्भ ग्रंथ और पुस्तकें उपलब्ध हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का पुस्तकालय विभागीय उपयोग के लिए सीमित है, किंतु विशेष परिस्थितियों में विभागाध्यक्ष की अनुमति से बाहरी आगंतुक पुस्तकालय का उपयोग कर सकते हैं। दोनों ही संस्थाओं द्वारा शब्द निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है इसलिए समाज में उपलब्ध अधिकांश कोश, विषयों के संदर्भ ग्रंथ, पाठ्य-पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं की उपलब्धता है। वर्तमान में लगभग 57000 पुस्तकें हैं, जिनमें सभी विषयों के संदर्भ ग्रंथ, कोश, एनसाइक्लोपीडिया, साहित्य आदि शामिल हैं। इन पुस्तकों में हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य, आयुर्वेद, लेखा, सामाजिक विज्ञान, धार्मिक ग्रंथ, इंजीनियरिंग, सामान्य ज्ञान आदि उपलब्ध हैं। इस ग्रंथालय में विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध रहते हैं और शब्द-निर्माण के क्रम में विशेषज्ञों द्वारा पर्याप्त उपयोग किया जाता है। ग्रंथालय को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्य, विज्ञान, स्वास्थ्य, चिकित्सा जैसे सभी विषयों से संबंधित पत्रिकाएँ प्राप्त होती हैं।

इस पुस्तकालय में केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र भाषा कोश, अभिनव हिंदी, भारतीय भाषा कोश, क्षेत्रीय भाषा कोश, त्रिभाषा कोश, वार्तालाप पुस्तकें, स्वयं शिक्षक, पारिभाषिक शब्दावली, परिभाषा कोश, मूलभूत शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी में ज्ञान गरिमा सिंधु, विज्ञान गरिमा सिंधु, भाषा पत्रिका जैसे सभी प्रकाशन उपलब्ध हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय में हिंदी शिक्षण की भी योजना है जो पत्राचार द्वारा विभिन्न माध्यमों में संचालित होते हैं अतः हिंदी शिक्षण से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं जो हिंदी शिक्षण में उपयोग आती हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों/पत्र-पत्रिकाओं के सूचीकरण को ऑनलाइन e-granthalay की वेबसाइट पर देखा जा सकता है। यह सेवा वेब-ओपैक (WEB OPAC) सुविधा है। इसके माध्यम से पुस्तकों की खोज विषय, लेखक के नाम, शीर्षक आदि के माध्यम से किया जा सकता है और किसी भी जगह से पुस्तकालय की समृद्धि को जाना जा सकता है।

समग्रतः देखा जाए तो केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का विभागीय पुस्तकालय ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं-प्रशाखाओं से संबंधित पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों से समृद्ध है।





# अयोध्या नरेश राम की कथा और गैर-भारतीय विद्वान

भारत में युगों से अयोध्या नरेश राम की कथा अत्यंत लोकप्रिय रही है, आने वाले अनेक विदेशियों तथा विद्वानों को इसने प्रभावित किया और उन्हें विचार करने पर विवश किया कि भारतीय जन के हृदय में यह राम कथा और उसके रचयिता की इतनी गहरी पैठ क्यों है? भारत ही क्या मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद और फिजी के सामान्य जन भी अपने घरों में तुलसी चौरा पर इसकी चौपाइयाँ लिखवाते हैं। जीवन के असमंजस में रामचरितमानस की चौपाइयों से उचित मार्गदर्शन पा आगे बढ़ते हैं। अंग्रेजी लेखक विंसेंट स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'अकबर : द ग्रेट वॉरियर' के अंतिम पृष्ठ पर लिखा है कि अकबर के समय ही एक महान योद्धा तुलसीदास थे, जो उनके समानांतर जन के मन पर अपनी सत्ता चला रहे थे। सामान्य जन को रामकथा से आदर्श, कर्तव्य, त्याग और प्रेम का पथ दिखा रहे थे। यहाँ जन के मन में बसी राम कथा से प्रभावित गैर-भारतीयों का वर्णन निम्नानुसार है—



**संध्या सिलावट**

शिक्षा : एम.ए., नेट, पी-एच.डी.।

संप्रति : सहायक आयुक्त, राज्य कर, इंदौर।

प्रकाशन : कई राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में लेख, लघुकथा, कविता प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल— 9425956771

ईमेल— sandhyasilawat1972@gmail.com

1. प्रो. होरेस हेमैन विलसन (एच.एच. विलसन) (26 सितंबर, 1786-18 मई, 1860) : 1808 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी की चिकित्सा सेवा में पदस्थ होकर लंदन से भारत आए। 1833 ई. में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत के बोडेन प्रोफेसर बनकर वापस चले गए। उन्होंने सर्वप्रथम ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। यह रामचरितमानस के प्रथम पाश्चात्य समीक्षक माने जाते हैं। इन्होंने गार्सा दा तासी से आठ वर्ष पूर्व 'रिलिजियस सेक्ट्स ऑफ हिन्दुइज्म' में तुलसीदास के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है। भक्तमाल में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर तुलसीदास के बारे में अध्ययन किया। तत्कालीन समाज में तुलसीदास के बारे में प्रचलित लोककथाओं का अध्ययन और संकलन किया। उनका मत था कि तुलसीदास की रामचरितमानस हिंदू समाज के बहुत बड़े भाग में वाल्मीकि की संस्कृत रामायण से बहुत अधिक लोकप्रिय है।

2. गार्सा द तासी (1794-1878 ई.) : गार्सा द तासी का जन्म 25 जनवरी, 1794 को फ्रांस के मारसेली (Marseille) में हुआ था। तुलसी पर उल्लेखनीय कार्य करने वाले दूसरे महत्वपूर्ण गैर-भारतीय विद्वान हैं—फ्रांस के गार्सा द तासी। इन्होंने तुलसीदास के रामचरितमानस के सुंदरकांड का फ्रांसीसी में अनुवाद किया, जो फ्रांस के साथ ही, अन्य देशों में भी खासा लोकप्रिय हुआ था। फ्रांस में ही रहते हुए गार्सा द तासी ने हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास 1839 ई. में 'इस्तवार द ला लित्रेयुर एन्दुई अ एन्दुस्तानी' लिखा। इसमें उन्होंने तुलसी और उनकी रामचरितमानस की तीन उपलब्धियों—कथा संयोजन, भाषा और कलात्मक चेतना की प्रशंसा की है। इस पुस्तक की यूरोपीय जगत् में प्रशंसा हुई थी।

3. एफ.एस. ग्राउजे (1836-1893 ई.) : ग्राउजे का जन्म सपफोल्क, इंग्लैंड में 1836 ई. में हुआ। 1860 ई. में यह बंगाल की सिविल सर्विस में आए। इन्हें 'आधुनिक

मथुरा का निर्माता' माना जाता है। इन्होंने राजकीय संग्रहालय मथुरा की स्थापना की थी। वे 'स्थानीय रेल के जनक' कहे जाते हैं। ग्राउजे ने मानस के काव्य तत्व का अनुशीलन करते हुए तुलसी के रामचरितमानस व वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन किया। ग्राउजे मानस के पहले विदेशी चिंतक हैं जिन्होंने रामचरितमानस का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ग्राउजे ने रामचरितमानस का बहुत ही सफल और सुंदर अनुवाद 'एटर्नल रामायण : द रामायण ऑफ तुलसीदास' (Eternal Ramayan : The Ramayan of Tulsidas) के नाम से अंग्रेजी में किया है।

उन्होंने रामचरितमानस का अनुवाद सात अध्यायों में द चाइल्डहुड, अयोध्या, द फोरेस्ट, किष्किंधा, द ब्यूटीफुल, लंका और द सीक्वेल नामों से किया। इन्होंने स्पष्ट किया कि रामचरितमानस स्वतंत्र ग्रंथ है, यह वाल्मीकि रामायण का अनुवाद नहीं है। उन्होंने रामचरितमानस को हिंदू जाति का मार्गदर्शन करने वाला महाकाव्य घोषित किया। एशियाटिक सोसायटी के जर्नल में 1876 ई. में इसकी प्रस्तावना प्रकाशित हुई। 1877 ई. में सरकारी प्रेस इलाहाबाद में इसका पहला खंड अर्थात् 'बालकाण्ड' ('द चाइल्डहुड' शीर्षक से) प्रकाशित हुआ और रामचरितमानस का संपूर्ण अनुवाद 1880 ई. तक प्रकाशित हो गया। केवल बालकाण्ड का अनुवाद पद्यबद्ध है, शेष अनुवाद गद्य में ही है।

सन् 1893 में क्षयरोग से इनका निधन हो गया। कहते हैं कि जीवन के अंतिम समय में इन्होंने स्वयं को रामभक्ति में लीन कर लिया था। बुलंदशहर के चार गेटों में से एक का नाम इनके नाम पर 'ग्राउजेगंज गेट' रखा गया।

**4. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851-1941 ई.) :** इनका जन्म 07 जनवरी, 1851 ई. में डबलिन, आयरलैंड में हुआ। ग्रियर्सन बहुभाषी होने के साथ कोश विज्ञान, लोक साहित्य, इतिहास, मानव विज्ञान, पुरातत्व, काव्यशास्त्र, तुलनात्मक व्याकरण आदि ज्ञान की अनेक शाखाओं के पंडित थे। समर्पित ईसाई होने के साथ ही वह दूसरे धर्मों को भी जानना और समझना चाहते थे।

वह भारतीय सिविल सेवा की प्रतियोगिता 1871 ई. में उत्तीर्ण हुए थे। अक्टूबर 1873 में भारत आए। यहाँ आकर ग्रियर्सन ने अनुभव किया कि गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस हिंदू जन के मानस में गहराई से पैठी हुई है। तीन शताब्दियों से यह उनके व्यवहार और जीवन चरित्र का अभिन्न अंग हैं। इसी बात से प्रेरित होकर उन्होंने तुलसी और उनके रामचरितमानस पर अनेक रचनाएँ कीं। उन्होंने इसके प्रत्येक बिंदु पर जैसे इसका रचनाकाल, भाषा-शैली, पात्र और चरित्रचित्रण, प्रकृति चित्रण, नाटकीय तत्व, संवाद, प्रबंधात्मकता और इसमें वर्णित समाज-धर्म आदि विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। सर्वाधिक मुख्य बिंदु इसकी लोकप्रियता ने उन्हें प्रभावित किया और उसकी विभिन्न टीकाओं पर भी उन्होंने लिखा।

ऑस्ट्रिया के वियना में 1886 ई. में आयोजित प्राच्य विद्या-विशारदों के अधिवेशन में हिंदुस्तान की मध्यकालीन भाषा साहित्य मुख्यतः तुलसी के संबंध में प्रबंध ग्रंथ पढ़ सभा के सभी विद्वानों को हिंदुस्तान के भाषा साहित्य से प्रभावित करवा दिया। इनके साहित्येतिहास ग्रंथ 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' 1889 ई. में तुलसीदास तथा उनकी काव्य कला का विस्तृत विवेचन हुआ है।

ग्रियर्सन ने गोस्वामी तुलसीदास के नाम का वर्णन संसार के गिने-चुने कवियों में किया और 'नोट्स ऑन तुलसीदास' (1893 ई.) नामक पुस्तक में इन्होंने तुलसीदास का स्वतंत्र मूल्यांकन किया है। रामचरितमानस को दस करोड़ हिंदुओं की बाईबिल माना है। उनका कहना था कि भारत में एक हिंदू व्यक्ति भी ऐसा ढूँढ़ पाना कठिन है जिस पर मानस का रंग न चढ़ा हो। सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपनी बात को सिद्ध करने के लिए मानस की चौपाइयों का उदाहरण देता है और चौपाइयों का प्रयोग करता है। रामचरितमानस महलों से लेकर झोंपड़े तक प्रत्येक के यहाँ पाया जाता है। हिंदू समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा चाहे वह उच्च हो या निम्न, धनी हो या निर्धन और बूढ़ा हो या जवान, पढ़ा जाता है, सुना जाता है और प्रशंसित किया जाता है। मानस का धर्म ग्रंथ के रूप में उनके द्वारा आदर किया जाता है। 1912 ई. में 'इंपीरियल गजट' में भी तुलसीदास पर लेख लिखा। ग्रियर्सन का 'क्या तुलसीदास कृत रामचरितमानस रामायण का अनुवाद है' शीर्षक से लेख 1913 ई. में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' के जर्नल में प्रकाशित हुआ, जिसमें रामचरितमानस को अनुवाद न मानकर मौलिक ग्रंथ सिद्ध किया गया। 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स' (1921 ई.) में भी इन्होंने तुलसी संबंधी लेख प्रकाशित करवाया। ग्रियर्सन को 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका' में रामचरितमानस का ही नहीं, अपितु तुलसीदास की अन्य कृतियों का भी श्रेष्ठ समीक्षक वर्णित किया गया है।

**5. डॉ. एल.पी. टेसीट्टी (1888-1919 ई.) :** डॉ. लुइज पियोटेसीट्टी का जन्म 1888 ई. में इटली में हुआ। डॉ. टेसीट्टी हिंदी के प्रथम शोधकर्ता हैं, जो इतालवी भाषी हैं और जिन्होंने शोधकार्य के लिए किसी विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि पाई है। यह रामचरितमानस एवं उसके रचयिता तुलसीदास के अनुसंधानकर्ता हैं। इन्होंने अपने शोध में तुलसी रचित रामचरितमानस की कथावस्तु की तुलना वाल्मीकि कृत 'रामायण' की कथावस्तु से की है। 1911 ई. में इनका शोध लेख इतालवी पत्रिका 'ज्योर्नेल डेला सोसाइटा एशियाटिका इटालियाना' में 'इल रामचरितमानस ए इल रामायण' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। 'इंडियन ऐन्टिक्वेरी' में 1912 ई. से 1913 ई. तक इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। इन्होंने तुलसीदास की भाषा प्राचीन बैसवाड़ी के व्याकरण पर कार्य किया जिसके कुछ नमूने, जनरल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लंदन 1914 ई. में प्रकाशित हुए।

**6. जे.एन. कारपेंटर :** इनके द्वारा 'द थिआलॉजी ऑफ तुलसीदास' शोध कार्य लंदन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया गया। इस शोधकार्य पर कारपेंटर को 1918 ई. में डॉक्टर ऑफ दिविनिटी (DD) की उपाधि प्राप्त हुई। यह 32 पृष्ठों का प्राक्कथन है, जिसमें रामचरितमानस पर विशद चर्चा है। परमेश्वर और त्रिदेव का वर्णन है। राम और उनके अवतारों पर चर्चा है। रामचरितमानस से 237 उद्धरण दिए गए हैं। ग्रंथ का समापन माया और मोक्ष से किया गया है। जे.एन. कारपेंटर का मानना है कि भक्ति का जन्म स्वतंत्र रूप में हुआ, लेकिन इसके विकास में ईसाइयत का बहुत प्रभाव है।

**7. रेवेरेन्ड एडविन ग्रीव्ज (1854-1941 ई.) :** इन्होंने 'ए स्केच ऑफ हिंदी लिटरेचर' के नाम से 1918 ई. में हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास लिखा। यह 112 पृष्ठों में अंग्रेजी में लिखी गई परिचयात्मक पुस्तक है। इसमें हिंदी साहित्य को पाँच भागों में बाँटा गया है। 'हिंदी साहित्य का रेखांकन' नाम से डॉ. किशोरी लाल ने इसका हिंदी अनुवाद किया है।

डॉ. ग्रियर्सन के पश्चात एडविन ग्रीव्ज प्रमुख पाश्चात्य विद्वान हैं, जिन्होंने 'ए स्केच ऑफ हिंदी लिटरेचर' में गहराई से तुलसी के रामचरितमानस की सुंदर समीक्षा की है, तुलसी की प्रतिभा को पहचाना है। तुलसी को मानव संवेदना का सबसे बड़ा कवि बताया है। तुलसी की प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत की और रामकथा परंपरा का इतिहास वर्णित किया है, जिसमें उन्होंने तुलसी की रामचरितमानस को हिंदुओं का बाईबिल बताया। राम के चरित्र को रसों से परिपूर्ण कहा। मानस की कथावस्तु, ओज, लय, भक्तिभावना, चित्रण की अनेकरूपता और भाषा काव्य सौंदर्य का गहराई से विवेचन किया है।

इनके अनुसार तुलसी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे, तुलसी मानस का आरंभ संस्कृत श्लोकों से ही करते हैं। वह पूरा ग्रंथ संस्कृत में रच सकते थे, परंतु उन्होंने इसे साधारण जनता की भाषा में अवधी में रचा, जिससे रामकथा जन-जन तक पहुँच सके। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि अवधी में रामचरितमानस की रचना करने से पंडित समुदाय ने उनकी भर्त्सना की और तुलसी को उनका कोपभाजन बनना पड़ा। ग्रीव्ज ने भविष्यवाणी की थी कि जब तक हिंदी का अस्तित्व रहेगा, तब तक तुलसीदास अमर रहेंगे। इन्होंने तुलसीकृत रामचरितमानस की भाषा के व्याकरण पर भी निबंध लिखा।

**8. अलेक्सेई पैत्रेविच वरान्निकोव (1890-1952 ई.) :** इस रूसी विद्वान का जन्म जोलोतोशा, यूक्रेन में 1890 ई. में हुआ। यह रूसी मूल के भारतीय विद्याविद् थे। तुलसी पर लेखनी चलाने वाले विद्वानों में इनका नाम भी आदर से लिया जाता है। वरान्निकोव ने दस वर्षों तक कठिन परिश्रम के बाद डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित तुलसीकृत रामचरितमानस का रूसी भाषा में छंदोबद्ध अनुवाद किया। इसका प्रकाशन सोवियत विज्ञान अकादमी लेनिनग्राद द्वारा 1948 ई. में किया गया। यह कार्य उन्होंने कजाकिस्तान में शरणार्थी

के रूप में रहने के दौरान संपादित किया। जब वह तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस के अनुवाद का युगधर्मी कार्य कर रहे थे, उस समय उनकी मातृभूमि पर संकट छाया हुआ था। इस अनूदित ग्रंथ ने इतनी लोकप्रियता पाई कि प्रकाशित होते ही इसकी हजारों प्रतियाँ बिक गईं। इस ग्रंथ की भूमिका दस अध्यायों में विभक्त है, जिनके शीर्षक हैं—तुलसी का युग, तुलसीदास और उनकी कारयित्री प्रतिभा, तुलसीदास के रामायण की कथावस्तु, तुलसीदास के रामायण की प्रबंधात्मकता, तुलसी की कविता का विशिष्ट स्वरूप, तुलसीदास के दार्शनिक विचार, तुलसीदास के धार्मिक विचार, तुलसीदास के सामाजिक एवं नैतिक कथन, तुलसी ऐतिहासिक स्तंभ के रूप में, आदि। इसके अंतर्गत ही वरान्निकोव ने रामचरितमानस का महत्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि भक्तिकालीन भारतीय साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना तुलसीदास की रामचरितमानस है। उसमें भारतीय साहित्य की काव्यकला के सभी उपकरणों का चरम विकास मिलता है, साथ ही विदेशी विजेताओं द्वारा पददलित जनता के हृदय में उत्साह भरने और उनमें एकता स्थापित करने के महान उद्देश्य हैं। इस महान उद्देश्य की सिद्धि हेतु उसमें दार्शनिक, धार्मिक और नैतिक विचारों की वह समृद्धि है, जिसमें पूर्व प्रचलित भारतीय दर्शन, धर्मव्यवस्था और नैतिकता का सारतत्व मिलता है। यही कारण है कि 16वीं सदी में इस ग्रंथ की रचना के बाद से ही इसे उत्तर भारत की कोटि-कोटि जनता का स्नेह और व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई। सुंदर कलात्मक रूप में व्यंजित उसकी नैतिकता भारत के अशिक्षित और निरक्षर जनों के कठों में गूँज रही है। जहाँ धर्म को अफीम समझा जाता है। वरान्निकोव एक ऐसे कम्युनिस्ट देश से आते हैं जहाँ आधुनिक साहित्यकार तुलसीदास के काव्य को समाज की प्राचीन रूढ़ियों का पोषक मानते हों, वहाँ ऐसे में एक विदेशी विद्वान का तुलसीदास के रामचरितमानस पर मंत्रमुग्ध होना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। वरान्निकोव रामचरितमानस में प्रगतिशील तत्व का उल्लेख करते हैं। उनके अनुवाद को रूसी विद्वानों ने सहर्ष स्वीकार किया।

उनकी मृत्यु 1952 ई. में रूस में हुई। मृत्यु के बाद उनकी समाधि स्थल पर रामचरितमानस की निम्न पंक्तियाँ अंकित की गई हैं—

भलो भलाई पै लहहिं, लहै निचाई नीच ।

सुधा सराही अमरता, गरल सराही मीच ॥

जिसका अर्थ होता है भला भलाई ही ग्रहण करता है और नीच, नीचता को ही ग्रहण किए रहता है। अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में।

**9. फादर कामिल बुल्के (1909-1982 ई.) :** हिंदी प्रेमी फादर कामिल बुल्के बेल्जियम के फ्लैंडर्स प्रांत में 01 सितंबर, 1909 को रमस्कपैले शहर में जन्मे। 1928 ई. में, उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ ल्यूवेन्स इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ उन्होंने अपनी पढ़ाई के

दौरान एक सन्यासी बनने का निर्णय लिया। उन्होंने 1934 ई. में भारत की यात्रा करने का विकल्प चुना।

सन् 1935 में जब वह भारत आए, तो उन्होंने दार्जिलिंग के सेंट जोसेफ कॉलेज और आदिवासी बहुल समुदाय में गुमला के सेंट इगनासियस स्कूल में एक विज्ञान शिक्षक के रूप में अपने जीवन में एक नया अध्याय शुरू किया। वह शीघ्र ही समझ गए कि भारत की स्थिति बेल्जियम की भाँति ही थी, जहाँ मातृभाषा, फ्लेमिश को नजरअंदाज कर दिया गया था और फ्रेंच प्रभावी थी।

अति बुद्धिमान कामिल बुल्के ने मात्र पाँच वर्षों में केवल हिंदी ही नहीं, बल्कि संस्कृत पर पूरा अधिकार कर लिया। उन्होंने अवधी, ब्रज, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश की भी अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली। उन्होंने 1947 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि प्राप्त की और वहीं से 1949 ई. में उन्होंने रामकथा के विकास पर अपनी शोध उपाधि (पी-एच.डी.) के लिए अध्ययन किया, जो अंततः 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' के नाम से संपूर्ण विश्व में विख्यात हुई।

उन्होंने शोध प्रबंध अंग्रेजी के बजाय हिंदी में ही लिखा। उनसे पहले देश के सभी विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी के अलावा दूसरी भाषाओं में शोध प्रबंध लिखने का नियम नहीं था, जबकि वह स्वयं अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, लैटिन और ग्रीक भाषाओं में सहज थे। परंतु उन्होंने अपने गाइड और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान माता प्रसाद गुप्त से स्पष्ट कह दिया कि वह शोध-प्रबंध लिखेंगे तो हिंदी में ही।

हिंदी भाषा के प्रति किसी विदेशी छात्र के इस लगाव ने तमाम लोगों को अचंभित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्वविद्यालय को अपने नियम बदलने पड़े। इसके बाद ही देश के दूसरे विश्वविद्यालयों में शोधकर्ताओं को अपनी भाषा में शोध प्रबंध जमा करने की अनुमति मिलने लगी।

यह जानकर हैरानी होती है कि किसी ईसाई पादरी की सर्वश्रेष्ठ कृति हिंदू देवता राम से संबंधित है। लेकिन यह सच है, ज्यादातर आलोचकों की नजर में फादर कामिल बुल्के रचित 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' 1949 ई. उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। इस शोध में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, बांग्ला, तमिल आदि समस्त प्राचीन और आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध राम विषयक विपुल साहित्य का ही नहीं, वरन् तिब्बती, बर्मी, सिंधल, इंडोनेशियाई, मलय, थाई आदि एशियाई भाषाओं के समस्त राम साहित्य की सामग्री का भी अत्यंत वैज्ञानिक रीति से उपयोग हुआ है। यँ तो उन्होंने इस विषय पर ही अपना शोध कार्य (पी-एच.डी. थीसिस) जमा किया था। लेकिन बाद में भी इस विषय पर वह 18 वर्ष तक काम करते रहे। इस ग्रंथ के बारे में उनके गुरु और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने लिखा, "इसे रामकथा संबंधी समस्त सामग्री का विश्वकोश कहा जा सकता है। वास्तव में यह शोध प्रबंध अपने ढंग की पहली रचना

है। हिंदी क्या, किसी भी यूरोपीय या भारतीय भाषा में इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नहीं है। उन्होंने समस्त विश्व में रामायण के लगभग 300 रूपों की पहचान की।

राम के बारे में फादर कामिल बुल्के लिखते हैं कि वे वाल्मीकि के कल्पित पात्र नहीं, बल्कि एक इतिहास पुरुष थे। उनका मानना है कि उनके बारे में कालक्रम में थोड़ी-बहुत चूक हो सकती है, लेकिन वे कोई मिथकीय पात्र नहीं हैं। उन्होंने कई उदाहरणों से साबित किया कि रामकथा अंतरराष्ट्रीय कथा है जो वियतनाम से लेकर इंडोनेशिया तक फैली है। उन्होंने यह भी लिखा कि रामायण केवल धार्मिक साहित्य नहीं, बल्कि जीवन जीने का दस्तावेज भी है।

दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर नित्यानंद तिवारी कहते हैं, "फादर कामिल बुल्के और मैंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक डॉक्टर माता प्रसाद गुप्त के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया था। मैंने उनमें हिंदी के प्रति हिंदी वालों से कहीं ज्यादा गहरा प्रेम देखा। ऐसा प्रेम जो भारतीय जड़ों से जुड़ कर ही संभव है। उन्होंने रामकथा और रामचरितमानस को बौद्धिक जीवन दिया।"

फादर कामिल बुल्के की नजर में हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास थे। उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास की राम भक्ति की उसके सात्विक और आध्यात्मिक आयामों के लिए प्रशंसा की। तुलसीदास उन्हें उतने ही प्रिय थे, जितने अपनी मातृभाषा फ्लेमिश के महाकवि गजैले या अंग्रेजी के महाकवि शेक्सपियर। तुलसीदास की रचनाओं को समझने के लिए उन्होंने अवधी और ब्रज तक सीखी। उन्होंने रामकथा और तुलसीदास और मानस-कौमुदी जैसी रचनाएँ तुलसीदास के योगदान पर ही लिखी थीं।

विदेशी मूल के ऐसे कई अध्येता हुए हैं जिन्हें 'इंडोलॉजिस्ट या भारतीय विद्याविद्' कहा जाता है। उन्होंने भारतीय भाषा, समाज और संस्कृति को अपने नजरिए से देखा-परखा। लेकिन इन विद्वानों की दृष्टि ज्यादातर औपनिवेशिक रही है और इस वजह से कई बार वे ईमानदारी से भारतीय भाषा, समाज और संस्कृति का अध्ययन करने में चूक गए। बुल्के ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को उसकी संपूर्णता में देखा और विश्लेषित किया। भारत सरकार ने सन् 1974 में उन्हें पद्मभूषण दिया। हिंदी के इस महान विभूति का देहावसान गैंग्रीन के कारण 17 अगस्त, 1982 को दिल्ली में हुआ।

रूसी विद्वान व संगीतकार जिवानी मिखाइलोव व नतालिया गुसोवा ने रामकथा की कथावस्तु को लेकर बच्चों के लिए रंगमंचीय संस्करण तैयार किया था। सभी विद्वत जनों का वर्णन एक लेख में संभव नहीं है तथा न जाने और भी कितने गैर-भारतीय विद्वान हो सकते हैं जो रामकथा और तुलसीदास से प्रभावित हों या हो रहे हों। रामकथा है ही ऐसी जो सुहृदय को सहज ही आकर्षित कर लेती है।





# देशभक्त गोपाल मुखर्जी 'पाठा'

कुछ ऐसे भी देशभक्त रहे हैं जिन्होंने विभाजन के समय देश के एक बड़े अंचल को और एक उद्योग प्रधान महानगर को भारत में रखने में योगदान दिया। साथ ही, असंख्य माताओं और बहनों की नृशंस बलात्कार से रक्षा की और सहस्रों हिंदुओं के प्राण बचाए। इन लोगों ने शस्त्र प्रयोग करके यह स्थिति प्राप्त की थी, अतएव स्वतंत्रता के पश्चात सत्ताधारियों के लिए उनका स्मरण करना, उनका नाम लेना अहितकर था। उन्होंने तो यह नारा गढ़ दिया था कि हमने अहिंसा से स्वातंत्र्य प्राप्त किया है।

अब वस्तुस्थिति पर दृष्टिपात करें। गांधीजी ने घोषणा की थी कि वे विभाजन के



**ब्रजकिशोर शर्मा**

**जन्म :** 1934, बैतूल (मध्य प्रदेश)।

**शिक्षा :** एल.एल.एम.।

**संप्रति :** लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, भारत सरकार के विधि मंत्रालय में विभिन्न पदों पर कार्य किया। विधि मंत्रालय में अपर सचिव पद से सेवानिवृत्त। विभिन्न शासकीय पदों के साथ-साथ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष भी रहे।

**प्रकाशन :** भारत के संविधान का हिंदी में प्राधिकृत पाठ, विधि शब्दावली, बहुभाषी संविधान शब्दावली, संस्कृत में संविधान का प्रकाशन कराया। हिंदी में इनकी 'बैंकिंग शब्दावली', 'विधि भाषा प्रबोध' विशेष चर्चित रही। अन्य कई ग्रंथों का लेखन।

**सम्मान :** छोटे-बड़े दर्जनों सम्मानों से विभूषित।

पक्ष में नहीं हैं। यह दूसरी बात है कि कांग्रेस के अधिवेशन में उपस्थित होकर उन्होंने अपील की कि कांग्रेस के नेताओं ने (नेहरू, पटेल आदि) विभाजन स्वीकार कर लिया है, तब यदि आप इसके विरुद्ध मत देंगे तो संसार क्या कहेगा? उनकी बात सुनकर ही विभाजन का प्रस्ताव पारित हुआ, फिर भी इसके विरुद्ध मतदान करने वालों की संख्या बहुत थी।

गांधीजी ने जब कहा कि मैं विभाजन के पक्ष में नहीं हूँ तो जिन्ना ने कहा कि यदि हमें पाकिस्तान नहीं मिलेगा तो हम भारत का विनाश कर देंगे। गांधीजी का मत था कि हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई हैं। कोई भी मुसलमान अपने हिंदू भाई को नहीं मारेगा। जिन्ना मुस्कुराए और बोले, "हम पृथक देश के लिए 16 अगस्त, 1946 से सीधी कार्रवाई करेंगे।" 1946 में क्रिप्स मिशन (इसे कैबिनेट मिशन भी कहते हैं) ने तीन स्तर की रचना का प्रस्ताव किया था—एक केंद्र, दो प्रांतों का समूह, तीन प्रांत।

'प्रांतों का समूह', लीग की माँग को पूरा करने के लिए किया गया था। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने ही कैबिनेट के प्रस्ताव से सहमति प्रकट की थी। इसका परिणाम यह था कि कुछ प्रांतों में लीग की सरकार होगी। केंद्र सरकार विदेश कार्य, रेल और डाक-तार ही देखेगी।

10 जुलाई, 1946 को नेहरू जी ने वक्तव्य दिया कि कांग्रेस संविधान सभा में भाग ले रही है, किंतु वह कैबिनेट की योजना में परिवर्तन करने का अधिकार अपने पास रखे है। इस पर जिन्ना ने आक्रोश प्रकट करते हुए मुस्लिमों के लिए पृथक देश की माँग कर दी। गांधीजी ने इसे अस्वीकार कर दिया। जिन्ना ने घोषणा की कि 16 अगस्त, 1946 को सीधी कार्रवाई दिवस होगा। यह भी कहा गया कि हम युद्ध नहीं चाहते, किंतु यदि आप युद्ध चाहते हैं तो हम आपकी चुनौती स्वीकार करते हैं। या तो हम भारत का विभाजन करेंगे या भारत का विनाश।

गांधीजी ने जिन्ना की बातों को महत्व नहीं दिया। उन्हें अपने सेक्युलरिज्म और हिंदू-मुस्लिम एकता पर आवश्यकता से अधिक विश्वास था। उनका विचार था कि एक अलग देश की प्राप्ति के लिए मुसलमान, हिंदुओं की हत्या नहीं करेंगे।

“ सुहरावर्दी ने 16 अगस्त को हड़ताल घोषित कर दी। सभी मुस्लिम दुकानें बंद हो गईं। मैदान में एक मीटिंग बुलाई गई। समय था दो बजे, किंतु भीड़ 12 बजे से ही बढ़ने लगी। लोग अपने साथ लोहे की सरिया या लाठी लेकर आए थे। सुहरावर्दी ने यह घोषणा कर दी कि सेना और पुलिस को निष्क्रिय कर दिया गया है, डरने की आवश्यकता नहीं है। नमाज पढ़ने के बाद एक लाख लोगों की भीड़ हिंदुओं को मारने निकल पड़ी। हिंदू इसके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने स्वप्न में भी यह नहीं माना था कि ऐसा भी हो सकता है। दुकानें लूटी गईं और जलाई गईं। न जाने कितनी महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया। ”

बंगाल में सुहरावर्दी मुख्यमंत्री थे। वे जिन्ना के प्रति निष्ठावान थे। बंगाल एक मात्र प्रांत था जहाँ लीग की सरकार थी। उस समय बंगाल में हिंदू 42% थे। बहुमत मुसलमानों का था। कोलकाता में हिंदू 64% थे और मुस्लिम 33%।

जिन्ना की यह इच्छा थी कि कोलकाता पाकिस्तान को ही मिले। इसके लिए आवश्यक था कि हिंदुओं को वहाँ से खदेड़ दिया जाए। उस समय कोलकाता भारत का सर्वाधिक औद्योगिक नगर था (बाद में साम्यवादी शासन ने सब उद्योग बंद करा दिए)।

रमजान का महीना पवित्र माना जाता है। इसी मास में पैगंबर ने बद्र की लड़ाई जीती थी। सुहरावर्दी ने 16 अगस्त को हड़ताल घोषित कर दी। सभी मुस्लिम दुकानें बंद हो गईं। मैदान में एक मीटिंग बुलाई गई। समय था दो बजे, किंतु भीड़ 12 बजे से ही बढ़ने लगी। लोग अपने साथ लोहे की सरिया या लाठी लेकर आए थे। सुहरावर्दी ने यह घोषणा कर दी कि सेना और पुलिस को निष्क्रिय कर दिया गया है, डरने की आवश्यकता नहीं है। नमाज पढ़ने के बाद एक लाख लोगों की भीड़ हिंदुओं को मारने निकल पड़ी। हिंदू इसके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने स्वप्न में भी यह नहीं माना था कि ऐसा भी हो सकता है। दुकानें लूटी गईं और जलाई गईं। न जाने कितनी महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया।

हिंदुओं का नोआखाली में तो भयानक सर्वनाश हुआ, वहाँ दंगा और कत्ल 10 अक्टूबर, 1946 को प्रारंभ हुआ। (इसके विषय में आगे) 30,000 मुस्लिम, हिंदू बस्तियों में अस्त्र-शस्त्र लेकर घुसे और जो भी मिला, उसका सिर काट दिया। गोद के बच्चों को भी नहीं छोड़ा गया। स्त्रियों के साथ उनके परिवार के सामने बलात्कार किया गया। प्रथम दिन 15,000 हिंदू मारे गए। हजारों स्त्रियों के साथ बलात्कार हुआ।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि मुजीबुर्रहमान, जो बाद में बंग-बंधु और बांग्लादेश के प्रधानमंत्री बने, वे उस भीड़ के नेता थे, जो हिंदुओं पर आक्रमण कर रही थी। केसोराम कॉटन मिल्स में कार्यरत 600 श्रमिकार का जो अधिकतर उड़ीसा के थे, सिर काट दिया गया। 18 अगस्त को एक वीर पुरुष ने आगे आकर इस अनाचार को रोकने का निश्चय किया। उसका नाम था गोपाल मुखर्जी। उनकी मांस बेचने की दुकान थी। उनके मित्र उन्हें 'पाठ' कहते थे। वे उस समय 33 वर्ष के थे। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अनुयायी थे। वे एक संगठन चलाते थे जिसका नाम था, 'भारत जातीय वाहिनी'। उनके दल में पाँच-सात सौ लोग थे। ये सभी पहलवान थे।

जब गोपाल मुखर्जी ने यह तय कर लिया कि हमें प्रहार करना है तो उन्होंने कहा कि हमें एक हिंदू के बदले में 10 मुसलमान मारने हैं। मारवाड़ी व्यापारियों ने उसकी सहायता पर्याप्त धन देकर की। 19 तारीख को जब मुसलमान हिंदू बस्ती में आए तो उनका स्वागत गोपाल मुखर्जी के लोगों ने किया। 19 को सभी हिंदुओं के पास यह संदेश पहुँच गया था कि हिंदू गोपाल के नेतृत्व में लड़ रहे हैं। 20 तारीख से बदला लेना प्रारंभ हो गया। 21 तारीख को मारे गए मुसलमानों की संख्या हिंदू मृतकों से अधिक हो गई।



सुहरावर्दी ने कांग्रेस के नेताओं से निवेदन किया कि गोपाल मुखर्जी को रोका जाए। गांधीजी इस शर्त पर सहमत हुए कि मुस्लिम अपने अस्त्र-शस्त्र उनको समर्पित कर दें। सुहरावर्दी राजी हो गए। कोलकाता को हिंदू विहीन करने की जिन्ना की योजना 22 अगस्त को विफल हो गई।

गांधीजी ने गोपाल को दो बार बुलाया, किंतु वे नहीं गए। बाद में कांग्रेस के कुछ नेता उन्हें मनाकर अपने साथ ले गए। गांधीजी ने गोपाल को अहिंसा और हिंदू-मुस्लिम एकता का पाठ पढ़ाया और अपने शस्त्र डालने को कहा। इसके उत्तर में गोपाल ने कहा कि इन शस्त्रों के द्वारा ही मैं अपनी स्त्रियों की और बांधवों की रक्षा कर सका। इन्हें मैं कभी छोड़ नहीं सकता।

गोपाल मुखर्जी और श्यामाप्रसाद मुखर्जी, ये दो स्मरणीय व्यक्ति हैं जिन्होंने बंगाल के हिंदुओं की रक्षा की। गोपाल मुखर्जी का नाम इतिहास की पुस्तकों में नहीं मिलेगा। यद्यपि उन्हीं के कारण कोलकाता भारत में है।



# दो संस्कृतियों का सम्मेलन : काशी तमिल संगमम्

‘एक भारत श्रेष्ठ भारत’ का लक्ष्य लेकर भारत की दो संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान के लिए ‘काशी तमिल संगमम्’ का आयोजन शिक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। ‘काशी तमिल संगमम्’ केवल दो शहरों अथवा दो राज्यों का संगम नहीं है, अपितु यह प्रतीकात्मक रूप में दो संस्कृतियों का भी संगम है। एक ओर जहाँ तमिलनाडु दक्षिण भारत की प्राचीन धरोहर है, वहीं काशी उत्तर-भारतीय संस्कृति का एक प्राचीन केंद्र है। काशी की उत्तर भारत की संस्कृति और दक्षिण की तमिल संस्कृति के बीच अतीत से वर्तमान तक ज्ञान परंपरा का आदान-प्रदान होता रहा है। ‘काशी-तमिल संगमम्’ दक्षिण-भारत और उत्तर-भारत की इसी साझी परंपरा का स्मरण है। यह संगम उत्तर भारत द्वारा तमिल संस्कृति को सम्मान है तो तमिल का उत्तर-संस्कृति को वणक्कम्। यह संगम मात्र दो क्षेत्रों के लोगों का मिलन नहीं, अपितु दो प्रदेशों का समग्रता में जुड़ना है। इसके विविध आयाम हैं। यह संगम कला, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, शिल्प,



अध्यात्म, पुरातत्व, प्रौद्योगिकी, उद्यम, मंदिर, ग्राम आदि के ज्ञान-विज्ञान को साझा करने का स्थान बना। यह संगम काशी और तमिलनाडु के लोक, शास्त्र, मौखिक परंपराओं, लिखित दस्तावेजों के जुड़ाव का स्थल है। यहाँ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत अपनी विविध शीर्षकांतर्गत—राष्ट्रीय जीवनियाँ, भारतीय साहित्य, समग्र शिक्षा साहित्य, नेहरू बाल पुस्तकालय आदि तमिल, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों के साथ सम्मिलित हुआ। यह

कार्यक्रम ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के भाग के रूप में और ‘एक भारत श्रेष्ठ भारत’ की भावना को बनाए रखने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई एक पहल थी। कार्यक्रम के दौरान स्टोरी टेलिंग, पुस्तक पठन, अकादमिक, सांस्कृतिक-साहित्यिक, विचार गोष्ठी, पुस्तक विमोचन, कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

‘काशी-तमिल संगमम्’ महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा, “काशी-तमिल संगमम् अपने आप में विशेष है, अद्वितीय है। आज हमारे सामने एक ओर पूरे भारत को अपने आप में समेटे हमारी सांस्कृतिक राजधानी काशी है तो दूसरी ओर भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र हमारा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है।” उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश के दो सबसे महत्वपूर्ण और प्राचीन शिक्षा केंद्रों, तमिलनाडु और काशी के बीच सदियों पुराने संबंधों का उत्सव मनाना, फिर से इसे मजबूत



करना और खोज करना है। 'काशी-तमिल संगमम्' उत्तर प्रदेश के वाराणसी में 19 नवंबर, 2022 से 16 दिसंबर, 2022 तक आयोजित किया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने एक पुस्तक 'तिरुक्कुरल' का 13 भाषाओं में इसके अनुवाद के साथ विमोचन भी किया।



इस दौरान 20 नवंबर, 2022 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के हिंदी और तमिल 'युवा' लेखकों से बातचीत का सत्र आयोजित किया गया जिसमें प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना में चयनित श्रीमती मदालसा मणि त्रिपाठी और श्री सर्वणन गोपाल ने चर्चा की। 21, 22 व 28 नवंबर, 2022 को स्टोरी टेलिंग सत्र आयोजित किया गया जिसमें डॉ. शिवानी कनोडिया ने बच्चों को उत्तर-दक्षिण सांस्कृतिक सेतु का भी परिचय दिया। नई जानकारीयों और रोचकतापूर्ण प्रसंगों ने बच्चों को रोमांचित और उत्साहित किया। वहीं डॉ. निशी सेहरावत ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान के इस संगम में कहानियों की महत्ता को बताया और 15वीं सदी के पांडियन राजा की कहानी सुनाई।

23 नवंबर, 2022 को पुस्तक पठन सत्र में विद्यालयों के लिए पुस्तक वाचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में वाराणसी के बंगाली टोला इंटर कॉलेज, सनातन धर्म इंटर कॉलेज, डी.पी.एस. काशी तथा कमलापति त्रिपाठी बाल इंटर कॉलेज के 310 छात्र एवं छात्राओं ने 'नई शिक्षा नीति 2020' के अनुरूप बनी द्विभाषी पुस्तकों का वाचन किया। इसके अलावा

'काशी-तमिलनाडु शिल्पी, संबद्ध और प्रौद्योगिकी एकीकरण' विषय पर अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रथम सत्र में 'काशी और तमिलनाडु : शिल्पी संगम' आयोजित हुआ, जिसमें संयुक्त निदेशक, हैंडलूम, तंजावुर श्री एस. सेलवम, पद्मश्री डॉ. रजनीकांत तथा पद्मश्री श्री श्रीभास चंद्र सुपाकर ने भाग लिया। द्वितीय सत्र में 'द हैंडीक्राफ्ट वैरायटी एंड वैल्यू चैन' कार्यक्रम में श्री टी. राजकुमार, प्रख्यात कलाकार श्री वेंकटेश और श्री एस. भूपति ने भी मंच साझा किया। 30 नवंबर, 2022 को

एक अन्य अकादमिक सत्र में 'काशी-तमिलनाडु व्यापार पाठशाला' 'तमिल फेसिलिटेशन सेंटर' में आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख वक्ता के रूप में पद्मश्री डॉ. रजनीकांत ने भाग लिया। 14 दिसंबर, 2022 को 'ग्रामीण किसान और कृषि उत्पाद' विषय पर स्थानीय किसानों से सहभागिता की।

24 नवंबर, 2022 को 'शहरों को जोड़ने में नदियों का सांस्कृतिक महत्व' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें वाराणसी के हरिश्चंद्र इंटर कॉलेज, आदर्श नवज्योति बालक इंटर कॉलेज, सी.एम. एंग्लो इंटर कॉलेज, गुरुन्यास इंग्लिश स्कूल, ज्ञानदीप अकादमी तथा आजमगढ़ से श्रीनरसिंह इंटर कॉलेज के लगभग 450 विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ब्रह्मदत्त त्रिपाठी थे।

25 नवंबर, 2022 को तेलंगाना की राज्यपाल और पुडुचेरी की उप राज्यपाल माननीय तमिलसाई सौंदरराजन ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ए ट्रीजरी ऑफ एनसिएंट तमिल लीजेंड्स' का विमोचन किया। 'महाकवि सुब्रमण्यम् भारती और उनके काशी संबंध की प्रेरणाएँ' विषय पर माननीय राज्यपाल ने श्री वी. नारायणन और डॉ. पी. राजा के साथ मंच साझा किया। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री वी. रामासुब्रमण्यम ने न्यास के प्रयासों तथा नई शिक्षा नीति में द्विभाषी पुस्तक प्रकाशन को सराहा।

एम्फी थियेटर में 30 नवंबर, 2022 को आयोजित सांध्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'पम्बईकई सिलाबट्टम - तमिलनाडु की समूह लोकनृत्य' पर प्रस्तुति दी गई, जिसमें श्रीधरन, कुमारवेल, रामन इत्यादि कलाकारों की प्रमुख भूमिका रही। वहीं बनारस घराने के पं. जायस मिश्र ने अपने हिंदी भजन गायन की स्वरलहरी बिखेरकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। साथ ही, श्री पी.एस. भूपति एवं उनके सहयोगी ने तमिलनाडु के कवाडियत्तम लोकनृत्य पर प्रस्तुति दी। टी. एल. मुर्गन ने 'दक्षिण भारत का संगीत' पर प्रस्तुति दी।



02 दिसंबर, 2022 को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री सुभाष सरकार रहे। 03 दिसंबर, 2022 को आयोजित 'काशी-तमिल संबंध' विषय पर कार्यक्रम के वक्ता श्री गंगाधरन जी रहे। सांध्य सत्र में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंजाबी और हरियाणवी लोकगीत प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा देशभक्ति नाटिका 'पूर्वाचल के नायक' पर लेखक व निर्देशक श्री उमेश भटिया ने प्रस्तुति दी।



04 दिसंबर, 2022 को 'मंदिर वास्तुकला का ज्ञान' विषय पर श्री एस. ज्ञानप्रकाश, आईटी प्रोफेशनल एवं टेंपल आर्किटेक्चर एंड आर्ट्स एंथसियस्ट ने चर्चा की। सांध्य सत्र में माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार, श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा कि तमिलनाडु और काशी का संबंध पाँच हजार साल पुराना है, जो कि तमिल साहित्य में मिलता है। इस साहित्य में वाराणसी के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। एक अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'शास्त्रीय संगीत विधा' पर डॉ. शिवानी शुक्ला और डॉ. विलंबिता वाणी सुधा द्वारा संगीत प्रस्तुति दी गई। वहीं 05 दिसंबर, 2022 को आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री व्यास मौर्या ने भजन की प्रस्तुति दी। कलाकार श्री अमित मिश्र ने कथक नृत्य किया। श्री कार्तिकेयन ने 'नादश्वरम्' नामक वाद्ययंत्र बजाकर दर्शकों का मन मोह लिया। श्री के. पार्वतन एवं समूह ने महाभारत पर आधारित लोकनाट्य 'थोरोकुथू' पर प्रस्तुति दी। श्री एम. गुरुमूर्ति एवं समूह ने 'मैलाइत्तम नृत्य' प्रस्तुत किया।

06 दिसंबर, 2022 को 'काशी-तमिल समानता' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया

गया। वहीं संध्या सत्र में डॉ. श्यामा कुमारी एवं समूह तथा डॉ. रमाशंकर एवं समूह द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। 07 दिसंबर, 2022 को 'काशी व तमिलनाडु की साझा उद्यमिता मॉडल' पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी वक्ता श्रीमती दीपा लक्ष्मी, प्रबंधक, मुलई हर्बल उत्पाद, तमिलनाडु थीं। 08 दिसंबर, 2022 को बनारस घराने के संगीतज्ञ व सितार वादक पं. प्रेमकिशोर मिश्र व उनके सहयोगी अभिषेक मिश्र एवं शिवांग ने प्रस्तुति दी।

इसके अलावा 08 से 15 दिसंबर तक खेलों का भी आयोजन किया गया जिसमें हॉकी, फुटबॉल, बॉस्केटबॉल, क्रिकेट, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, वॉलीबॉल, खो-खो, कबड्डी जैसे खेल खेले गए।

09 दिसंबर, 2022 को 'कहानी कथन कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कहानीकार डॉ. जयश्री सेठी ने रोचक अंदाज में कहानियाँ सुनाईं। 10 दिसंबर, 2022 माननीय रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने काशी-तमिल संगमम् में सहभागिता की।

11 दिसंबर, 2022 को न्यास द्वारा सुब्रह्मण्यम भारती की 148वीं जयंती पर भारतीय भाषा दिवस भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वहीं 'समाज एवं राष्ट्र निर्माण में मंदिरों की भूमिका' विषय पर काशी विश्वनाथ मंदिर के संरक्षक श्री सुनीलदत्त वक्ता के रूप में शामिल हुए। 'गंगा के घाटों का मनोहारी दर्शन' कार्यक्रम में संचालक श्री कृष्णकांत शर्मा के साथ माननीय विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर तथा श्री एम. नचप्पन जी, श्री मणिसंगम सम्बरी, संयोजक सुनील दत्त एवं सिलापट्टन आदि गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।



कार्यक्रम 'अतिथि समागम' में माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, माननीय वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अरुण कुमार सक्सेना, उत्तर प्रदेश के माननीय वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अरुण कुमार सक्सेना, माननीय संसदीय कार्य एवं औद्योगिक विकास मंत्री, जसवंत सैनी, कुलपति काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी श्री सुधीर जैन, श्री अनुराग ठाकुर ने भाग लिया। वहीं अनुज गुप्ता, एयर कमोडोर, वायु सेना चयन समिति के अध्यक्ष, मृत्युंजय वोहरा, संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय उपस्थित रहे।

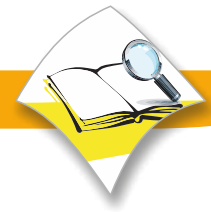


15 दिसंबर, 2022 'अतिथि समागम' में माननीय राज्यपाल, तमिलनाडु, श्री आर.एन. रवि ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि भारत की एकता आज उभरकर आई है। यह एकता न केवल भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति को दर्शाती है, बल्कि यह विश्व की प्राचीन संस्कृति भी है। यह एकता भारत के मैदानी एवं पहाड़ी दोनों क्षेत्रों में बहुतायत रूप में देखी जा सकती है। भारत संतों, कवियों और ऋषियों का देश है जिन्होंने भारत निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया है। इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स के श्री विजयशंकर शुक्ला ने कहा कि भगवान अगस्त्य स्वयं काशी में विराजमान हैं। आज काशी को आकाशबिंब के रूप में चिदंबरम के दर्शन हो रहे हैं। हमें लग रहा है भगवान अरुणाचलेश्वर यहाँ विराजमान हैं, तभी भगवान विश्वनाथ काशी से लेकर सुदूर रामेश्वरम् तक आदिशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

समापन सत्र में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि काशी भारत की आध्यात्मिक राजधानी के साथ-साथ कला, संस्कृति का एक अद्भुत केंद्रबिंदु रहा है। उत्तर प्रदेश भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है और तमिलनाडु की इन सभी समानताओं को लेकर कला, संस्कृति और ज्ञान की उस प्राचीनतम परंपराओं का नेतृत्व करता है। इन दोनों परंपराओं का काशी-तमिल संगमम् के माध्यम से अद्भुत संयोग एक नए संगम का निर्माण करता है। माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि यह पूर्णाहुति नहीं, शुरुआत है भारतीय संस्कृति की। दो उत्तुंग शिखर काशी और तमिलनाडु की संस्कृति, दर्शन, भाषा, कला, ज्ञान और समग्र विश्व में जिनकी मान्यता है, ऐसी काशी की नगरी में इस सांस्कृतिक विरासत के मिलन की शुरुआत है और यहीं से रास्ता आगे जाने वाला है। माननीय केंद्रीय पर्यटन संस्कृति मंत्री श्री जी. किसन रेड्डी ने कहा कि



हिंदी और तमिल भले ही अलग-अलग भाषाएँ हैं, लेकिन सभी की भावनाएँ एक हैं। काशी-तमिल संगमम् ने उत्तर-दक्षिण के युवाओं को आर्थिक, शिक्षा, सांस्कृतिक व धार्मिकता का मंच प्रदान किया है। माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि काशी-तमिल संगमम् का यह भव्य कार्यक्रम दो संस्कृतियों का संगम है। माननीय प्रधानमंत्री जी का यह प्रयास उत्तर एवं दक्षिण को एक सूत्र में बाँधेगा। यहाँ लगी चित्र प्रदर्शनियों में स्वामी विवेकानंद, सरदार बल्लभभाई पटेल, सुभाषचंद्र बोस आदि की छवियाँ हमें आधुनिक इतिहास को समझाने में काफी मददगार साबित होंगी। ●●●



समीक्षक : सुधांशु गुप्ता

संपादक : प्रफुल्ल कुमार महांति

अनुवादक : राजेंद्र प्रसाद मिश्र

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,  
भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 290

मूल्य : रु. 375/-

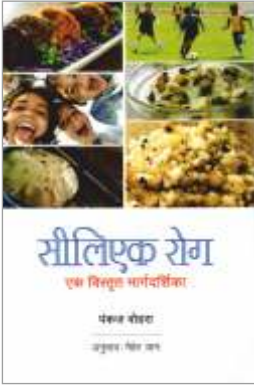
## प्रतिभा राय की श्रेष्ठ कहानियाँ

» ओड़िआ लेखिकाओं में प्रतिभा राय का नाम मशहूर है। वह हिंदी में भी खूब पढ़ी और सराही जाती हैं। उनके 20 से अधिक कहानी संग्रह, अनेक उपन्यास, लघु कथाएँ, यात्रा वृत्तांत, बाल साहित्य, आत्मकथा प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें केंद्रीय साहित्य अकादेमी से मूर्तिदेवी और ज्ञानपीठ समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनकी रचनाओं का अनेक विदेशी और भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

‘प्रतिभा राय की श्रेष्ठ कहानियाँ’ पढ़ते हुए यह बात साफतौर पर दिखाई दी कि उनकी कहानियों का सुर भारतीयता, मूल्यबोध, मानवीयता, आदर्श और नैतिकता का सुर है। वह ओड़िआ संस्कृति, वहाँ के समाज और वहाँ के परिवेश के इर्द-गिर्द ही कहानियाँ बुनती हैं। उनकी कहानियों में वर्जनाओं को तोड़ने का प्रयास नहीं है, बल्कि परिवार, प्रेम, दांपत्य, वात्सल्य बचाने की कोशिश दिखाई पड़ती है। प्रेम प्रतिभा राय की कहानियों में बहुत स्थूल रूप में नहीं आता, बल्कि वे प्रेम की ऐसी छायाएँ देखती हैं, जिन्हें हम छूना चाहते हैं, लेकिन छू नहीं पाते। कहानियों के अंत में एक नाटकीयता या ‘ट्विस्ट’ कहानियों को रोचक बनाता है। ‘प्रेमपत्र’ कहानी में चौदह वर्षीया रीमा की गणित की किताब में माँ सुपमा को बेटी के हाथ का लिखा एक प्रेमपत्र मिलता है। माँ लगातार उस प्रेमपत्र और किसे यह लिखा गया, के बारे में सोच-सोचकर परेशान रहने लगती है। लेकिन न तो वह बेटी से कुछ पूछ पाती है, न बेटी ही माँ को कुछ बताती है। दिन बीतते रहते हैं। एक दिन बेटी को माँ की अलमारी में से माँ का लिखा हुआ एक प्रेमपत्र मिलता है। न बेटी माँ से कुछ कहती है, न माँ बेटी से। समय बीतता है। रीमा की शादी हो जाती है। पता चलता है कि माँ ने वह प्रेमपत्र रीमा के पिता को ही लिखा था। माँ की मृत्यु हो जाती है। प्रतिभा राय कहानी में परिवार और परंपरा की कोई दहलीज़ नहीं लाँघना चाहतीं या लाँघती। प्रेम और दांपत्य पर लिखी अधिकांश कहानियों में यह बात दिखाई देती है। ‘माँ का बक्सा’ और ‘मन का पुरुष’ इसी मिजाज़ की कहानियाँ हैं। ‘माँ का बक्सा’ में एक महिला के पास एक बक्सा है। इस पर घर के सभी

लोगों की नज़रें टिकी रहती हैं। लोग सोचते हैं कि पता नहीं इस बक्से में कौन-सा खजाना छिपा हुआ है। बक्से में से सुखमय दांपत्य का सूत्र निकलता है। पिता फूट-फूटकर रोते हैं और कहते हैं कि उन्होंने पत्नी की जीते जी कद्र नहीं की। कमोबेश इसी तरह की कहानी है ‘मन का पुरुष’। कहानी में 45 साल के मधुर दांपत्य को दर्शाया गया है। कहानी का अंत एक नाटकीयता से होता है। पत्नी के निधन के बाद उनका एक पत्र मिलता है, जिसमें वह स्वीकार करती हैं कि मैं उन्हें (वर्तमान पति को) अगले जन्म में पति के रूप में नहीं, बल्कि बेटे के रूप में पाना चाहती हूँ। जिंदगीभर मैं उन्हें संतान का स्नेह ही देती आई हूँ और उसी से वे पूरी तरह संतुष्ट हैं। वे मेरी कल्पना के आदमी, मेरे मन का पुरुष नहीं थे...। प्रतिभा राय अपनी कहानियों में कहीं भी प्रेम या दांपत्य की परिधि नहीं पार करती हैं। उनकी पूरी कोशिश दांपत्य को बचाने की रहती है। परिवार को टूटते दिखाने से वह कहानियों में बचती हैं। ‘दादी’ कहानी में ही इसका व्यतिक्रम होता दिखाई पड़ता है। प्रतिभा राय की कहानियाँ दर्शन के स्तर को भी कहीं-कहीं छूती हैं। अभाव किस तरह इंसान का स्वभाव बदल देता है यह ‘भूख’ कहानी में देखा जा सकता है। प्रतिभा राय की अधिकांश कहानियों में ग्रामीण जीवन, वहाँ का परिवेश, रहन-सहन और वहाँ के जीवन मूल्य दिखाई पड़ते हैं। वह ओड़िआ समाज में फैली विसंगतियों को अपनी कहानियों में उजागर करती हैं। ‘भद्र पुरुष’ कहानी में शुभदा के पास उनके पुराने अध्यापक आते हैं, लेकिन शुभदा ने अपने चौकीदारों को कह रखा है कि कोई भी भद्र पुरुष हो तभी उसे भीतर आने दिया जाए। अध्यापक चार बार शुभदा के घर आते हैं और वापस लौट जाते हैं, क्योंकि वह भद्र नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण व्यक्ति हैं। इस कथित भद्रता को हम शहरों में भी देख और महसूस कर रहे हैं। इस संग्रह की सबसे खूबसूरत कहानी है ‘गुफा’। इस कहानी में अनादिकाल की एक गुफा में प्रौढ़ अध्यापक सिद्धांतशेखर और उनकी शोध छात्रा श्रीमती जिगीषा पहुँचते हैं। गुफा में दुर्लभ नृतात्विक खोज से दोनों चकित हो जाते हैं। वे दोनों स्त्री और पुरुष की ममी के बीच आपसी रिश्ते को तलाश करते हैं। उन्हें लगता है कि स्त्री की उम्र काफी होनी चाहिए। हो सकता है दोनों माँ बेटे हों। सिद्धांतशेखर और जिगीषा, दोनों रात में गुफा में रुकते हैं। पता चलता है कि वे पिछले सैकड़ों सालों की ‘ममी’ में तब्दील हो चुके हैं।

अगर आप मूल्यबोध, आदर्श और परिवारबोध की कहानियाँ पढ़ना चाहते हैं तो यह संग्रह आपके लिए है। इसमें व्यर्थ का देहवाद और लफ्फाजी देखने को नहीं मिलेगी। कहानियों की भाषा इतनी सरल और सहज है कि जीवंत जान पड़ती है।



समीक्षक : फूलचंद मानव

लेखक : पंकज वोहरा

अनुवादक : मेहेर वान

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,

भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 226

मूल्य : रु. 330/-

## सीलिएक रोग : एक विस्तृत मार्गदर्शिका

हमारे मानव शरीर और मन में तरह-तरह की विकृतियाँ, रोग या असामान्यताएँ पैदा होती रहती हैं। समय-समय पर उनका इलाज भी करवाया जाता है, लेकिन लापरवाही के कारण इन्हें उपेक्षित भी कर दिया जाता है जिसके परिणाम उम्र के साथ-साथ व्यक्ति भोगता, झेलता, कष्ट सहन करता रहता है। सीलिएक रोग उम्र भर रहने वाले रोग हैं, लेकिन इनसे घबराना नहीं चाहिए। प्रायः 'ताउम्र' के बारे

में सोचते हुए सामाजिक प्राणी घबरा जाते हैं। हताश होकर रह जाते हैं। साहस और मनोबल के साथ सतत इलाज करवाते हुए ऐसे रोगों के लिए भी हमारे विज्ञान ने इलाज खोज लिए हैं। डॉक्टरों ने महारत हासिल करके इनका समाधान और इलाज निकाल लिया है। डॉ. पंकज वोहरा, बाल रोग विशेषज्ञ होते हुए 'एम्स' दिल्ली से प्रशिक्षित हैं। न्यूयॉर्क, अमेरिका के माउंट सेनाई मेडिकल सेंटर के फेलोशिप प्राप्तकर्ता हैं। देश-देशांतर के विशेषज्ञों के साथ परामर्श करके इन्होंने 'सीलिएक इंडिया एंड वियॉन्ड फाउंडेशन' की स्थापना की है। यह एक गैर-लाभकारी संस्थान कहलाता है।

'सीलिएक रोग' पुस्तक में सीलिएक रोग के बारे में, ग्लूटेन मुक्त भोजन शैली, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलू, पाक विधियाँ और परिशिष्ट के अंतर्गत कुछ हिस्सों में सरलतम भाषा के साथ ऐसे रोगियों और उनकी देखभाल करने वालों के लिए मार्गदर्शन प्रस्तुत किया गया है। समझदारी और धैर्य के साथ ऐसे रोगों का इलाज होता है। लक्षण और रोग की पहचान करके इस रोग का इलाज संभव है। बार-बार परामर्श के लिए डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। बचाव की दिशा में अरोग्य की प्राप्ति की जा सकती है। पश्चिमी देशों की बीमारी कहकर इसे टाला नहीं जा सकता। यह एक जीवनपर्यंत चिकित्सकीय अवस्था है। समाज की गलतफहमियों और कल्पित कथाओं के साथ मिश्रित हो जाने पर हम कई बार बाध्य हो जाते हैं। बाल-जठरांत्र विज्ञान में खासतौर पर सीलिएक रोग, पहचान प्रक्रिया में आते हैं। ग्लूटेन मुक्त भोजन यहाँ आहार के तौर पर जीवनपर्यंत सेवन करना होता है। गेहूँ या गेहूँ जैसे अन्य पदार्थों से मुक्त भोजन विशेष 'ग्लूटेन मुक्त खाना' कहलाता है। डॉ. पंकज वोहरा ने अपने अनुभव के

आधार पर पुस्तक में प्रश्नोत्तरी शामिल की है। बाल मरीजों और उनके अभिभावकों के बार-बार पूछे जाने वाले सवाल विचार में रखते हुए उनके उत्तर भी दिए हैं। यह किताब पाठक से संवाद करती हुई जान पड़ती है। ऐसे परिवार और देखभाल करने वाले लोगों के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक है।

मात्र रहन-सहन और खान-पान के द्वारा भी बदलाव से, इन रोगों का इलाज किया जा सकता है। रोग के लक्षणों के संदेश, उनके परीक्षण, बीमारी की पुष्टि, उपचार यहाँ अनिवार्य है। इस रोग में टॉक्सिन, ग्लूटेन के सेवन से बचाव यहाँ जरूरी है। सरल भाषा में ग्लूटेन एक तरह का प्रोटीन है, जो गेहूँ, राई, जौ, ओट्स या इससे बनी वस्तुओं में पाया जाता है। यह जीवनभर चलने वाली हालत है। ग्लूटेन मुक्त भोजन जीवनपर्यंत खाना पड़ता है, जिसके लिए इच्छाशक्ति एक विशेष पहलू है। रोगी के उपचार में परिवर्तन, परहेज और नियमित प्रक्रिया स्वाभाविक है। लड़का या लड़की में यहाँ लिंग भेद नहीं रहता। इसके लिए रोगोपचारिक भोजन अनिवार्य होता है। लोगों के लिए 'सीलिएक' और 'ग्लूटेन' नए शब्द होने के कारण प्रायः नागरिक दुविधा के शिकार होते देखे गए हैं, लेकिन अध्ययन, उपचार और परहेज से इस पर काबू पाया जा सकता है।

जीवन की जुड़ी गलतफहमियों या मिथक संबंधी धारणाओं के लिए विचाराधीन पुस्तक एक रास्ता दिखाती है। इस किताब में सीलिएक रोगों की अवस्था, इसके इतिहास, अवतरण, रोग पहचान या मूल ग्लूटेन मुक्त भोजन संबंधी जानकारी विस्तार में उपलब्ध है। ग्लूटेन मुक्त खाने के बारे में सूक्ष्म भेदों की जानकारी यहाँ दर्ज है और उनकी पाक विधियाँ भी। यह किताब किसी नए सीलिएक परिवार के लिए ग्लूटेन मुक्त भोजन, उसके पकाने की शुरुआत करने में एक तरह से मार्गदर्शिका का काम करती है। आमतौर पर पेटदर्द की शिकायत करते बच्चे, लगातार घट रहे वजन की समस्या से जूझती अर्धे महिलाएँ, ऐसे जवान जिन्हें आशंका है कि लिवर फेल हो रहा है। कोई किशोर जिसने खेलते समय हड्डी तुड़वा ली है या कोई 18 साल का बच्चा जो नौ-दस साल का ही दिखाई देता है, ऐसी स्थितियों के लिए सीलिएक रोग लक्षण प्रकट करते हैं। हम मानते हैं कि ज्ञान को बेहतर बनाया जाना चाहिए, ज्ञान को चुनौती दी जानी चाहिए और इसमें पहले से अधिक वृद्धि की जानी चाहिए, अन्यथा यह समाप्ति की ओर बढ़ जाता है। कुछ ऐसी कोशिश में सीलिएक रोगों की मार्गदर्शिका एक मानक पुस्तक मानी जा सकती है।

डॉ. सौम्या स्वामीनाथन, डॉ. विनोद के. पॉल, डॉ. विवान तलवार या राजेश वधवा, स्वाती कपूर जैसे विद्वान, डॉक्टर, विशेषज्ञ और पाठक इस किताब की संस्तुति करते हैं। इसमें आठ रंगीन पृष्ठों में भोजन संबंधी पकवानों को दिखाकर स्पष्ट किया जा रहा है कि कैसा खान-पान इन रोगों के लिए जरूरी है। सीलिएक रोग में समझदारी, इसके लक्षण, रोग की पहचान, इलाज के साथ ही ग्लूटेन

मुक्त भोजन शैली, इसकी विस्तृत जानकारी और पाक कला बताई, समझाई गई है। किताब की खूबसूरती है कि बच्चे और परिवारजनों के साथ संवाद, घर के बाहर ग्लूटेन मुक्त भोजन, ग्लूटेन मुक्त जीवन और पाक विधियाँ भी यहाँ खुलकर सामने आई हैं। पुस्तक का महत्वपूर्ण पक्ष इसका परिशिष्ट है, जिसमें वृद्धि तालिकाएँ, आरोग्य भोजन शैली के बारे में सुझाव, पत्रों के नमूने, ग्लूटेन मुक्त अनाज, सीलिएक बच्चों को संदेश, किशोरों के लिए सावधानी, संसाधन आदि सरलतम भाषा में व्यक्त हो रहा है।

इस या ऐसी तकनीकी भाषा को सरल हिंदी में अनुवाद कर पाना प्रायः चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इस किताब का हिंदी अनुवाद करते समय मेहेर वान ने सजगता, योग्यता और प्रतिभा से काम लेते हुए उस भाषा में अभिव्यक्ति दी है, जिसे सहज ही अपनाया जा सकता है। रोगों के प्रति जानकारी लेकर ही हम उनके निदान की ओर अग्रसर हो सकते हैं।



समीक्षक : सूर्य कांत शर्मा

लेखक : बाल फोंडके

अनुवादक : शमशेर सिंह

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,

भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 240

मूल्य : रु. 320/-

## कब...50 दिलचस्प जवाबों के सवाल

ज्ञान पर कौतूहल के प्रश्नचिह्न लगाकर प्रयोग करके सोच समझ कर के तार्किक दृष्टि की कसौटी पर खरा उतार कर जब कोई बात, तथ्य या सिद्धांत स्वीकार्य होता है, तो वह विज्ञान का अंश बन जाती है और कालांतर में एक विशेष प्रतिपादन और वैज्ञानिक सिद्धांत भी। बाद में इन्हीं सिद्धांतों की मदद या आधार पर जब भावी विज्ञान में खोजें होती हैं तो यह विज्ञान संस्कृति बन जाती है। जी हाँ, समीक्षित

पुस्तक तो कमोबेश यही साबित करती है।

पुस्तक में लेखक ने प्रस्तावना में ही विज्ञान की मूल आत्मा को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है, यथा कब, कौन और कहाँ से और इसके साथ-साथ क्या, क्यों और कैसे इन आधारभूत सारगर्भित शब्दों में समेट कर एक मनोरंजक शिक्षाप्रद अंदाज में प्रस्तुत कर दिया है।

यहाँ पर एक और तथ्य जो बेहद प्रासंगिक है, उसका उद्धरण करना बहुत ही आवश्यक है और वह यह कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा ऐसे ही संबंधित विषयक मुद्दे बेहद सटीक और तार्किक अंदाज

से लिखे जाते हैं और समझे भी जाते हैं। इस पुस्तक में लेखक के द्वारा 50 दिलचस्प सवाल-जवाब की जुगलबंदी सजगता से पाठकों को परोसी गई है, इस आशय से कि लोकप्रिय विज्ञान में जटिल से जटिलतम विषयों, सवालों-जवाबों को बच्चों, किशोरों, युवाओं और आमजन को किस प्रकार से वैज्ञानिक सोच से ओत-प्रोत कर उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण सतत रूप से कैसे स्थापित किया जाए।

बाल फोंडके एक बहुसूत्रक और जाना-माना नाम हैं जो न केवल विज्ञान और सृजनात्मक लेखन में अपना अद्वितीय स्थान रखते हैं, वरन् विज्ञान संस्थानों के प्रशासनिक दायरों में भी इस व्यक्तित्व की चर्चा होती रही है या होती रहती है। अस्तु, यह पुस्तक इस बड़े वैज्ञानिक की प्रतिष्ठा के अनुरूप अनूदित हुई है और यह विज्ञान या स्पष्ट रूप से कहें तो लोकप्रिय विज्ञान के क्षेत्र में एक थाती के रूप में देखी जा सकती है।

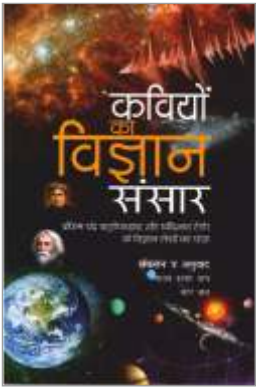
पाठकों के कौतूहल को बढ़ाने और उसे दिशा देने हेतु कुछ सवाल और जवाब यहाँ पर प्रस्तुत करने की जरूरत है। यथा, पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत कब हुई, समय की शुरुआत कब हुई, एटम युग का आरंभ कब हुआ, पक्षी कब गाते हैं, पत्ते रंग कब बदलते हैं, हमें स्वप्न कब आते हैं, ड्वेल मछलियाँ कब मरती हैं, वर्षा कब होती है, बिजली कब गिरती है, आदमी को नशा कब चढ़ता है, कृष्ण विवर टपकती हुई टोंटी की तरह कब बन जाता है, लिखाई की ईजाद कब हुई? और अंत में मानव जाति कब लुप्त होगी?

वस्तुतः विज्ञान को सत्य, तर्क और कठिन परीक्षण के बाद ही माना जाता है। यह विज्ञान को प्रचारित-प्रसारित करने का सबसे सशक्त और लागत की दृष्टि से सस्ता उपाय है, क्योंकि जीवन के प्रश्न और जरूरतें ही तो विज्ञान का मूलाधार हैं और इसी कड़ी में पुस्तक में कुछ विज्ञान से हटकर प्रश्नों को भी या जवाबों को भी स्थान दिया गया है, जैसे—वैन गॉग ने 'दी मून राइज चंद्रोदय' नामक चित्र कब बनाया था। पक्षी अपना स्थान कब बदलते हैं, बच्चा चेहरों को पहचानना कब शुरू करता है, सीमेंट मजबूती कब पकड़ता है, अग्नि की खोज कब की गई, महाभारत का युद्ध कब हुआ, कोई पूर्वाग्रह से ग्रस्त कब होता है और एक बेहद दिलचस्प प्रश्न और उतना ही दिलचस्प जवाब। यथा, '22 की संख्या शून्य के बराबर कब हो जाती है', वस्तुतः यह प्रश्न बिजनेस के दायरे का है जिसका उत्तर या व्याख्या बहुत ही मनोरंजक अंदाज में इस पुस्तक में दी गई है। मूलतः यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में लिखी गई है, परंतु राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने राजभाषा हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं पर भी प्रकाशन किया है और प्रस्तुत पुस्तक का गुणवत्तापूर्ण अनुवाद इस राष्ट्रीय संस्थान की कार्य संस्कृति का सजीव उदाहरण है।

यूँ भी हिंदी जगत के पाठकों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ज्ञान या तो पुराने विज्ञान और तकनीक की अंग्रेजी की पुस्तकों से

प्राप्त करना पड़ता रहा या फिर दोयम दर्जे के हिंदी अनुवाद से। परंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विज्ञान तथा तकनीक को शिक्षा क्षेत्र में हिंदी माध्यम से पढ़ाने की मुहिम का असर अब रंग ला रहा है और यह अनूदित पुस्तक कहीं-न-कहीं इस सुखद और उपयोगी परिवर्तन की ओर इशारा करती है।

वर्तमान परिस्थितियों में जबकि देश अब कोविड की गिरफ्त से निकल चुका है तब शैक्षिक संस्थानों में अब भौतिक कक्षाएँ लगनी शुरू हो गई हैं और पठन-पाठन सामग्री भी अब धीरे-धीरे उपलब्ध होने लगी है। अतः अब पुस्तकों का दौर लौट आया है और वह भी डिजिटल पुस्तकों के साथ, अस्तु यह पुस्तक स्कूल महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के साथ-साथ किशोरों, युवाओं, अनुसंधान क्षेत्र में पढ़ रहे युवा वर्ग के लिए किसी बेहतरीन सौगात से कम नहीं है। पुस्तक निस्संदेह रूप से खरीद कर पढ़ने की श्रेणी में आती है।



समीक्षक : डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल  
संकलन व संपादन :

सावन कुमार बाग तथा मेहेर वान  
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,  
भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 150

मूल्य : रु. 205/-

## कवियों का विज्ञान संसार

» प्रायः कवियों को भावनाओं का पुंज कहा जाता है क्योंकि वे अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील होते हैं, परंतु यह भी सच है कि अनेक ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों ने भी वैज्ञानिक विषयों पर आलेख लिखे हैं। वास्तव में सभी कल्पनाएँ एक-दूसरे की पूरक होती हैं और ज्ञान का सामूहिक भंडार मानव जाति के कल्याण हेतु जनमानस के लिए उपलब्ध रहता है। प्रकांड पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी यद्यपि प्रखर साहित्यकार थे, परंतु फिर भी उन्होंने वैज्ञानिक लेख भी लिखे। 'आँख' शीर्षक से उनका विस्तृत लेख आँख की बनावट, इसकी कार्यविधि तथा इसकी उपयोगिता की पृष्ठभूमि को रेखांकित करने की दक्षता का परिचायक है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी क्रोध, भय आदि उद्देश्यों पर कतिपय वैज्ञानिक लेख लिखे हैं, जो अपनी विवेचन क्षमता एवं विषय की गंभीरता के कारण चर्चित रहे हैं। इसी प्रकार बांग्ला की दो महान विभूतियों—बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी वैज्ञानिक लेख लिखे हैं, जो आम आदमी की शाश्वत जिज्ञासाओं से जुड़े हुए हैं।

जब से सृष्टि अस्तित्व में आई है तब से मनुष्य के मन में अनेक जिज्ञासाएँ रही हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कभी-न-कभी इस विषय पर चिंतन करता ही है कि सृष्टि की उत्पत्ति कब और कैसे हुई, आकाश क्या है और समुद्र के रहस्य क्या हैं? ग्रहों, नक्षत्रों की प्रासंगिकता क्या है, सूरज का आकार क्या है? आदि अनेक प्रश्न प्रायः उभरते रहते हैं और वैज्ञानिक इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने में लगे रहते हैं।

आलोच्य पुस्तक 'कवियों का विज्ञान संसार' में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के बांग्ला में रचित वैज्ञानिक लेखों का हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। अनुवाद दो प्रसिद्ध वैज्ञानिकों अर्थात् सावन कुमार बाग तथा मेहेर वान ने किया है, जो बहुत ही सटीक एवं सरल भाषा में हुआ है। बंकिमचंद्र के निबंध संग्रह 'विज्ञान रहस्य' में संकलित सौर महाविस्फोट, आकाश में कितने तारे हैं? धूल, हवाई यात्रा, चंचल जगत, मनुष्य कितना प्राचीन है, परिमाण रहस्य तथा ध्वनि विषयों पर लेख संकलित हैं। गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के परमाणु लोक, नक्षत्रलोक, सौर जगत, ग्रह लोक, भूलोक पर निबंधों के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम एक बहुत ही आत्मीय विनम्र पत्र भी प्रकाशित किया गया है। पत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर की विज्ञान के विषयों में रुचि, कौतूहल एवं व्यक्तिगत धारणा तथा वैज्ञानिकों के प्रति अथाह आदर की भावना निहित मिलती है। सागर की गहराई कितनी होती है, कितनी हो सकती है तथा किन-किन वैज्ञानिकों ने इस दिशा में प्रयत्न किए, उनमें से अधिकांश का उल्लेख पाठक को आत्मविभोर कर देता है।

हम प्रायः यह सोचते रहते हैं कि सूर्य का आकार-प्रकार क्या है, इसमें इतनी ऊर्जा आती कहाँ से है और चंद्रमा और पृथ्वी की स्थिति क्या है, इन बहुत सी बातों के बारे में दोनों महान कवियों ने अपने निबंधों में ज्ञानप्रद और निश्चित रूप से रोचक शैली में परिचय दिया है। इसी प्रकार हवाई यात्रा की परिकल्पना तथा समय-समय पर मनुष्य के निरंतर प्रयासों का वर्णन आस्वादपूर्ण भाषा में परोसा गया है। अणु और परमाणु के विषय में सारगर्भित सामग्री का साहित्यकारों की शब्दावली में उपलब्ध होना अपने आप में एक वरदान के समान है। सौर जगत, ग्रह लोक, धूल और ध्वनि के विषय में अनंत जिज्ञासाओं का शमन पुस्तक की प्रासंगिकता को सहज ही रेखांकित कर देता है।

संपादकों की विद्वत्ता, उनकी समझ एवं वैज्ञानिक प्रस्तुति में स्पष्ट झलकती है। यह पुस्तक दस्तावेजी पुस्तक है और निश्चित रूप से संग्रहणीय है।



समीक्षक : डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल

लेखक : शांतनु नायडू

अनुवादक : अखिलेश अवस्थी

प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस,  
भोपाल।

पृष्ठ : 218

मूल्य : रु. 399/-

## रतन टाटा : एक प्रकाश स्तंभ

शांतनु नायडू द्वारा रचित आलोच्य कृति 'रतन टाटा : एक प्रकाश स्तंभ' औपन्यासिक शैली में लिखी एक बेहद रोचक एवं आनंददायिनी कृति है, जो हर उस भारतीय युवक को पढ़नी चाहिए जो महत्वाकांक्षी है तथा अपने मनवांछित क्षेत्र में शिखरों को स्पर्श करने के लिए लालायित है। अनेक छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सोचते हैं, परंतु कई बार उन्हें अपने ध्येय की

स्पष्ट पहचान नहीं होती और वे भटकते रह जाते हैं, जबकि यह जरूरी है कि हर विद्यार्थी का अपना लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। सही विषय का चुनाव, आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता और श्रम की दृढ़ता का अहसास ही किसी भी व्यक्ति को सफलता के सोपान चढ़ने में सहायक हो सकता है।

शांतनु नायडू ऐसा ही एक महत्वाकांक्षी युवक है, जो जीवन में बहुत कुछ करना चाहता है और विशेष बात यह है कि वह जमीन से जुड़ा हुआ एक बेहद संवेदनशील व्यक्ति है। उसके मन में पशुओं के प्रति दया एवं सेवा भाव है। बहुत से निरीह जानवर सड़क दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं। आवारा कुत्ते, जिनका कोई मालिक या संरक्षक नहीं, को देखकर उसके मन में एक योजना पनपती है कि क्यों न कुत्तों के गले में ऐसे पट्टे डाल दिए जाएँ जो रात में चमकते हों और कार चालकों को दूर से ही सावधान कर दें कि सड़क पर कोई निरीह जानवर है। इस प्रकार कुछ सीमा तक निरीह जानवर बच सकेंगे। शांतनु ने अपना यह विचार पुणे में आजमाने का निर्णय लिया। अपने मित्रों के साथ उसने इसे कार्यान्वित कर दिया। परिणाम कुछ सीमा तक अनुकूल निकलते दिखाई दिए। फिर शांतनु नायडू ने उद्योगपति रतन टाटा से भेंट करने का निर्णय लिया। श्री रतन टाटा पशु प्रेमी हैं, यह शांतनु को ज्ञात था। उनकी योजना के विवरण से रतन टाटा से सकारात्मक और उत्साहवर्धक उत्तर मिले।

इसके बाद रतन टाटा के सौहार्द, उदारता एवं महानता की छवि सामने आती है। उनका पशुप्रेम, निरीह प्राणियों के लिए कुछ करने की आकांक्षा, किसी भी जरूरतमंद की सहायता करने की प्रवृत्ति किसी को भी विभोर कर देती है। प्रायः उद्योगपतियों के बारे में आम आदमी की

धारणा यही होती है कि उन्हें तो बस अपने लाभ से मतलब होता है, परंतु इस पुस्तक में जो चित्रण शांतनु नायडू ने श्री रतन टाटा का किया है, वह निश्चित रूप से आज के युग में किसी महामानव का ही हो सकता है। रतन टाटा का सहायता करने का सलीका और किसी प्रकार का भी दिखावा न करना, चुपचाप सहायता करना उनकी सदाशयता की पराकाष्ठा को दर्शाता है। ऐसे पुरुष दुर्लभ ही होते हैं। शांतनु के साथ बढ़ती उनकी प्रगाढ़ता, मित्रता बेमेल होते हुए भी सहज स्वाभाविक लगती है। टाटा का अपने वायदे का पक्का होना भी उनके व्यक्तित्व को निरंतर चमत्कृत करता है। असफल होने पर निराश न होने की नसीहत शांतनु को अंततः अमेरिका की कार्नेल यूनिवर्सिटी में एमबीए में प्रवेश दिलवा देती है। शांतनु अमेरिका में भी कुत्ते का बच्चा पालता है और डिग्री पूरी होने पर वह उसे अपने साथ भारत ले आता है। अमेरिका में मोटर साइकिल लेकर जाना दूसरों को मुश्किल लगता था, परंतु शांतनु को सहज लगा।

भारत लौटने पर शांतनु टाटा समूह के ट्रस्ट में ही अपना स्थान ढूँढ़ता है और रतन टाटा उसे उपयुक्त सम्मान देते हैं, प्रशिक्षण कराते हैं और फिर वह ट्रस्ट में महत्वपूर्ण स्थान पर आसीन हो जाता है। रतन टाटा उसे अपने साथ ही रखते हैं और वह ट्रस्ट की गतिविधियों में खप जाता है। अनेक प्रसंगों में रतन टाटा की जीवन-शैली का चित्रण बहुत ही रोचक एवं अनेक शिक्षाओं से भरा हुआ है। जो छात्र विदेश में जाकर एमबीए या कोई और डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। कार्नेल कैम्पस का चित्रण भी ज्ञानप्रद एवं लुभावना है। रतन टाटा के कुत्तों—टैंगो और टीटो की पुस्तक में उपस्थिति भी उनके पशुप्रेम को दर्शाती है। पशुओं से संबंधित उनकी एक परियोजना जो वर्षों से लटकी हुई थी, उसे संचालित करने में शांतनु नायडू का योगदान भी उल्लेखनीय है।

पुस्तक में लेखक की शैली एक सृजनशील साहित्यकार की शैली का आनंद देती है। आम आदमी का डर, उसकी भावानुभूतियाँ बड़े ही मनोविश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। आलोच्य पुस्तक के शीर्षक को लेकर पाठक के मन में संशय उत्पन्न होता है, क्योंकि यह पुस्तक समग्रतः रतन टाटा की जीवनी नहीं है, उनके आश्रय या संरक्षण में फल-फूल रहे शांतनु नायडू के संघर्ष एवं सफलता की कहानी है। कैसे वह अपने मन में महत्वाकांक्षाएँ पाले हुए हैं और किस प्रकार वह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से अस्वीकृत होने पर फिर कार्नेल विश्वविद्यालय में एमबीए की डिग्री प्राप्त करते हैं। वास्तव में रतन टाटा का पूरा विवरण इसमें नहीं है। हाँ, एक अच्छी झलक जरूर मिलती है। पुस्तक जिसने एक बार पढ़नी शुरू कर दी, वह इसे अंत तक पढ़े बिना छोड़ नहीं पाएगा। यही लेखक की अन्यतम उपलब्धि है। अखिलेश अवस्थी का हिंदी अनुवाद सटीक एवं विद्वतापूर्ण है। संजना देसाई का चित्रांकन मनमोहक है।



समीक्षक : नीरज कुमार मिश्र

संचयन : कुसुमलता सिंह

संपादक : श्रीधर मिश्र

प्रकाशक : लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस,  
नई दिल्ली।

पृष्ठ : 580

मूल्य : रु. 850/-

## राघवचेतन राय : रचना समग्र

» कुछ रचनाकार ऐसे होते हैं, जो बिना शोर-शराबे के अपने रचना-कर्म में रत रहते हैं। साहित्यिक कर्म ही उनका जुनून बनकर उनकी कलम के माध्यम से शब्दबद्ध होता है। कोई भी सजग रचनाकार जब रचना करता है, तो वह सबसे पहले अपने लिए रचना करता है, यानी अपनी आत्मसंतुष्टि के लिए रचना करता है। अज्ञेय ने बहुत स्पष्टता के साथ रचनाकार की आंतरिक विवशता को इस सवाल का

जवाब देते हुए अपने लेख 'मैं क्यों लिखता हूँ' में उजागर किया, "मैं इसलिए लिखता हूँ कि स्वयं जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ, लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है। लिखकर ही लेखक उस अभ्यांतर विवशता को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है। मैं भी उस आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए, तटस्थ होकर उसे लिखने और पहचानने के लिए लिखता हूँ।" राघवचेतन राय ऐसे ही साहित्यानुरागी और संवेदनशील साहित्यकार थे, जो अपनी आंतरिक विवशता को दूर करने के लिए रचनारत थे। वह सभी विधाओं का गहन चिंतन-मनन और अध्ययन करने के बाद अपनी साहित्यिक अभिरुचि के अनुरूप अपनी विधा को चुनकर बिना शोर-शराबे के चुपचाप उसे रचते रहते। राघवचेतन राय बहुत संकोची प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अपनी रचनाओं को किसी पत्र-पत्रिका में भेजने में बहुत संकोच करते थे। साहित्यकारों के बीच बैठना-उठना, उनसे घंटों साहित्यिक-चर्चा करना उनको बहुत प्रिय था। उनकी इस साहित्यिक अभिरुचि को कुसुमलता सिंह अच्छे से जान गई थीं। तभी जीवनपर्यंत आगे बढ़ाने के साथ उसे समृद्ध करने में लगी रहीं। आज राघवचेतन राय हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका विपुल साहित्य अलग-अलग जगह बिखरा पड़ा था। उसे दस्तावेज के रूप में एक जगह संकलित करना आज की आवश्यकता थी। इस जरूरत को उनकी पत्नी एवं 'ककसाड़' पत्रिका की प्रधान संपादक कुसुमलता सिंह ने समझा और पुस्तक के रूप में लाने का

बीड़ा उठाया। राघवचेतन राय रचना समग्र पुस्तक इसी का प्रतिफल है। इस पुस्तक की सामग्री का संचयन कुसुमलता सिंह ने और संपादन कवि और आलोचक श्रीधर मिश्र ने किया है। इस पुस्तक का पहला खंड राघवचेतन राय की कविताओं पर केंद्रित है। इस खंड में उनके तीन कविता संग्रह 'वह गिरी बेचने वाला लड़का', 'वंचितों का निर्वाचन क्षेत्र' और 'बहनें अब घर में नहीं हैं' में संकलित कविताओं में से कुछ चुनिंदा कविताओं को रखा गया है। दूसरा खंड उनकी कहानियों पर केंद्रित है। तीसरे खंड में उनके लिखे महत्वपूर्ण लेखों को संकलित किया गया है। चौथा खंड उनके द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं में लिखे संपादकीय पर केंद्रित है। पाँचवाँ खंड साक्षात्कार पर आधारित है। छठे खंड में स्वरचित कविताओं के अनुवाद को रखा गया है। सातवाँ खंड उनके द्वारा की गई दूसरी भाषाओं की कविताओं के अनुवाद का संकलन है। आठवें खंड में अनेक पुस्तकों की भूमिका और नौवें खंड में उनकी कुछ फुटकर रचनाएँ और पत्र शामिल हैं।

राघवचेतन राय मूलतः कवि थे। इसलिए उनकी कविताओं में हमारे समाज के अनेक चित्र अपनी पूरी विडंबना के साथ आपको दिखाई देंगे। राघवचेतन राय सही मायने में सामाजिक सरोकारों से जुड़े कवि थे। समाज का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसको केंद्र में रखकर कवि राघवचेतन राय ने अपनी कलम न चलाई हो। राघवचेतन राय की जीवन दृष्टि की गहन पड़ताल उनकी कविताओं में देखने को मिलती है। इस कवि की कविताओं में उनका आत्मकथ्य मानुष सच के साथ प्रतिबिंबित होता है। राघवचेतन राय ने 'कविता क्या है' नामक आत्मकथ्य में कविता की प्रकृति को बहुत सजीवता के साथ उजागर किया है। यह पुस्तक सही मायने में उनके रचनात्मक संसार का जीवंत दस्तावेज है।

इस संकलन में आपको उनके कवि, कथाकार, आलोचक, विचारक, अनुवादक, संपादक जैसे अनेक रूप देखने को मिल जाएँगे। उनका रचना संसार एक बहुआयामी व्यक्तित्व के साहित्य साधक की अक्षर देह है। आत्म प्रचार के संकोच के कारण राघवचेतन ने जीते जी अपने इन मूल्यवान साहित्यिक अवदानों के प्रकाशन, चर्चा-परिचर्चा के प्रति कोई विशेष रुचि नहीं ली, लेकिन इससे इन महत्वपूर्ण रचनाओं का महत्व कम नहीं हो जाता। समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में एक समर्थक कथाकार एवं सुधी चिंतक, विचारक के रूप में अभी उनका मूल्यांकन किया जाना शेष है।

आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस रचना संसार के माध्यम से साहित्य जगत राघवचेतन राय का सम्यक मूल्यांकन कर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेगा। इसकी भाषा बहुत सहज, सरल और सुबोध है।



समीक्षक : जनार्दन मिश्र

लेखक : देवदत्त पट्टनायक

अनुवादक : नीलम भट्ट

प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस,  
भोपाल।

पृष्ठ : 164

मूल्य : रु. 250/-

## धन का भारतीय दृष्टिकोण सक्सेस सूत्र

वेद परंपरा के प्रमुख देवता हैं—गणेश (प्रथम पूज्य), लक्ष्मी, विष्णु, शंकर, सरस्वती, दुर्गा, इंद्र आदि। हमारे पुराणों में सनातन सत्य छिपा हुआ है। वरुण के हजार नयन तथा इंद्र के सौ नयन की बात कही गई है, पर हमारे पास, यानी हर व्यक्ति के पास सिर्फ दो नयन हैं। 50 से अधिक पुस्तकों के लेखक देवदत्त पट्टनायक की अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पुस्तक 'The Success

Sutra' का हिंदी अनुवाद नीलम भट्ट ने 'धन का भारतीय दृष्टिकोण सक्सेस सूत्र' नाम से किया है। पट्टनायक की मशहूर बेस्ट सेलर बिजनेस सूत्र से प्रेरित यह पुस्तक प्रबंधन व बिजनेस पर आधारित है, तथा धन व सफलता को सृजित करने के बारे में अंतर्दृष्टियों से भरपूर है। पट्टनायक की गिनती एक मशहूर लेखक, पुराण-विद्या विशेषज्ञ तथा लीडरशिप सलाहकार के रूप में होती है।

अनुक्रम की बात करें तो इस पुस्तक में सात शीर्षक हैं—'सक्सेस सूत्र', 'निर्णय', 'हिंसा', 'प्रलोभन', 'मंथन', 'निष्कर्ष' एवं 'नोट्स'। जिसके अंतर्गत लेखक ने वेद-पुराण, उपनिषद्, जातक कथाओं आदि में वर्णित देवताओं, पात्रों के माध्यम से धन तथा सफलता सृजित करने के उपाय बताए हैं। इस पुस्तक में विचार 'सूत्र' के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। सूत्र एक धागा है, जो विभिन्न बिंदुओं को जोड़कर एक नमूना तैयार करता है। यह पुस्तक जैन, हिंदू (सनातन) और बौद्ध परंपराओं के असंख्य विचारों को एक साथ बाँधती है, ताकि भारतीय तरीके को समझने के लिए एक समन्वित समष्टि की रचना की जा सके।

लेखक का मानना है कि सक्सेस सूत्र चार तरह के होते हैं—निर्णय, हिंसा, प्रलोभन और मंथन। यज्ञ में सबसे महत्वपूर्ण है, निर्णय। अग्नि में आहुति देने की इच्छा। एक बार आहुति दिए जाने पर उसे वापस नहीं लिया जा सकता। जाहिर है, हर आदमी में निर्णय लेने का साहस नहीं होता। बहुत कम लोग होते हैं, जो निवेश की लागत और अप्रत्याशित परिणामों के लिए उत्तरदायी होना चाहते हैं। मानव ही ऐसा प्राणी है, जो निर्णय लेने का काम किसी और को दे सकता है और देता भी है।

निर्णय वाला कर्ता होता है। हर कोई संभावित कर्ता है। हर इंसान के मन-मस्तिष्क की तुलना मिथकीय सर्प-अनंत-शेष से की जा सकती है। जानवर हर समय निर्णय लेते हैं। केवल मानवों के पास यह विकल्प होता है कि वे निर्णय स्वयं न लेकर निर्णय लेने का काम किसी और को सौंपकर उसे कर्ता बना देते हैं और अपने कार्यकर्ता बन जाते हैं। राम ताड़का को इसलिए नहीं मारना चाहते हैं कि हमें स्त्री मारने की शिक्षा नहीं दी गई है, पर विश्वामित्र उन्हें समझाते हैं कि अपराधी को स्त्री या पुरुष की श्रेणी में बाँटकर नहीं देखना चाहिए। तब राम ताड़का का वध कर देते हैं। ऐसे ही राम पत्थर बनी अहिल्या को पैर से स्पर्श करना उचित नहीं मानते हैं, पर विश्वामित्र उन्हें समझाते हैं कि तुम्हारे पैर का स्पर्श पाकर ही अहिल्या श्रापमुक्त होंगी और राम अपने चरण स्पर्श से पत्थर बनी अहिल्या का उद्धार करते हैं।

महाभारत में पांडवों को 'खांडवप्रस्थ' नामक एक वन विरासत में मिला है। वहाँ वे इंद्रप्रस्थ यानी इंद्र की नगरी बनाना चाहते हैं। अतः कृष्ण कहते हैं, वन को जला दो। हर पौधे, पशु-पक्षी व कीट-पतंगों को आग लगा दो। जब पांडव इस सुझाव पर अपना भय व्यक्त करते हैं, तो कृष्ण कहते हैं, नगर बनाने का स्पष्ट त्याग दो।

भले पांडवों एवं कृष्ण के बीच इस रूप में संवाद न हुआ हो, पर इतना तो तय है कि खांडवप्रस्थ को जलाने में अनेक जीव-जंतुओं का संहार हुआ होगा, तब जाकर इंद्रप्रस्थ बना होगा।

व्यवसाय प्रलोभन है। भूख को संतुष्ट करने वाला वांछनीय बन जाता है। हर देवता की भूख अनोखी है। उसी तरह व्यवसाय से जुड़े हर कर्मचारी की भूख भी अलग-अलग होती है और सफल व्यापार के लिए सबकी भूख की तृप्ति होनी चाहिए, जैसे हर देवता का संदर्भ के अनुसार महत्व होता है, उसी तरह व्यवसाय से जुड़े हर व्यक्ति का काम के अनुसार महत्व होता है।

व्यवसाय उद्योग का अंतिम चरण 'मंथन' होता है। कोई भी संगठन विभिन्न शक्तियों से बना होता है। उत्पादन, मार्केटिंग, बिक्री, ऑडिट, वित्त, लॉजिस्टिक्स आदि। लॉजिस्टिक्स का अर्थ है एक ऐसी प्रक्रिया, जिसके अंतर्गत माल, सेवाओं या सूचनाओं को योजनाबद्ध तरीके से उसके उत्पत्ति वाले स्थान से उपयोग वाले स्थान पर भेजना। मंथन के दौरान यह जानना आवश्यक है कि कब पकड़ को ढीला करना है, वरना मंथन का काम रस्साकशी में बदल जाएगा और संगठन किसी युद्ध भूमि में बदल जाएगा।

इस पुस्तक में अग्नि, अमरावती, अंकुश, असुर, अवसर्पिणी, अवतार, बलि, भगवान, भव, भीम, भोग, भोज, ब्रह्मा, ब्रह्मांड, चक्रवर्ती, चंद्र, चतुर्भुज, दक्ष, दर्शन, देव, देवता, गौरी, गोलोक, गोबर, गणेश, हनुमान आदि को व्यापार एवं पारंपरिक संदर्भ से जोड़कर व्यवसाय एवं उद्योग के सभी गूढ़-तत्वों की व्याख्या की गई है। समग्रता में यह पुस्तक धन व सफलता प्राप्त करने की कुंजी है।



समीक्षक : जनार्दन मिश्र  
लेखिका : पद्मा चौगांवकर  
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन,  
जयपुर।  
पृष्ठ : 60  
मूल्य : रु. 100/-

## अनदेखे रंग

» पद्मा चौगांवकर की पुस्तक 'अनदेखा रंग' में कुल 13 बाल कहानियाँ संकलित हैं। उनकी मातृभाषा मराठी है, परंतु गत पाँच दशकों से बाल साहित्य की अनेक विधाओं में मराठी के साथ-साथ हिंदी में भी उनकी रचनाएँ निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, बालहंस, मेला, सुमन सौरभ, मुक्ता आदि पत्रिकाओं में 325 से ऊपर उनकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक है—'पानी की दीवार'। बालमन बड़ा कोमल होता है। अपने प्रिय के स्थान पर किसी और को देखना उसे अच्छा नहीं लगता। यदि बच्चे की मातृभाषा में प्यार-दुलार से बात करने वाली शिक्षिका का दूसरे स्कूल में तबदला हो जाए और उस जगह पर किसी अन्य प्रदेश की गैर-मातृभाषा से जुड़ी शिक्षिका आ जाए, तो बच्चे के कोमल मन पर बड़ी ठेस पहुँचती है। इस कहानी में छोटी बच्ची दीपिका का मन कैसे गलत धारणाओं का शिकार हो जाता है और कैसे नई शिक्षिका के व्यवहार से उसकी गलतफहमी दूर होती

है। इस तथ्य को इस कहानी में बहुत ही सरल-सहज शब्दों में दर्शाया गया है।

हमारे देश में 'नई माँ' यानी सौतेली माँ को लेकर अनेक किस्से कहानियाँ हैं। अधिकांश कहानियों में नई माँ को क्रूर स्वभाव वाली के रूप में पेश किया जाता है। छोटे बच्चे सौतेली माँ शब्द सुनकर ही डर जाते हैं। यदि नई माँ (सौतेली माँ) को दो-तीन साल में अपनी कोख से भी एक-दो बच्चे हो गए, तो सौतेली बेटी के प्रति उसकी क्रूरता और बढ़ जाती है।

सौतेली बेटी को भरपेट खाना न देना, किसी-न-किसी बात को लेकर उसे हमेशा डाँटते-फटकारते रहना, फल, मिठाई खिलौने की बात तो दूर पहनने-ओढ़ने के लिए बिलकुल साधारण कपड़े देना, दस-बारह साल के होने पर बराबर घरेलू कामों में लगाए रखना, अपने बच्चों को अतिशय प्यार देना, इस तरह की अनेक कहानियाँ गढ़ी गई हैं। इसमें कुछ सच्ची भी होती हैं।

इस कहानी में सौम्या की जब नई माँ आती है, तो अपनी सहपाठी की माँ के मुँह से सौतेली माँ का सौतेले बच्चे के प्रति बात-व्यवहार के बारे में सुनकर वह डर जाती है, फिर स्कूल में शिक्षिका द्वारा सौतेली माँ की सताई 'सिंझेला' की कहानी सुनकर सौम्या और डर जाती है, पर उसके दिल में सौतेली माँ के प्रति कैसे ममत्व जागता है? बहुत मार्मिक ढंग से इस महानी में उकेरा गया है।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ मनोरंजन के साथ-साथ कल्पना की दुनिया में सैर कराती हुई अप्रत्यक्ष रूप में बच्चों को सामाजिक प्राणी के रूप में संस्कारित करती हैं। कहानियों में चित्रांकन विषयानुकूल है।



समीक्षक : डॉ. रमेश तिवारी  
लेखक : रणविजय राव  
प्रकाशक : भावना प्रकाशन, दिल्ली।  
पृष्ठ : 120  
मूल्य : रु. 325/-

## लोकतंत्र की चौखट पर रामखेलावन (व्यंग्य-संग्रह)

» 'लोकतंत्र की चौखट पर रामखेलावन' रणविजय राव का पहला व्यंग्य-संग्रह है। इस संग्रह में कुल 29 व्यंग्य रचनाएँ हैं। व्यंग्य के प्रति अपनी समझ और व्यंग्य-लेखन के बारे में रचनाओं से पूर्व लेखकीय अभिव्यक्तिपरक आलेख भी महत्वपूर्ण है। 'हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी के बाद अब प्रेम जनमेजय, हरीश नवल और ज्ञान चतुर्वेदी एवं अन्य अनेक

व्यंग्यकारों ने जो लीक बनाई, उस पर चलने की मेरी कोशिश मात्र है।' इस आत्मस्वीकृति को इस रूप में समझने की आवश्यकता है कि लेखक ने अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से सृजन संस्कार ग्रहण करने की कोशिश की है। इस संस्कार का वह करना क्या चाहता है, यह आगे उद्धृत है। "मेरा यह प्रयास रहा है कि उनके बनाए मार्ग पर पहुँचने के लिए व्यंग्य के टूल कुदाल, फावड़े लेकर मैं अपनी पगडंडी बनाऊँ और उस पर अग्रसर होऊँ।" इस उद्धरण से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि पुरखों से प्रेरणा लेते हुए उनके मार्ग का अनुसरण करने की सोचते हुए भी लेखक उस मार्ग तक पहुँचने के लिए पगडंडी, यानी जो वह अपनी मेहनत से बनाने में सक्षम हो सके, उसी को महत्वपूर्ण मानता है। एक नए लेखक के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वह किसी प्रकार के शॉर्टकट में पड़े बिना रचनात्मकता के महत्व को समझे और ईमानदारी से लेखन में प्रवृत्त हो।

व्यंग्य-संग्रह के शीर्षक से स्पष्ट है कि इसमें रामखेलावन प्रमुख पात्र बनकर उभरा है। लेखक इस पात्र के बारे में लिखता है कि "मेरे व्यंग्य आलेखों का प्रमुख पात्र है रामखेलावन, जो एक आम आदमी

का प्रतिनिधित्व करता है। इसे पढ़कर यह समझना ठीक होगा कि लेखक का सरोकार और संलग्नता आम आदमी के साथ है, न कि आभिजात्य के प्रति।”

संग्रह की दूसरी रचना है ‘होइहि सोइ जो राम रचि राखा’। इस रचना में मध्यवर्ग की अकर्मण्यता पर लेखक ने करारा प्रहार किया है। “हम आम लोग बैल से भी गए गुजरे हो गए हैं। नया बछड़ा कम-से-कम हल या बैलगाड़ी में जुतने से पहले अपनी जवानी के गुबार में झटका जरूर मारता है या झटक कर जुआठ फेंकने की कोशिश करता है या फिर जिदियाए बच्चे की तरह बैठ जाता है। हम तो ऐसा कुछ भी नहीं करते। अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार आदि न जाने कितनी तरह की अमानवीयता हम खुली आँखों से देखते हैं और नजरें घुमा लेते हैं।” इस उद्धरण में लेखक ने आमजन की सुविधापरस्ती और नाकारापन के कारण उसे बैल से भी गया-गुजरा बताया है।

इस संग्रह की कई रचनाएँ कोरोना काल में रची गई हैं। चूँकि लेखक का यह पहला संग्रह है इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान समय में घटित होने वाली घटनाओं का रचनाकार के लेखन पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ रहा होगा और किसी-न-किसी

रूप में उनकी प्रतिछवि रचनाओं में भी देखी जाती होगी। इस संग्रह की आखिरी रचना इस दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आज जो समय, समाज है, उसमें एक आम आदमी क्या सोचता है, कैसे सोचता है और क्यों सोचता है? इन सबके पीछे की बारीकियाँ क्या हैं? इसे समझने के लिहाज से भी यह रचना एक प्रकार से आई ओपनर यानी आँखें खोलने वाली रचना के रूप में पठनीय है। रचना का शीर्षक है—‘रामखेलावन को डरना जरूरी है’। हालाँकि यह डर कोरोना नामक वैश्विक महामारी के कारण है और वाजिब है, फिर भी यदि इस शीर्षक को व्यापक अर्थों में देखें तो यह संग्रह और लेखन एक विस्तृत व्याख्या की माँग करते हैं। कोरोना काल में क्या गरीब, क्या अमीर, हर कोई डर से अपने घर में व्यस्त और सुरक्षित रहने में ही यकीन रखता था, इसलिए यह शीर्षक केवल रामखेलावन के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए फिट बैठता है।

रणविजय राव व्यंग्य के क्षेत्र में नए हस्ताक्षर हैं। यह उम्मीद है कि समय के साथ-साथ व्यंग्य के प्रति इनकी समझ और अधिक परिपक्व होगी। इस संग्रह के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस मनोभाव, संकल्प और ईमानदारी के साथ व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में इन्होंने पहला कदम रखा है, वह बेहद आशान्वित करने वाला है।



समीक्षक : डॉ. रमेश तिवारी

लेखक : धर्मपाल महेंद्र जैन

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

पृष्ठ : 136

मूल्य : रु. 260/-

## भीड़ और भेड़िए

» धर्मपाल जैन हिंदी व्यंग्य के उन प्रमुख प्रवासी रचनाकारों में हैं जो विदेश में रहकर भी मानव समाज और घटनाक्रमों को केंद्र में रखकर व्यंग्य रचने में बेहतरीन दखल रखते हैं। इनका अद्यतन प्रकाशित व्यंग्य संग्रह है—भीड़ और भेड़िए। इनके व्यंग्य लेखन पर विचार करते हुए इस व्यंग्य-संग्रह को पढ़ा जाए तो उसमें ‘मेरी वैचारिक दृष्टि’ शीर्षक से एक आरंभिक आलेख विशेष रूप से विचारणीय है। इस आलेख में

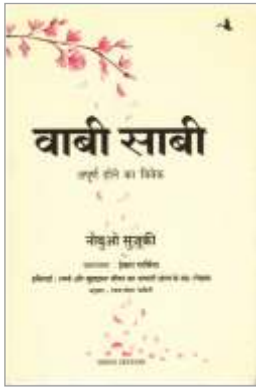
लेखक ने लिखा है, “व्यंग्य का विद्यार्थी बने मुझे 40 साल से अधिक हो गए।” इस पंक्ति से यह आशय समझा जा सकता है कि 1980 के दशक में धर्मपाल जी ने व्यंग्य लिखना शुरू किया है।

इस व्यंग्य-संग्रह में कुल 52 रचनाएँ संकलित हैं। भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली से इस संग्रह का प्रकाशन किया गया है। ‘भीड़ और भेड़िए’ शीर्षक से एक व्यंग्य भी इस संग्रह में संकलित है। ‘भीड़ और

भेड़िए’ प्रतीकों के माध्यम से लेखक ने वर्तमान परिदृश्य का खाका खींचने की कोशिश की है। इस रचना का आरंभ अत्यंत रोचक एवं कथात्मक है। “भेड़ें आदमी नहीं बन सकतीं। इसका यह मतलब नहीं है कि आदमी भेड़ नहीं बन सकता।” इस आरंभ से लेखक यह संकेत कर देता है कि उसकी इस रचना की जमीन क्या रहने वाली है। भेड़ और इंसान के बहाने दोनों की प्रवृत्तियों की पहचान और मानवीय कमजोरियों पर सांकेतिक प्रहार की दृष्टि से यह रचना अत्यंत प्रभावी है। रचना में आगे लेखक लिखता है, “आदमी भेड़ क्या भेड़िया भी बन सकता है और चमचमाता बिस्कुट दिखा दो तो मेमना भी बन सकता है। कोई आदमी भेड़िया बन जाए तो वह अपनी जमात में सुपरलेटिव हो जाता है। वह कृपानिधान बनकर अपने आगे-पीछे घूम रहे लोगों को भेड़ बना लेता है। लोगों को डराकर रखो तो वे जल्दी भेड़ बनते हैं। जितना ज्यादा डर उतनी ज्यादा निष्ठावान भेड़ें। भेड़ों को इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि डर आभासी है या रियल। डराने के लिए डर का भ्रम भी पर्याप्त है। वास्तविक डर की बजाय आभासी डर फैलाना और बनाए रखना सहज है। “मेरी समझ से यहाँ ‘सहज’ की जगह ‘सरल’ शब्द का प्रयोग किया जाता तो अधिक उपयुक्त होता। इसके बाद लेखक लिखता है—यह आदमी को भीड़ में बदलने का कामयाब फॉर्मूला है।” भीड़ का भेड़ बन जाना और हमारे बीच से ही किसी का भेड़िया बन जाना हमारे जमाने का सच है। यही सच विद्रूप के रूप में लेखक देखता है और इस रचना के मूल में इसी विद्रूपजन्य विसंगति को चित्रित करना है। लेखक अपने उद्देश्य में सफल रहा है।

इस संग्रह की एक अन्य रचना है 'प्रजातंत्र की बस'। भारत, जिसे हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में जानते हैं, लेखक ने उसी देश के प्रजातंत्र की वास्तविक स्थितियों का चित्रण इस व्यंग्य रचना के सहारे किया है। लेखक बेशक देश के बाहर रह रहा है, किंतु यह रचना देश के घटनाक्रमों और हालातों की वास्तविक तस्वीर पाठकों के सामने रखने में सफल है। रचना का आरंभ रोचक और दर्शनीय है—“प्रजातंत्र की बस तैयार खड़ी है। सरकारी गाड़ी है, इसलिए 'धक्का परेड' है। धक्का लगाने में लोग जोर-शोर से जुटे हैं।...पर बस है कि टस से मस नहीं हो रही।...दायीं तरफ से आईएएस धक्का लगा रहे हैं। बायीं तरफ मंत्रीगण लगे हैं। पीछे से न्यायपालिका 'दम लगा के हाइशा' बोल रही है और आगे से असामाजिक तत्व बस को पीछे ठेल रहे हैं। लोग सात दशकों से पुरजोर धक्का लगा रहे हैं, पर गाड़ी साम्य अवस्था में है।”

अजीब बिडंबना है कि जो भी असामाजिक तत्व हैं, वे प्रजातंत्र की बस के आगे खड़े हैं और बस को आगे की बजाय पीछे की ओर धकेलने में जी-जान से लगे हैं। इसके अतिरिक्त आईएएस, मंत्रीगण प्रजातंत्र की बस को जोर लगाकर ठेल तो रहे हैं, किंतु प्रजातंत्र की बस को आगे बढ़ाने के लिए इनका जोर पर्याप्त नहीं है। यही असल विसंगति है। यही हाल पिछले सात दशकों से चला आ रहा है। इन दो रचनाओं के विश्लेषण के द्वारा यह कहा जा सकता है कि धर्मपाल महेंद्र जैन अपने व्यंग्य लेखन में न सिर्फ वैचारिक रूप से बहुत स्पष्ट दृष्टि रखते हैं, बल्कि शिल्पगत दृष्टि से भी उनकी भाषा-शैली, शब्द-चयन आदि विषयवस्तु के अनुरूप हैं। मुझे उम्मीद है कि पाठक जगत इस व्यंग्य-संग्रह का स्वागत करेगा और लेखक भविष्य में और बेहतरीन व्यंग्य-रचनाओं से पाठक समाज को लाभान्वित करेगा।



समीक्षक : सुधांशु गुप्ता

लेखक : नोबुओ सुजूकी

अनुवादक : रचना भोला 'यामिनी'

प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस,  
भोपाल।

पृष्ठ : 172

मूल्य : ₹. 399/-

## वाबी साबी अपूर्ण होने का विवेक

» आप एक नौकरी चाहते हैं, नौकरी मिल जाती है तो आप उससे बेहतर नौकरी की उम्मीद करने लगते हैं, बेहतर नौकरी मिलती है तो आप उससे भी बेहतर की अपेक्षा करते हैं। लगभग यही स्थिति मकान को लेकर होती है। पहले मकान चाहिए, फिर उससे बेहतर और बड़ा मकान...फिर भव्य मकान। यानी इच्छाओं का कभी अंत नहीं होता। निरंतर आप असंतुष्ट बने रहते हैं। इस अपूर्णता और असंतोष की

स्थिति से आप कैसे बच सकते हैं? वास्तव में 'वाबी साबी' एक जापानी दर्शन है। यह दर्शन बहुत सरल और आसानी से समझ आने वाली शैली में हमें दिखाता और सिखाता है कि अपनी अपूर्णता और अस्थायित्व को स्वीकार करने से किस तरह और बेहतर होने की कोशिश से बचा जा सकता है। जापानी लेखक नोबुओ सुजूकी की लिखी पुस्तक 'वाबी साबी' अपूर्णता के दर्शन पर लिखी गई है। 'वाबी साबी' एक जापानी दर्शन है, जो बताता है कि सभी चीजों को उसी तरह अधूरा, अपूर्ण और अस्थायी होना चाहिए, जैसी वे हैं और इसमें जीवन के वे सभी आयाम सम्मिलित हैं, जिनमें रचनात्मक से लेकर आध्यात्मिक पहलू तक शामिल हैं। अपूर्णता के इस जादू को लेखक ने तीन नियमों में बाँटा है—कुछ भी संपूर्ण नहीं है, कुछ भी समाप्त नहीं

है और कुछ भी सदा नहीं रहता। वह कहते हैं कि अधूरेपन का ज्ञान होने पर हम विनम्र बनते हैं, कठोरता और रूढ़िवादिता के कारण हम जीवन का रस नहीं ले पाते और जो भी मौजूद है, उसकी प्रकृति अस्थिर है। यह अकारण नहीं है कि जापानी सुंदरता की अवधारणा में जिस तरह टूटे हुए खराब प्याले को सबसे अमूल्य माना जाता है, एक नंगी शाखा से गिरता हुआ सूखा पत्ता, किसी हरे-भरे फूलों से लदे बाग से अधिक गतिशील होता है। नोबुओ सुजूकी किताब में लिखते हैं, 'वाबी साबी' मेरे अपने अस्तित्व को महसूस करने और संसार के साथ पूरे सामंजस्य, गरिमा तथा शांतिपूर्वक पेश आने का तरीका है। वाबी साबी दर्शन क्या है, वाबी साबी कला क्या है और वाबी साबी जीवन दर्शन के रूप में किस तरह काम करता है, इन सब सवालों के जवाब बहुत सहज और सरल तरीके से समझाए गए हैं। वाबी साबी की अवधारणा का उत्स कहें हैं, इसकी खोज करते हुए लेखक कहते हैं, वाबी साबी की परिभाषा नहीं दी जा सकती और यह एक तरह से मेरी भाषा के लिए अवमानना के समान होगा। हम जापानी अपनी भाषा और सामान्यतः जीवन के प्रति अस्पष्टता को पसंद करते हैं। अस्पष्टता सुंदर है क्योंकि यह सदा संभावनाओं के द्वार खुले रखती है। इस किताब में यह बताया गया है कि जापानी अपने दैनिक जीवन में वाबी साबी का अनुभव कैसे करते हैं। दरअसल वाबी साबी एक जीवन शैली है। वाबी साबी जीवन और ब्रह्मांड को देखने का एक नज़रिया है, जिसका प्रमुख सिद्धांत इस संसार की हर अस्थायी प्रकृति की वस्तु और अपूर्णता को स्वीकार कर रहा है। यही अधूरेपन, अस्थायित्व और अपूर्णता का सौंदर्य है।

जापानी समाज के लिए प्रसन्न रहने का उपाय केवल और केवल यही है कि वे इस तथ्य को जानते हैं कि सब-कुछ अपने प्रवाह में बहता है। यही अनुभूति बौद्ध चिंतन में से एक है, जिसे जापान में ज़ेन के रूप में माना जाता है और इसे ही जीवन की प्रथम कुंजी कहते हैं। पुस्तक में जीवन के लिए बौद्ध धर्म की तीन कुंजियाँ—अस्थायित्व,

कष्ट और शून्यता के विषय में दी गई हैं, जो आपके लिए भी प्रसन्नता के द्वार खोलती हैं। पुस्तक में वाबी साबी को एक जीवन शैली के रूप में किस तरह स्वीकार करना चाहिए, इस पर भी विस्तार से बात की गई है। एक कथा के माध्यम से लेखक ने बताया है कि अपूर्णता ही श्रेष्ठता का मार्ग है। एक किसान अपने खेत के पास वाले नाले से पानी की दो बाल्टियाँ गरदन पर एक डंडा रखकर दोनों ओर लटका लेता। एक दिन वह देखता है कि एक बाल्टी में छेद हो गया है और खेत तक पहुँचने तक बाल्टी आधी खाली हो जाती है। जो बाल्टी पूरा पानी भरकर लाती थी, उसे अपने पर घमंड हो गया। वह हर दिन दूसरी बाल्टी को दोष देती। आधे से भी कम पानी लाने वाली बाल्टी उदास रहने लगी। एक दिन किसान आधे से भी कम पानी लाने वाली बाल्टी से कहता है कि क्या तुमने कभी ध्यान दिया कि तुम्हारे मार्ग में कितने सुंदर फूल उग आए हैं और पूरा पानी लाने वाली बाल्टी का रास्ता कंकड़ और माटी से भरा है। अगर किसान की तरह जीवन को देखा जाए तो उसमें ही विवेक छिपा है। बाल्टी के छेद की तरह, हर दोष गुण के समान हैं, जैसे हमें हर हानि में भी लाभ होता है।

वाबी साबी का निष्कर्ष यही है कि इंसान प्रकृति की रहस्यमयी धुन पर चलते हुए, जीवन को पूरी लोच के साथ जिएगा और कोई अपेक्षा नहीं रखेगा, तो बेहतरीन उसके जीवन में अवश्य आएगा।



समीक्षक : उमेश चतुर्वेदी

लेखक : प्रो. लल्लन प्रसाद

प्रकाशक : विश्व हिंदी साहित्य परिषद, दिल्ली।

पृष्ठ : 100

मूल्य : ₹. 200/-

## समुद्र मंथन एक बार फिर

» पर्यावरण की चिंता वैश्विक हो चुकी है। अतीत में जाड़ा सेहत बनाने का मौसम माना जाता रहा, लेकिन अब जाड़े के दिन आसमान में धुआँ और हानिकारक रसायनों से बनी धुंध का प्रतीक होता गया है। हवा ही क्यों, पानी, धरती आज सब-कुछ प्रदूषण के चक्कर में हैं। इसकी वजह से दुनिया इन दिनों बहुत चिंतित है। विश्व पर्यावरण सम्मेलनों में इस पर चर्चाएँ भी होती हैं। कार्बन

उत्सर्जन में कमी लाने की कोशिश भी होती है, लेकिन समस्या ज्यों की त्यों है। आँकड़े बताते हैं कि दो हजार साल में पर्यावरण को जितना नुकसान नहीं पहुँचा, इतने वर्षों में वातावरण उतना जहरीला नहीं हुआ, जितना पिछले दो सौ सालों में ही हो चुका है। पर्यावरण की ऐसी तमाम चिंताओं से ओत-प्रोत है पुस्तक 'समुद्र मंथन एक बार फिर'।

पुस्तक के लेखक प्रो. लल्लन प्रसाद जैसे तो अर्थशास्त्री हैं, लेकिन वातावरण के दूषित होने की समस्या ने उन्हें चिंता से इतना भर दिया कि उन्होंने यह पुस्तक ही तैयार कर दी है। 12 अध्यायों वाली इस पुस्तक में कुछ निबंध हैं तो कुछ चिंताएँ कविताओं के माध्यम से भी जाहिर की गई हैं। इस पुस्तक में लल्लन प्रसाद ने बताया है कि वातावरण के प्रदूषण की समस्या आज सिर्फ इलाका विशेष, देश या महाद्वीप ही नहीं, वैश्विक समस्या है। वैश्विक ही क्यों, यह समस्या अब तो ब्रह्मांड तक पहुँच चुकी है। अंतरिक्ष अनुसंधान की वजह से जिस तरह लगातार अंतरिक्ष में कचरा फैल रहा है, वह अंतरिक्ष को भी दूषित कर रहा है। प्रो. लल्लन प्रसाद ने इस पुस्तक में बताने की कोशिश की है कि इस वैश्विक समस्या के मूल में आधुनिक सभ्यता और उसका प्रमुख तत्व उपभोक्तावाद है। गांधी जी ने कहा था कि हमारी पृथ्वी सबका पालन कर सकती है, लेकिन वह लालच का मुकाबला नहीं कर सकती। अपने निबंधों में प्रो. प्रसाद भारतीय संस्कृति के पर्यावरण केंद्रित और सहधर्मी वैचारिकता का जगह-जगह उदाहरण देते हुए सुझाव देते हैं कि हम मौजूदा समस्याओं से किस तरह जूझ सकते हैं और उससे कैसे पार पा सकते हैं। अपनी इस पुस्तक में वे जताने की कोशिश करते हैं कि मौजूदा उपभोक्तावाद और विकास की नवअवधारणा पर्यावरण सुरक्षा की राह में सबसे बड़ी बाधा है। औद्योगीकरण ने प्रदूषण की संस्कृति को और ज्यादा बढ़ावा ही दिया है। अर्थशास्त्री एवं कवि प्रो. प्रसाद ने पर्यावरण पर पहली बार कलम चलाई है, लेकिन अपनी इस पुस्तक में वह न सिर्फ पर्यावरण संबंधी चिंताओं को जाहिर करते हैं, बल्कि यह चेताने से भी नहीं चूकते कि अगर हम नहीं सुधरे तो संस्कृति और सभ्यता पर खतरे बढ़ते जाएँगे। इस पुस्तक की शुरुआत गहराते जल संकट पर चिंतन से होती है और वायु, भूमि आदि के प्रदूषण पर चिंतन करते हुए आगे बढ़ती जाती है। पुस्तक के आखिर में पर्यावरण रक्षा के लिए हुए अंतरराष्ट्रीय समझौतों का जिक्र है।

इंटरगवर्नमेंटल पैनेल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) ने भी अपनी हाल में प्रकाशित एक रिपोर्ट में पर्यावरण प्रदूषण की वैश्विक समस्या की गंभीरता पर न सिर्फ चिंता जाहिर की है, बल्कि जलवायु में हो रहे क्रांतिकारी नकारात्मक बदलाव के प्रति सतर्कता बरतने का सुझाव भी दिया है। प्रो. प्रसाद भी अपनी इस पुस्तक में कहते हैं कि जिस तरह समुद्र मंथन के बाद विश्व को नई दृष्टि मिली थी, उसी तरह पर्यावरण के मुद्दे पर वैश्विक स्तर पर समुद्र मंथन होना चाहिए, ताकि दुनिया में वातावरण प्रदूषण के खिलाफ पूरे भूमंडल में चेतना जाग सके। औद्योगिक क्रांति की बुनियाद पर बनी आधुनिक उपभोक्तावादी सभ्यता को भी इसके प्रति चेतना होगा, तभी पर्यावरण बच सकेगा। तभी धरती प्रदूषणमुक्त हो पाएगी और तभी मानवता भी जिंदा रह पाएगी।



समीक्षक : डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह

लेखक : संतोष भदौरिया

प्रकाशक : साहित्य भंडार,

प्रयागराज।

पृष्ठ : 160

मूल्य : रु. 400/- (सजिल्द),

रु. 160/- (अजिल्द)

## हिंदी भाषा : परंपरा और प्रयोग

» हिंदी भाषा को जानने और समझने के लिए पुस्तकाकार अनेक यत्न हो चुके हैं। सवाल इस बात का है कि हिंदी भाषा के विकास क्रम की परंपरा को व्याख्यायित करने हेतु जो प्रयास हुए, वे पाठ्य सामग्री और पठनीयता की दृष्टि से कितने समृद्ध और सरल हैं। इस सवाल का उत्तर संतोष भदौरिया की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'हिंदी भाषा : परंपरा और प्रयोग' में मिलता है।

इस पुस्तक में कुल 11 अध्याय हैं। इस पुस्तक के सभी अध्यायों के शीर्षक बड़े मौजू हैं, जिससे अध्ययन की उत्सुकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, 'अपभ्रंश : विपथगामी होने का अर्थ', 'ब्रजभाषा : साहित्य के राह पर', 'अवधी : भाषा मैंने तुमसे सीखी' आदि। यह किताब हिंदी भाषा को अपभ्रंश से जोड़ती हुई देवनागरी तक आती है। किताब की भूमिका बुलंद दरवाजे की तरह है, जिससे किताब में बड़ी ही सहजता से प्रवेश किया जा सकता है। किताब की भूमिका से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ, 'खड़ी बोली हिंदी के भाषिक और साहित्यिक रूप को हम आदिकाल में ही लक्षित कर सकते हैं, जब हिंदवी या हिंदुई नाम से इसका प्रचलन हुआ। अमीर खुसरो ने स्पष्ट तौर पर अपने आप को हिंदवी का कवि घोषित किया और अपनी काव्य रचना के लिए इसी भाषा को आधार बनाया। खड़ी बोली हिंदी के प्रारंभिक रूप तो अपभ्रंश और परवर्ती अपभ्रंश में ही मिलने लगते हैं। इसका प्राचीनतम प्रयोग कहाँ से और किस रचना विशेष से शुरू हुआ इसका निश्चय और निर्विवाद रूप से उत्तर देना संभव नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अवहट्ट की रचनाओं—सदेशरासक, प्राकृत पैंगलम एवं वर्णरत्नाकर आदि में खड़ी बोली हिंदी के तत्वों के समावेश की सूचना मिलती है।'

पहली बात तो यह कि हिंदी भाषा का जितना तात्विक और क्रमबद्ध अध्ययन इस पुस्तक में है, वह बहुत प्रभावी और सम्यक है। यह पुस्तक बहुत ही प्रामाणिक ढंग से बताती है कि कैसे एक क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होने वाली बोली (कौरवी), राष्ट्रभाषा (हिंदी) के रूप में तब्दील हुई। इस पुस्तक में हिंदी की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ावों को सुचिंतित ढंग से रेखांकित किया गया है।

सामान्य पाठक प्रायः हिंदी के पूर्ववर्ती अपभ्रंश और अवहट्ट की भाषाई संरचना को दुरूह और जटिल समझकर छोड़ देते हैं या कामचलाऊ ढंग से पढ़ लेते हैं, लेकिन इस पुस्तक से गुजरने पर मालूम चलता है कि भाषाई स्तर पर अपभ्रंश और अवहट्ट का योग कितना बड़ा है और अपभ्रंश और अवहट्ट को पढ़ना या समझना कोई मुश्किल बात नहीं।

इस किताब में पुष्ट तर्कों से बताया गया है कि जिस अपभ्रंश को विपथगामी यानी पतित, भ्रष्ट भाषा कहा जाता रहा है, उसी अपभ्रंश को कैसे दंडी, भामह जैसे आचार्यों ने साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया। अपभ्रंश से हिंदी का रिश्ता कैसे जुड़ता है, इस सवाल का उत्तर इसी किताब में है, अपभ्रंश की यह मुख्य विशेषता रही है कि वह संश्लिष्ट से विश्लिष्टता की ओर उन्मुख हुई। इस प्रकार अपभ्रंश में शब्द रूपों में पर्याप्त सरलता आ गई। धातु रूप भी सरल हो गए। परसर्गों का प्रयोग आरंभ हुआ तथा देशज शब्दों तथा धातुओं को अपनाने से शब्दकोश का विस्तार हुआ। अवहट्ट के संदर्भ में इसी किताब से, शब्दकोश की दृष्टि से विदेशी शब्द ग्रहण करने की परिपाटी एवं लोकभाषाओं से सजीवक तत्व के रूप में शब्द ग्रहण अवहट्ट की ही परंपरा है। अवहट्ट भाषा एक ओर जहाँ अपभ्रंश की तुलना में विकास की नवीन क्षितिज तलाश करती है, वहीं हिंदी के विकास की परंपरा में बहुत बड़ा योगदान भी देती है।

आज जिस हिंदी को बनते और बढ़ते देखकर हिंदी भाषी जुड़ा जाते हैं और अहिंदी भाषी हिंदी को राष्ट्रीय एकता का भाषाई प्रतीक मानते हैं, उस हिंदी की जड़ें ब्रजभाषा और अवधी बोली में गहरे धँसी हुई हैं। भाषाई स्तर पर अंग्रेजों ने भारत में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने और स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को एक सूत्र में बाँधने की सबसे मजबूत कड़ी के रूप में हिंदी की महत्ता को पहचाना। हिंदी के लिए उस दौर में कई बड़े और महत्वपूर्ण कार्य हुए। 'औपनिवेशिक भारत और हिंदी का साहित्यिक रूप' तथा 'स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रभाषा हिंदी' नामक अध्याय में इस विषय पर बहुत ही सुचिंतित ढंग से बात रखी गई है। इस बात से सब भली-भाँति परिचित ही हैं कि स्वतंत्रता के बाद भाषाई मुद्दे पर संवैधानिक बहसों में हिंदी केंद्र में रही। हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। लोक व्यवहार में हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। लेकिन, इस पूरी प्रक्रिया को नज़दीक से जानने और समझने का अवसर इस किताब में मिलता है। हिंदी तक तो ठीक, लेकिन मानक हिंदी क्या बला है, इसे भी इस पुस्तक के एक अध्याय 'हिंदी : मानक होने की कसौटी' में विस्तार से बताया गया है। हिंदी शरीर है तो देवनागरी उसकी प्राण है। 'देवनागरी लिपि : कल और आज' नामक अध्याय से लिपि के स्तर पर देवनागरी के विविध पहलुओं से रू-बरू होने का मौका मिलता है। सारांशतः यही कहना है कि यह पुस्तक हिंदी भाषा में रुचि रखने वालों के लिए बेहद उपयोगी है।



समीक्षक : रोहित कौशिक

लेखक : सुदीप ठाकुर

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन,  
नई दिल्ली।

पृष्ठ : 230

मूल्य : रु. 299/-

## दस साल : जिनसे देश की सियासत बदल गई

» किसी भी देश की सियासत में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं, जिनका देश पर दूरगामी असर पड़ता है। ऐसी घटनाएँ उस कालखंड को तो प्रभावित करती ही हैं, भविष्य की राजनीतिक दिशा भी निर्धारित करती हैं। वरिष्ठ पत्रकार सुदीप ठाकुर की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'दस साल : जिनसे देश की सियासत बदल गई' सत्तर के दशक की कुछ

चुनिंदा घटनाओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। सत्तर के दशक में जैसे तो कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुईं, लेकिन इस पुस्तक में मुख्यतः गरीबी, प्रिवी पर्स की समाप्ति, कोयला, परिवार नियोजन और आपातकाल जैसे मुद्दों का गंभीरता से विश्लेषण किया गया है। हालाँकि इस पुस्तक में पाँच मुद्दों पर विस्तार से बात की गई है, लेकिन यह विमर्श उस कालखंड की राजनीति और कई राजनेताओं को गहराई से समझने का मौका भी देता है। दरअसल अंग्रेजी में इस तरह की किताबें खूब लिखी जाती हैं, लेकिन हिंदी में आमतौर पर ऐसी किताबें लिखने की परंपरा नहीं है। इसलिए हिंदी में ऐसी किताबों का अभाव है।

लेखक ने 'गरीबी हटाओ' नारे की गंभीरता से पड़ताल करते हुए उन कारणों का जिक्र किया है, जिनकी वजह से गरीबी से लड़ाई सरकारी नीतियों का हिस्सा बनी। भारत में गरीबी एक महत्वपूर्ण और बड़ा मुद्दा रही है। हमारा देश आजादी के समय देशवासियों को पर्याप्त अन्न उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं था। देशवासियों को सस्ता अन्न उपलब्ध कराने के लिए जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी ने अपने-अपने तरीके से प्रयास किए। हरित क्रांति के जनक नोर्मन बोरलॉग, कृषि वैज्ञानिक एम. स्वामीनाथन तथा एस. सुब्रह्मण्यम के प्रयास भी महत्वपूर्ण रहे। 1967 में नई दिल्ली में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में दस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम को मंजूरी दी गई। इसी कार्यक्रम के तहत बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने की घोषणा की गई। 1971 के चुनाव में विपक्ष के 'इंदिरा हटाओ' नारे के सामने इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' नारा दिया। इसी दौरान दो अर्थशास्त्रियों वी.एम. दांडेकर और एन. रथ ने पोषण को आधार मानते हुए कैलोरी की खपत के

आधार पर गरीबी का आकलन कर विमर्श को बदल दिया। तेल संकट के कारण बड़ी महँगाई और आपातकाल की ज्यादातियों के कारण 1977 के आम चुनाव में इंदिरा गांधी की पराजय हुई। कुछ समय बाद जब इंदिरा सत्ता में लौटीं तो पंजाब का खालिस्तान उग्रवाद एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आया, जिसकी वजह से उनकी हत्या तक हो गई।

लेखक ने प्रिवी पर्स की समाप्ति का सटीक विश्लेषण किया है। महाराजाओं और नवाबों को इस प्रक्रिया के लिए राजी करना आसान नहीं था। 1967 में इंदिरा गांधी ने अपनी 'गूँगी गुड़िया' की छवि से बाहर आकर कई क्रांतिकारी निर्णय लिए। प्रिवी पर्स को खत्म करने के लिए लाया गया विधेयक लोकसभा में तो पारित हो गया, लेकिन राज्यसभा में पारित नहीं हो पाया। समय से पहले कराए गए 1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने फिर जीत हासिल की। 28 दिसंबर, 1971 को 26वें संविधान संशोधन विधेयक पर राष्ट्रपति की मुहर लगते ही प्रिवी पर्स की सुविधा खत्म हो गई। लेखक ने अपने विमर्श के केंद्र में कोयले को भी रखा है। इस खंड के अंतर्गत 1774 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा दामोदर नदी के पश्चिमी तट पर स्थित रानीगंज (पश्चिम बर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल) में कोयला भंडार की खोज, रेल लाइन बिछने के साथ ही कोयले की बढ़ती माँग और कोयला-खदान में होने वाले हादसों पर विस्तार से बात की गई है। पहले चरण में 1971-72 में कोकिंग कोल खदानों का और फिर 1973 में नॉन-कोकिंग कोल खदानों का राष्ट्रीयकरण किया गया। लेखक ने कोयला-खदानों के साथ भ्रष्टाचार और माफिया की लूट और गैंगवार की अंतहीन कहानी का जिक्र भी किया है। इस खंड में कोयला-खनन के कारण पर्यावरण पर पड़ रहे प्रभाव, कोयला आवंटन, कैग की रिपोर्ट, इन मुद्दों के माध्यम से होने वाली राजनीतिक उथल-पुथल तथा कोयले के कारण होने वाले विस्थापन और पुनर्वास की खामियों पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखक ने परिवार नियोजन का विश्लेषण करते हुए इस मुद्दे पर बनी नीतियों की तार्किक पड़ताल की है। आपातकाल लागू होने से पहले तक परिवार नियोजन कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहा था, मगर संजय गांधी के परिदृश्य में आने के साथ ही सब-कुछ उलट-पुलट गया। संजय गांधी ने मान लिया कि परिवार नियोजन का एकमात्र तरीका नसबंदी है। देखते-ही-देखते उनका नसबंदी कार्यक्रम बर्बरता की मिसाल बन गया। एक तरफ नसबंदी के लिए जनता को प्रलोभन दिया गया तो दूसरी तरफ एक राजनीति के तहत मुसलमानों को जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।

लेखक ने आपातकाल के मुद्दे पर भी सार्थक चिंतन किया है। आपातकाल के मुद्दे पर आज भी कांग्रेस को कठघरे में खड़ा किया जाता है। 1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस भारी बहुमत से सत्ता

में आई। आपातकाल लगाने की तात्कालिक वजह बना था, 12 जून, 1975 को आया इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा का वह चर्चित फैसला, जिसमें उन्होंने 1971 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश के रायबरेली से इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध करार दिया था। हालाँकि 24 जून, 1975 को सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस वी.आर. कृष्ण अय्यर ने कुछ शर्तों के साथ इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले पर स्थगन दे दिया। 1973 में खाद्यान्न संकट के कारण जरूरी चीजों के दाम बढ़ने लगे। खाद्यान्न को सरकारी नियंत्रण में लेने के बावजूद अनाज की कालाबाजारी शुरू हो गई। इस कारण छात्र भी सड़क पर आ गए। इन आंदोलनों की कमान मोरारजी देसाई और जयप्रकाश नारायण के हाथों में

थी। उस दौरान ऐसी अनेक घटनाएँ घटित हुईं, जिनसे आपातकाल की पृष्ठभूमि तैयार हुई। इस खंड में जेपी और इंदिरा के रिश्तों, समाजवाद और सर्वोदय, जनता सरकार का आना और बिखर जाना तथा जेपी आंदोलन में आरएसएस की भूमिका पर भी व्यापक चिंतन किया गया है।

लेखक ने इन सभी विषयों को केवल सत्तर के दशक तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि बाद के दशकों में भी इन मुद्दों के प्रभावों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। कोई भी अध्ययन तब तक संपूर्ण नहीं होता जब तक कि उसे वर्तमान से न जोड़ा जाए। लेखक ने इस अध्ययन को वर्तमान से जोड़कर इसे और भी महत्वपूर्ण बना दिया है।



समीक्षक : कमलेश पाण्डेय 'पुष्प'

कवि : प्रवीण कुमार

प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन,  
साहिबाबाद, गाजियाबाद।

पृष्ठ : 176

मूल्य : रु. 300/-

## नियंता नहीं हो तुम

» कविताएँ देश और समाज की वास्तविक तस्वीर होती हैं जिन्हें कवि मन संवेदना की गहराई में डूबकर सृजित करता है। प्रवीण कुमार के काव्य संग्रह 'नियंता नहीं हो तुम' की सभी कविताएँ कवि की उर्वर संवेदना की उपज हैं। इनकी कविताओं में एक तरफ समाज में घटित घटनाओं का यथार्थपरक विश्लेषण किया गया है तो दूसरी तरफ प्रेम की गहन अनुभूति भी दृष्टिगत होती है। इस काव्य संग्रह में

कुल 92 कविताएँ हैं। संग्रह की प्रथम कविता है—'दृश्य और दृष्टा'। इसमें मनुष्य की मानसिकता को चित्रित किया गया है। एक ही दृश्य को कई व्यक्ति अपने-अपने नजरिए से देखते हैं क्योंकि सभी उसे अपनी जरूरत के हिसाब से देखते हैं। जैसे खेत में खड़ी फसल को एक किसान, वनस्पति शास्त्री और व्यापारी अपनी जरूरतों के अनुसार देखते हैं। कवि कह रहा है—एक ही दृश्य/एक समान नहीं रहता है/दो दृष्टाओं की दृष्टि में/अगर दृष्टा हैं सौ/तो एक ही दृश्य/जैव-विविधता की तरह/बदल जाएगा सौ दृश्यों में।

कवि मन की अंतर्व्यथा 'विहँस रहा क्यों सेमल वृक्ष' कविता में स्पष्ट दिखती है, जब पूरी आदमजात दहशतजदा माहौल में है एक अदृश्य सूक्ष्मजीवी के कहर से। कोरोना के विकट काल पर ही

एक और कविता है 'कोई नहीं दरकार'। इसमें कवि जहाँ एक ओर कोरोना काल में करोड़ों लोगों के रोजगार छिन जाने पर चिंतित है तो दूसरी ओर सोशल मीडिया पर तकनीक का सहारा लेकर चल रहे लाइव कार्यक्रमों में गीत-गजल राग मल्हार गाए जाने पर अपनी नाराजगी दर्शाता है। कवि ने रोजमर्रा की दिनचर्या में अपने आस-पास के परिवेश की सूक्ष्म पड़ताल करते हुए अपनी कविताओं का विषय बनाया है। इन कविताओं में कवि के मन में उपजी नई सुबह है तो वसंत राग भी है, हरियाली तीज है तो शतरंज की बिसात भी है। कवि ने अपनी कविताओं 'हाई राज सोसाइटी', 'नेम प्लेट', 'धूल', 'सफेद बगुला', 'छीजे हुए मेहमान', 'मोहिनी अवतार' आदि में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए बेबाक शब्दों में अपनी बात कह डाली है। इस संग्रह की कविताएँ पाठक से संवाद करती हुई समाज की स्थितियों से साक्षात्कार करती हैं। 'यात्रा और सहयात्री' कविता में सशक्त भाव यह है कि जीवन की यात्रा में सब-कुछ उसी प्रकार अनिश्चित है जिस प्रकार ट्रेन के सहयात्री। समाज में आज जनता को किस प्रकार से बरगलाया जा रहा है, इस पर कवि की तीखी नजर गई है, तभी तो 'बगावत' कविता का सृजन किया है, जिसमें उस व्यवस्था पर गहरी चोट की है जो समाज का शोषण कर रही है—मेरी बगावत नहीं है/सिर्फ राजसत्ता के खिलाफ/मैं उखाड़कर फेंक देना चाहता हूँ/किसी ऐसी व्यवस्था को/जो धर्म, अर्थ, शिक्षा/या चिकित्सा के नाम पर/चूस लेती है आदमी का खून। कवि का कहना है कि आज का समाज देखा जाए तो समूचा ही एक बाजार में बदल चुका है।

काव्य संग्रह की कविताएँ भावपूर्ण, सरल एवं पठनीय शैली में रचित हैं। क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग कमतर ही है। प्रत्येक विषय में आबद्ध रचना पाठकों को कुछ-न-कुछ सामाजिक संदेश तो देती ही है, मन में सकारात्मक भाव भी समाहित करती है।



## खेल खेलना बहुत जरूरी डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रस्तुत पुस्तक में 47 बाल कविताएँ हैं। ये कविताएँ सरल और सहज भाषा के माध्यम से बालमन को संदेश देती हैं, उनका मनोरंजन और ज्ञानवर्धन करती हैं। लय और गेयता को पूरी तरह सँजोया गया है। ये कविताएँ हैं—हम भारत की शान, मास्क लगाना बहुत जरूरी, ऑक्समीटर, एंबुलेंस, मतवाली तितली,

विजली रानी, जंग फूड इत्यादि।

हिंदी साहित्य निकेतन, विजनौर।

पृ. 72; ₹. 200.00



## धरोहर सुकीर्ति भटनागर

यह उपन्यास बालकों और किशोरों के लिए है, जिसमें निराश्रितों की सेवा, दयाभाव, मैत्री तथा सच्ची देशभक्ति के लिए प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं। उपन्यास को मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणास्पद कृति बनाने के लिए घमरू और पटरू नामक पात्रों के साथ चुहलबाजी के हल्के-फुल्के प्रसंग रखे गए हैं, वहीं दूसरी ओर वृक्षारोपण के महत्व, पर्यावरण के संरक्षण, पुरातत्व विभाग के नियम आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

साहित्यागार, जयपुर।

पृ. 112; ₹. 250.00

## मेरी प्रिय बाल कविताएँ

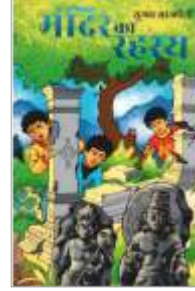
डॉ. राकेश 'चक्र'

यह पुस्तक बाल कविताओं का संग्रह है। ये कविताएँ मनुष्य जीवन और प्रकृति से संबंधित हैं। ये बालमन को आकर्षित करती हैं। मौसम, पशु-पक्षी, पौधे और मनोरंजन से रू-ब-रू कराती ये कविताएँ बच्चों को नैसर्गिक वातावरण में ले जाती हैं और प्राकृतिक छटा के दर्शन कराती हैं।



लवकुश सिंह, मऊ, उत्तर प्रदेश।

पृ. 152; ₹. 495.00



## मंदिर का रहस्य सुमन बाजपेयी

इस रोचक बाल उपन्यास का कथानक दो बच्चों के देहरादून भ्रमण के आस-पास घूमता है। दोनों बच्चे अपने अंकल, जो वन अधिकारी हैं, के पास छुट्टी मनाने जाते हैं। वहाँ खंडहर हो गए मंदिर की रहस्यमयी दुनिया को जानने की कोशिश करते हैं। साथ ही, गाँव में रहने वाले एक बच्चे के साथ मिलकर जंगल के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

साहित्य विमर्श प्रकाशन, गुरुग्राम, हरियाणा।

पृ. 108; ₹. 149.00



## मुहावरों का लोकतंत्र

डॉ. आभा संजीव सिंह

इस पुस्तक में 22 व्यंग्यों का संग्रह है। इस संकलन में विविध विसंगतियों पर कटाक्ष किया गया है। इसमें जहाँ राजनीतिक विसंगतियों पर तीक्ष्ण प्रहार किया गया है, वहीं मानवीय विद्रुपात्मक प्रवृत्तियों पर भी व्यंग्य आलेखों के माध्यम से प्रहार किया गया है। यह संग्रह कोरोना महामारी के दौरान उपस्थित हुए

नजरिए की प्रतिक्रिया है।

रश्मि प्रकाशन, लखनऊ।

पृ. 102; ₹. 250.00

## 51 श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ

लालित्य ललित

प्रस्तुत पुस्तक में जीवन के हर पक्ष को समाहित करने वाले 51 व्यंग्य हैं जो कि एक खास चरित्र 'पाण्डेय जी' को संबोधित करके सृजित किए गए हैं। इनमें इस चरित्र जीवन से जुड़ी विभिन्न दिनचर्या पर कटाक्ष करते हुए व्यंग्य चुटीले अंदाज में सृजित किए गए हैं।



डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली।

पृ. 318; ₹. 350.00



## राज कमल : चुनी हुई कहानियाँ

संपादक : बलराम

इस पुस्तक में राज कमल के तीन संग्रहों से चुनी गई 10 श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। सभी कहानियों का चित्रण बहुत सरल और सहज भाषा में किया गया है। ये पाठक को अंत तक बाँधे रखने में सक्षम हैं।

अमन प्रकाशन, कानपुर।

पृ. 136; रु. 125.00

## पढ़े जाते हुए शब्द

दिलजीत दिव्यांशु की चयनित कविताएँ

संपादन : बलवेन्द्र सिंह

यह पुस्तक 51 कविताओं का संकलन है। ये कविताएँ पंजाब की आधुनिक हिंदी कविता के उत्तरोत्तर विकास और संभावनाओं को साकार करती हैं। ये कविताएँ हैं—मुशिकलों के साँचे में ढलता कवि, प्रार्थना, शब्दों से कविता तक, बटवृक्ष से नन्ही चिड़िया, विशोभ, पिंजरे, दधीचि, मुखौटे इत्यादि।

बिम्ब-प्रतिबिम्ब प्रकाशन, फगवाड़ा, पंजाब।

पृ. 158; रु. 350.00



## नियंता नहीं हो तुम

प्रवीण कुमार

92 कविताओं की पुस्तक केवल संग्रह ही नहीं, अपितु जीवन का एक ऐसा सच है जिसे किसी भी रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। सच को समेटे हुए यह पुस्तक पाठक को हर तरह से अपनी ओर आकर्षित करती है।



अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद।

पृ. 176; रु. 300.00



## सबके अपने बापू

शोभा माथुर ब्रिजेंद्र

लगभग 40 अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक में महात्मा गांधी के बचपन से लेकर उनके देहावसान तक को समेटा गया है। विश्व की महान विभूति को संपूर्ण रूप से जानने-समझने में सहायक है यह पुस्तक।

ज्ञान विज्ञान एजुकेशन, नई दिल्ली।

पृ. 136; रु. 175.00



## शिक्षा ही समाधान

डॉ. संजय कुमार

प्रस्तुत पुस्तक शिक्षा नीति-2020 को ध्यान में रखकर लिखी गई महत्वपूर्ण कृति है जो नीति के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक मनःस्थिति के निर्माण में सहयोग करती है। यह उनके लिए भी उपयोगी है जो शिक्षा और शिक्षण के व्यापक प्रयोजन को समझना चाहते हैं, उन छात्रों के लिए भी जो अपने जीवन में उत्तरोत्तर

विकास का ध्येय रखते हैं।

परिकल्पना, दिल्ली।

पृ. 152; रु. 350.00

## सुनो घग्घर

मदन गोपाल लढ़ा

तीन खंडों और दस उपखंडों में विभाजित यह काव्य संग्रह कालीबंगा और घग्घर जैसे ऐतिहासिक तथा प्रेम, घर, आंगन इत्यादि से रू-रू कराती है।



बोधि प्रकाशन, जयपुर।

पृ. 92; रु. 150.00



## इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज में त्रिदिवसीय अनुवाद कार्यशाला में 19 पुस्तकें अनूदित

“अनुवाद हमें विश्व नागरिकता की संभावना तलाशने का अवसर देता है। यह वह कला है जो कई भाषाओं और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है। शब्द और उससे जुड़ी हुई संस्कृति जब एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचते हैं तब बहुत सारे ऐतिहासिक और समकालीन दस्तावेज हमारे सामने होते हैं।” उक्त उद्गार प्रख्यात आलोचक प्रो. राजेंद्र कुमार ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान व राजभाषा अनुभाग द्वारा 29 से 31 जनवरी, 2023 तक आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि बच्चों के संसार में जाए बिना हम अपना संसार नहीं बना सकते। अनुवाद संवाद होता है। हम अनुवाद में शब्द ही नहीं टटोल रहे, बल्कि हम उसे मूल संस्कृति से अपनी संस्कृति में स्थान देने की कोशिश कर रहे हैं। अनुवादक होना भाषा, साहित्य और संस्कृति की सेवा है।



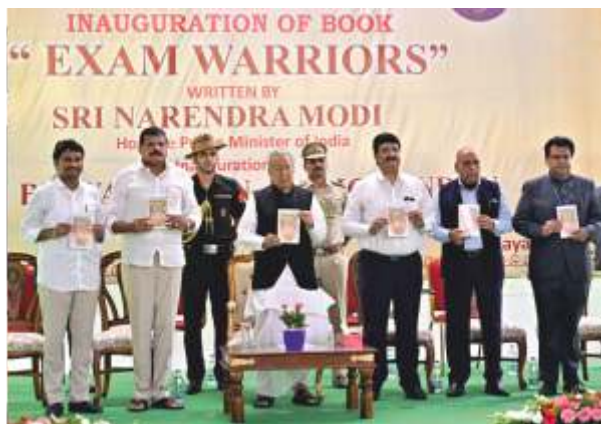
इस अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार एवं राजभाषा अनुभाग के अध्यक्ष प्रो. एन.के. शुक्ला ने कहा कि मूल और अनुवाद शब्दों की संस्कृति को ऐतिहासिक रूप से साथ लाने का प्रयास है। कार्यशाला के संयोजक और गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. संतोष भदौरिया ने कहा कि बच्चों की दुनिया अलग है। उनका मनोविज्ञान साहित्य से अलग है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास बाल साहित्य को

अनेक भारतीय भाषाओं के माध्यम से देश के कोने-कोने में पहुँचाता है। न्यास के साथ मिलकर काम करना अलग अनुभव है। अनुवाद में भाषा, वाक्य विन्यास के साथ-साथ भाषा-संस्कृति को लाना चुनौतीपूर्ण कार्य है। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में शामिल वरिष्ठ अनुवादक क्रांति शुक्ला ने कहा कि दुनिया की विभिन्न भाषाओं में लिखी गई दुर्लभ बातें बिना अनुवाद के हम तक पहुँच नहीं सकतीं। बाल साहित्य को लेकर बच्चों में आकर्षण बढ़ा है। बालसाहित्य के अनुवाद का कार्य बहुत महत्वपूर्ण होता है, जिसके लिए सरल, सुबोध और बच्चों के लिए ग्रहणीय भाषा का होना आवश्यक है। इस अवसर पर हिंदी भाषा के संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने पुस्तक प्रकाशन और प्रोन्नयन में न्यास की भूमिका पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. धनंजय चोपड़ा ने किया तथा आभार ज्ञापन राजभाषा अनुवादक हरिओम कुमार ने किया।

कार्यशाला में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 15 अध्यापक व शोधार्थियों ने भाग लिया। कार्यशाला के दौरान 12 अंग्रेजी से हिंदी और सात बांग्ला से हिंदी भाषा में पुस्तकें अनूदित की गईं। सभी प्रतिभागियों ने इस दौरान शब्दों को लेकर आपस में विचार-विमर्श किया ताकि बच्चों के लिए सरल एवं सुबोध शब्दों का चयन किया जा सके और बेहतर अनुवाद बच्चों तक पहुँच सके। यहाँ कुल 19 पुस्तकों का अनुवाद, संपादन और डम्पी बनाने का कार्य संपन्न हुआ।

## एग्जाम वॉरियर्स पुस्तक 13 भाषाओं में विमोचित

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने तालकटोरा स्टेडियम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखित पुस्तक ‘एग्जाम वॉरियर्स’ के नवीनतम



प्रकाशित भाषा संस्करणों सहित पुस्तकों की एक विस्तृत शृंखला प्रदर्शित की। यह पुस्तक अब 13 भाषाओं में उपलब्ध है। हिंदी, अंग्रेजी के



अलावा यह पुस्तक तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असमिया, गुजराती, मराठी, पंजाबी, उर्दू और बांग्ला में भी उपलब्ध है। यह पुस्तक न्यास के सभी विक्रय केंद्रों पर उपलब्ध है। एग्जाम वॉरियर्स पुस्तक का पहला संस्करण 03 फरवरी, 2018 को जारी किया गया था।

## देसिया और सौरा भाषा में अनुवाद कार्यशाला संपन्न

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत नई दिल्ली और आदिवासी गवेषणा मंच, कोरापुट के संयुक्त तत्वावधान में कोरापुट में दो आदिवासी भाषाओं—‘देसिया’ और ‘सोहरा’ में 03 से 05 जनवरी, 2023 तक त्रिदिवसीय कार्यशाला में कुल 12 द्विभाषीय पुस्तकों का अनुवाद कार्य संपन्न हुआ।

यहाँ उड़िया-देसिया और अंग्रेजी-देसिया, उड़िया-सौरा और अंग्रेजी-सौरा में तीन-तीन अर्थात् कुल 12 पुस्तकों का अनुवाद, संपादन और डम्मी बनाने का कार्य संपन्न हुआ।

न्यास-निदेशक युवराज मलिक ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए सभी अनुवादकों को इस पावन कार्य के लिए बधाई देते हुए विश्व पुस्तक मेले के लिए आमंत्रित किया।



विदित हो कि इस कार्यशाला का उद्घाटन जनजातीय शोध संस्थान के निदेशक डॉ. पी.सी. महापात्र, डिप्टी कलेक्टर आलोक कुमार अंगुलिया, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्रीकांत जानी सहित कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान जगन्नाथ की आराधना और रंजन महरिया के देसिया में आराधना गीत से हुआ।

इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर श्री आलोक अंगुलिया ने कहा कि भाषा के साथ उनका ज्ञान, कहानी आदि लुप्त हो रही हैं। उन्होंने बताया कि बचपन में उन्होंने अपनी दादीजी से बाहुबली की कहानी सुनी थी जिस पर अब फिल्म बनी। आदिवासी संस्कृति में समानता, जेंडर दहेज मुक्त आदि शाश्वत है।

शिक्षा अधिकारी ने भाषा से संस्कृति के संबंध पर विमर्श करते हुए नई शिक्षा नीति में मूल भाषा में प्राथमिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री जगबंधु समल ने कहा कि चूँकि आदिवासी भाषा की स्वतंत्र लिपि नहीं है, सो उसकी चुनौतियाँ अधिक हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पी.सी. महापात्र ने आदिवासी भाषाओं में अनुवाद के अतीत पर प्रकाश डालते हुए इस क्षेत्र की भाषाओं में अनुवाद की सावधानियों पर विस्तार से बात की।

प्रारंभ में न्यास के हिंदी भाषा के संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने न्यास की गतिविधियों और भाषा अनुवाद की आवश्यकता पर उद्बोधन दिया। ककसाड़ की संपादक सुश्री कुसुमलता सिंह ने अनुवाद की आवश्यकता पर जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजेन्द्र पाधि ने किया।



## ब्रिटिश काउंसिल प्रतिनिधिमंडल ने किया न्यास का दौरा



अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन फेलो के एक ब्रिटिश काउंसिल प्रतिनिधिमंडल ने 24 जनवरी, 2023 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के मुख्यालय का दौरा किया। न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने प्रतिनिधिमंडल का औपचारिक स्वागत किया। इस संयुक्त बैठक में प्रतिनिधिमंडल में शामिल सुश्री रेबेका हार्ट, सीनियर रिलेशनशिप मैनेजर, लिटरेचर; ब्रिटिश काउंसिल और श्री रोहन सेन, प्रोजेक्ट मैनेजर, भारत/अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन फेलोशिप कार्यक्रम और काउंसिल की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर श्री युवराज मलिक ने न्यास की विभिन्न प्रकाशन और पुस्तक प्रोन्नयन गतिविधियों की जानकारी दी।

इस दौरान 12 अध्येताओं, न्यास के संपादकों और अधिकारियों ने अनुवाद, बाल साहित्य, कॉपीराइट, प्रकाशन डेटा, अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों में भागीदारी, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला आदि जैसे मुद्दों पर चर्चा की। बैठक का संचालन श्री कुमार विक्रम, वरिष्ठ संपादक एवं परियोजना प्रमुख ने किया।

प्रतिनिधिमंडल ने परिसर में स्थित पुस्तक विक्रय केंद्र और राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र का भी दौरा किया।

### कृष्णा

### पुस्तक परिक्रमा

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने पुस्तक प्रोन्नयन एवं पठन-पाठन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कृष्णा पुस्तक परिक्रमा शुरू की है। यह परिक्रमा कृष्णा नदी के साथ-साथ लगभग 2000 कि.मी. से अधिक की दूरी तय करते हुए 17 शहरों का दौरा करेगी।



कृष्णा पुस्तक परिक्रमा में भाग लेते समृद्धि हाईस्कूल बागलकोट, कर्नाटक के बच्चे



### अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला

अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेले में  
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का स्टॉल



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की द्विमासिक पत्रिका

## पुस्तक संस्कृति

के सदस्य बनें

### सदस्यता प्रपत्र

नाम : \_\_\_\_\_  
पता : \_\_\_\_\_  
जिला : \_\_\_\_\_ शहर \_\_\_\_\_ राज्य \_\_\_\_\_ पिन कोड \_\_\_\_\_  
फोन : \_\_\_\_\_ ई-मेल : \_\_\_\_\_

में राशि रु. (अंतर्देशीय : 225/- रु.; अंतर्राष्ट्रीय : 1000/- रु.) \_\_\_\_\_  
वार्षिक सदस्यता हेतु (बैंक ड्राफ्ट/नगद) \_\_\_\_\_ ड्राफ्ट संख्या \_\_\_\_\_  
बैंक एवं शाखा द्वारा जारी \_\_\_\_\_  
भेज रहा/रही हूँ (संलग्न)।

सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पक्ष में देय), सदस्यता प्रपत्र के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :

#### संपादक

पुस्तक संस्कृति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 5 नेहरू भवन, वसंत कुंज, सांस्थानिक क्षेत्र, फेज-2,  
नई दिल्ली-110070

ई-मेल : editorpustaksanskriti@gmail.com

दूरभाष : 011-26707758/26707876

ऑनलाइन शुल्क भेजने का विवरण इस प्रकार है :

For	National Book Trust, India
Bank	Canara Bank
Branch	Vasant Kunj, New Delhi-110070
A/c No.	3159101000021
IFSC Code	CNRB0003159
MICR Code	110015187

शुल्क भेजने के पश्चात् कृपया फोन अथवा पत्र द्वारा सूचना अवश्य दें।

# मनोरंजन, ज्ञान और जिज्ञासा की अनूठी दुनिया!

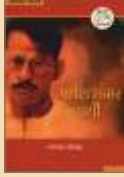
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ नए प्रकाशन

## गणेश शंकर विद्यार्थी

धनंजय चोपड़ा

यह पुस्तक एक निडर और निष्पक्ष पत्रकार, समाज सेवी, स्वतंत्रता सेनानी और कुशल राजनीतिज्ञ के स्वातंत्र्य और लेखकीय जीवन पर आधारित है। पुस्तक दो खंडों में है। प्रथम खंड में उनके जीवन संघर्ष, पत्रकारिता, स्वातंत्र्य संघर्ष और आत्मोत्सर्ग का वर्णन है और दूसरे खंड में उनकी 16 चयनित रचनाएँ हैं। चयनित रचनाओं में कहानी, रेखाचित्र-श्रद्धांजलि, आलेख, संपादकीय, पत्र और संस्मरण हैं।

पृ. 174; ₹. 240.00



## सूरज नाराज है

इदरीस सिद्दीकी

चित्र : सानिका देशपांडे

यह पुस्तक आठ से 10 वर्ष के बच्चों के लिए है। पुस्तक सौरमंडल में उपस्थित सभी ग्रहों के वार्तालाप के माध्यम से बताती है कि वायुमंडल में तापमान निरंतर क्यों बढ़ रहा है। इसके लिए कौन-सी गैसों जिम्मेदार हैं और इन गैसों का उत्सर्जन कहाँ से होता है। चित्र कहानी को विस्तार देने में सार्थक हैं।

पृ. 24; ₹. 65.00



## पत्रकारिता :

सर्जनात्मक लेखन  
और रचना-प्रक्रिया

अरुण कुमार भगत

यह पुस्तक पत्रकारिता के अध्येताओं, पत्रकारों और विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इस पुस्तक में पत्रकारीय सर्जनात्मक लेखन के बारे में विस्तार से बताते हुए उसके प्रकार, क्षेत्र, उद्देश्य तथा महत्व पर भी विस्तृत और सर्वग्राह्य जानकारी उपलब्ध कराई गई है। इसमें पत्रकारिता की विविध विधाओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

पृ. 272; ₹. 355.00



## सीढ़ी के डंडे

तकषी शिव शंकर पिल्लै

अनुवाद : सुधांशु चतुर्वेदी

प्रस्तुत पुस्तक सन् 1977 में प्रकाशित उपन्यास का प्रथम संशोधित संस्करण है। उपन्यास का कथानक लेखक का होने पर भी उससे संबंधित दो स्त्रियों की कहानी है। एक उसकी पत्नी है जो किसी भी परिस्थिति में अपने आपको ढाल लेती है और दूसरी उसकी प्रेमिका है। एक क्षमा-मूर्ति है और दूसरी अनंत मोह से ग्रस्त है। लेखक की उदासीनता उसे भ्रष्ट मार्गी बना देती है।

पृ. 538; ₹. 605.00



## नेताजी सुभाष

अनंत चरण साहू

अनुवाद : अरुण होता

भारत की आजादी के लिए अपना पूरा जीवन उत्सर्ग करने वाले अनन्य मुक्ति संग्रामी सुभाष चंद्र बोस पर प्रकाशित यह पुस्तक उनके विभिन्न पक्षों पर प्रभाव डालती है। प्रशासनिक सेवा में उत्तीर्ण होने के बाद भी उस पद को स्वीकार न कर पाना, उनका भारत के प्रति अटूट समर्पण दिखाता है। यह पुस्तक जिज्ञासुओं, छात्र-छात्राओं तथा शिक्षक समाज के ज्ञानवर्धन में सहायक है।

पृ. 142; ₹. 225.00



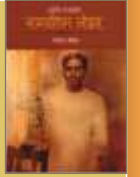
## शहीद पत्रकार

रामदहिन ओझा

प्रभात ओझा

प्रस्तुत पुस्तक में यशस्वी पत्रकार रामदहिन ओझा के बचपन, स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान, कांग्रेस की कार्यकारी समिति का नेतृत्व, लेखक व संपादक के रूप में उनकी महती भूमिका और जेल-वृत्तांत पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, इसमें प्रसिद्ध लेखकों के लेख भी हैं, जो रामदहिन ओझा के अनकहे पक्षों को उजागर करते हैं।

पृ. 138; ₹. 200.00



## राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707761 • ई-मेल : nro.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

## हँसते हुए पक्षी

विकी आर्य

अनुवाद : मोहन शर्मा

यह दिलचस्प पुस्तक

बच्चों को पढ़ना और रंग भरना सिखाने के लिए है। इसके माध्यम से बच्चों को मस्ती भरी दुनिया में ले जाकर पक्षियों की हँसी से परिचित करवाया गया है। चित्र बनाने और रंग भरने के लिए दिए गए अभ्यास बच्चों को पुस्तक से जोड़े रखने के लिए हैं।

पृ. 32; ₹. 75.00

